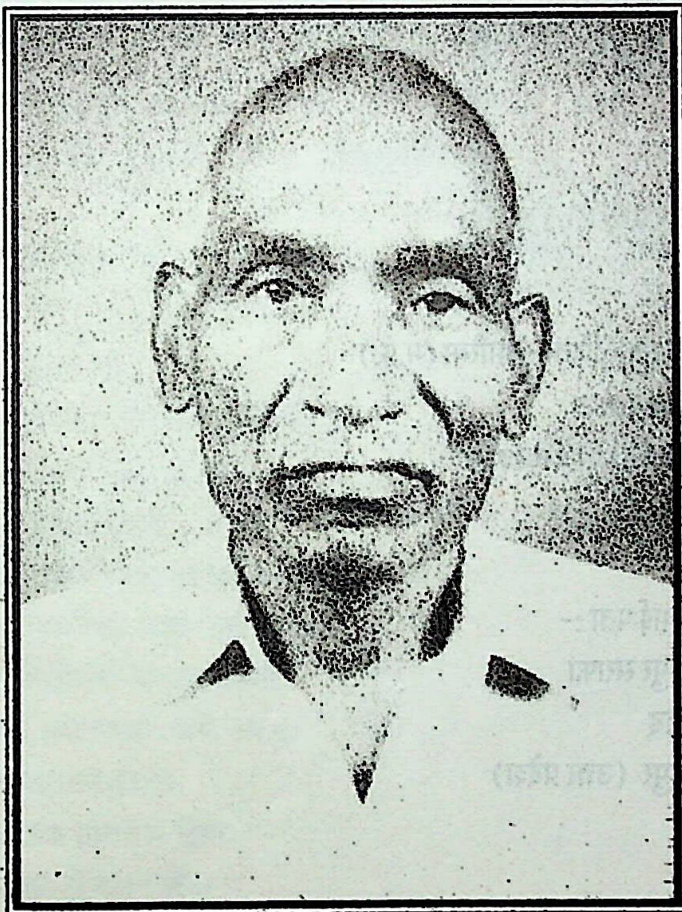
# समयलाल

10.2



लेखक :- सी.एल. सिंह

# समयलाल



**लेखक :- सी.एल. सिंह**

अवकाश प्राप्त प्राचार्य

एम० ए०, बी० एड०

**स्थान - इन्द्रकुंज मानपुर**

संस्करण :- प्रथम वार - 2005

प्रकाशन तिथि :- 15-8-05



प्रकाशक :- श्रीमती सुशीला देवी

सहयोग राशि :- पचास रुपये



वर्तमान पता :-

ग्राम पोस्ट- मानपुर, जिला- उमरिया (म.प्र.)

पिन कोड- 484665

फोन नं. - (07627) 266215

लेखक का स्थाई पता :-

ग्राम- हरदासपुर सराफा

पोस्ट - खखरेड़

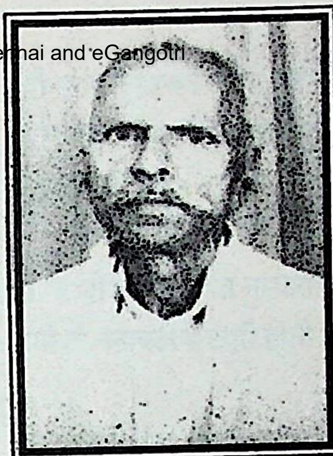
जिला- फतेहपुर (उत्तर प्रदेश)

-: मुद्रक :

श्री शिव प्रेस मानपुर

जिला- उमरिया (म.प्र.) Ph. (07627) 266207

# समर्पण



जन्मतिथि :- 01-07-1935
अवसानतिथि :-18-03-2003

परम श्रद्धेय अग्रज देशराज सिंह जी,
जो जीवन भर अन्याय ,विषम परिस्थितियों से जूझते रहे,
संघर्षशील रहे,
निरालस्यता, कर्मठता की मूर्त्ति रहे
'अतिथिदेवो भव', 'सत्यमेव जयते '
सिद्धान्तों का पालन किया
सामाजिक कुरीतियों के परित्याग में अग्रणी रहे ,
परिजनों को आकाश तक उठाकर
सबल किया ,प्रतिष्ठित किया
उनके कार्यक्षेत्र और सम्मान को विस्तार दिया
लीक से हटकर चलने का सबूत दिया
तीखी आलोचनाओं को अनसुना किया
आदर्श शिक्षक, प्रधानाध्यापक के रूप में
शिक्षा विभाग का मान बढ़ाया
अड़तीस वर्षों तक ज्ञान दान दिया
कर्त्तव्य पालन को ही महत्व दिया
१८-३-२००३ को जागतिक सम्बन्ध तोड़कर
ब्रह्मलोक प्राप्त किया
उन्हीं की स्मृति को
यह कृति समर्पित किया।



छेदीलाल सिंह

## इसी उपन्यास से

स्वर्ग -नरक कहीं नहीं है ,सुख ही स्वर्ग है ; दुःख ही नरक है। स्वर्ग-नरक मन की कल्पनायें हैं। इनका आविष्कार इसलिये किया गया है कि मनुष्य जीवन में सदाचार को अपनाये और अनैतिक कार्यो से बचे स्वर्ग-नरक का कोई भूखण्ड नहीं है।

X X X X

मानसिक सुख शान्ति किसी को नही है उनके चेहरों पर जो प्रसन्नता या मुस्कराहट यदा-कदा दिख जाती है वह बहुत क्षणिक होती है। कभी-कभी तो बनावटी व ऊपरी होती है, अन्दर तो वेदना का सागर लहरा रहा होता है ..

X X X X

लगता है अव वह समय दूर नहीं है जब शास्त्रों में लिखी हुई बातों को लोग इसलिये नहीं मानेंगे कि वे शास्त्रों में लिखी हैं ,वे उन बातों को तभी मानेंगे ;जब वे कसौटी में खरी उतरेंगी। मुझे भय है कि शास्त्रों में लिखी बातें कसौटी में खरी उतरेंगी। अब तो शास्त्र भी झूठे साबित होंगे।

X X X X

स्मृति और पुराण सीमित बुद्धि वाले व्यक्तियों की रचनायें हैं ,

यदि कोई भंगी भी उत्तम गुणों से युक्त है तो वह ब्राह्मण है। यह उल्लेख वज्रसूची उपनिषद् में है,......जन्म के आधार पर छोटे- बड़े ,ऊंच -नीच की बात छोड़ों सभी इंसान हैं , किसी पेशें के कारण किसी को छोटा -बड़ा नही माना जा सकता।

X X X X

हमारी सारी व्यवस्था मानवीय है ,मानव निर्मित है ; सारे धार्मिक ग्रन्थ भी मानव निर्मित है इसीलिये इनमें समयानुसार परिवर्तन, संशोधन एवं सुधार करना आवश्यक है, इसमें मानव समाज का हित एवं कल्याण है।

X X X X

समाज ही ईश्वर का प्रकट रुप है ,



## (एक)



समयलाल का जन्म तेजपुर ग्राम में एक ऐसे घर में हुआ था जो क्षेत्र में अपनी सज्जनता सरलता व सम्पन्नता के लिये ख्याति प्राप्त था, जन्म उनका उस समय हुआ था जब देश में बृटिश शासन था,जमीदारी प्रथा थी,उस समय देश में स्वाधीनता के लिये महात्मा गान्धी के नेतृत्व में संघर्ष चल रहा था,देश में अशिक्षा, अज्ञानता ,बीमारी,अन्धविश्वास,निर्धनता का साम्राज्य था,ऊंच- नीच, छुआ-छूत की भावना से सारा समाज आक्रान्त था, आठ कनौजिये नौ चूल्हे वाली कहावत विल्कुल सही थी, पूरा हिन्दू समाज मधुमक्खी के छत्ते की तरह छोटे छोटे कटघरों व वर्गों में विभाजित था।

गांवों तक पहुंचने के कच्चे ढर्रे थे , क्षेत्र में पक्की सड़के नहीं थी , बरसात में कच्चे ढर्रे, कच्ची सड़कें व गांव की गलियां की चड़ से भर जाती थी, आवागमन के साधन के रुप में बड़े लोगों के पास घोड़े ,ऊंट व टट्टू थे; जन साधारण पैदल ही आते-जाते थे ,जो बड़े जमीन्दार थे, उनके पास बड़ी रास के घोड़ो के अतिरिक्त हांथी भी थे।

शिक्षा - सदनों की संख्या नगण्य थी,गांवों में गुरुआना थे। लेकिन वे किसी - किसी गांव में थे , इन्हीं गुरुआनों से ग्रामीण अपने -अपने बच्चों को लिखने -पढ़ने ,की प्रारम्भिक जानकारी दे देते थे- गांव के सभी लोग गुरु आना, की फीस भी नहीं दे पाते थे। फीस प्रति माह एक रुपया से डेढ़ रुपया तक लगती थी, लेकिन यह भी बहुत कठिन थी।

गांव में घी दूध पर्याप्त होता था। लोगों का स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा था, वर्षा प्रारम्भ होते ही गांवों में अखाड़ा खुदने प्रारम्भ हो जाते थे, दो-दो,तीन-तीन गांवों के बीच एक अखाड़ा होता था इस अखाड़े में आस-पास के गांवों के लड़के व कुछ सयानें पहलवान प्रातः सूर्योदय के पूर्व आ जाते थे , अखाड़े, की गुड़ाई होती ;फिर लपटंत होती थी, एक आना सेर दूध व एक रुपया सेर घी बिकता था, डालडा अथवा घासलेट कोई जानता भी नहीं था, गांवों में अपराध कहीं सुनाई नहीं पड़ते थे , गांव के सभी लोग पूर्णतः कृषि पर आधारित थे जिनके पास भूमि थी,वे तो खेती करते थे, शेष लोग अपना- गुजर बसर मेहनत मजदूरी से करते थे सामान्यतः सभी लोग कृषि एवं कृषक पर ही निर्भर थे, कृषि को अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।व्यक्ति की हैसियत व उसका सम्मान कृषि योग्य भूमि की मात्रा पर निर्भर करती थी,

यदि बड़ा किसान होता तो समाज में उसकी हैसियत बड़ी मानी जाती । ,उसका सम्मान अधिक होता , लोग बातचीत में बहुधा कहा करते थे-

उत्तम खेती मध्यम बान,
अधम चाकरी,भीख निदान,

इसीलिये जब समयलाल के बड़े पिता जी इलाहाबाद से सन् १९२८ में हाई स्कूल पास करके गांव आये थे, तो उन्हें नायब तहसीलदार के पद पर कार्य करने के लिये कहा गया था; उन्हें नायब तहसीलदार बनाया जा रहा था; लेकिन समयलाल के बाबा ने उन्हें जाने से रोक दिया था, उनका कथन था; कि हम अपने बच्चों को नौकरी में जाना पसन्द नही करते, उनके इस कथन के पीछे सम्भवतः दो बातें थीं प्रथम कृषि उनकी दृष्टि में उत्तम थी ; दूसरा वह बृटिश शासन के अधीन नौकरी नही करवाना चाहते थे ।उनकी दृष्टि में विदेशी सरकार के अधीन नौकरी करना पाप था क्योकि बृटिश सरकार को वह फिरंगी सरकार मानते थे ; लुटेरी व अनीतिपूर्ण सरकार समझते थे ,ऐसी सरकार की सेवा में रहना भी उनकी दृष्टि में पाप था।

समयलाल का लालन-पालन एक स्वाभिमानी; सम्पन्न; बृहद् कृषक परिवार में हुआ था, परिवार में सदस्यों की संख्या भी बढ़कर पचपन साठ हो गयी थी , ऊपर से तो परिवार में बहुत शान्ति सौहार्द व समरसता दिखाई पड़ती थी, लेकिन अन्दर ही अन्दर परिजनों में विशेषकर नवयुवको में असन्तोष था, उनके असन्तोष का मुख्य कारण उनकी व उनकी नवयुवती पत्नियों की आवश्यकताओं की पूर्ति का न होना था, औरतों को अच्छी साड़ियां चाहिये थीं ,अच्छे कपड़े चाहिये थे , सुगन्धित तेल व साबुनें चाहिये थी ; नवयुवकों को अच्छे कपड़े चाहिये थे ।जेब खर्च के लिये पैसे चाहिये थे , मालिक यह सब करने में असमर्थ थे। नवयुवकों में कामचोरी की प्रवृत्ति भी बढ़ती जा रही थी, परिवार में विघटन की नींव निर्मित होने लगी थी।

समयलाल की उम्र छः वर्ष की हो रही थी ,वह गुरुआना पढ़ रहे थे ,लिखना पढ़ना आने लगा था; बीस तक का पहाड़ा भी याद हो गया था तभी उनके पितामह का लम्बी उम्र व लम्बी वीमारी में अवसान हो गया ।वह गांव के सबसे वयोवृद्ध व्यक्ति थे , उम्र बहत्तर से ऊपर हो गयी थी ; बुखार व खांसी के कारण महीनां विस्तर पर पड़े रहे। पड़ोस के एक वैद्य की चिकित्सा चलती रही,उन्हीं के निर्देशन में कई जड़ी बूटियों को मिलाकर काढ़ा बना-बना कर उन्हें पिलाया

जाता रहा, कभी-कभी कुछ लाभ भी दिख जाता रहा लेकिन स्थायी लाभ नहीं मिला अन्ततः वह इस संसार से विदा हो गये।

X X X X

जब पितामह अन्तिम सासें ले रहे थे , घर के परिजन उनके चारों ओर खड़े थे , तभी एक गाय लाकर उनके पास खड़ी कर दी गयी थी , उनके हांथ में गाय की पूँछ रख दी गयी थी ,फिर घर के एक सयाने ने कहा था - "गंऊ माता पार लगाना।" एक परिजन ने कहा "मुंह में सोना डालो," जल्दी-जल्दी में एक गिन्नी जो चार आने भर थी, उनके ओठ में रख दी गई ,फिर वह गिन्नी व गाय दोनों महापात्र को देने के लिये एक व्यक्ति को सौंप दी गई। यह सब होते - 2 जब उनका प्राणान्त हुआ तो सभी लोग चीत्कार करके रो पड़े थे। औरतें बिलख-बिलख कर रो रही थी। सयानों को रोते देखकर बच्चे भी रोने लगे थे। समयलाल भी रोया था। लेकिन उसके बाल मन मे यह बात गूँजती रही, "गऊ माता ! पार लगाना, " वह नहीं समझ पाया कि गऊ माता जो उसके खूँटे में बधी है, कैसे पार लगायेंगी।

पितामह का गांव से बाहर एक बड़े बगीचे में जो उन्हीं का था में दाह-संस्कार हुआ ,गांव व आस-पास के लोग बड़ी संख्या में एकत्रित हुये थे, फिर एक निश्चित तिथि को महापात्र आया। उसने पीपल के वृक्ष के नीचे ऐसा बृह्द कर्मकाण्ड किया जिसमें प्रातः आठ बजे से एक बजे दोपहर तक समय लगा ,समयलाल भी अपने पिता व अग्रज के साथ वहां उपस्थित होकर सब देख रहा था, एकडला से महापात्र आया था, उसका नाम सुरेश प्रसाद था।

समयलाल ने देखा कि महापात्र को जब एक अच्छा सा पलंग,गद्दा,रजाई, ढेर सारे बर्तन, धोती व पहनने के सभी कपड़े ,जूता,छड़ी, छाता, बाबा का घोड़ा व नगदी तथा काफी गल्ला मिल गया तब उसने वहीं सुफल बोला और स्वयं पीपल के नीचे खीर-पूड़ी खाकर घर आया, जो अन्न उन्हें दिया गया,वह छः गधों में बाद में भेजा गया,जब महापात्र बाबा जी के घोड़े में बैठकर अपने गांव जाने लगे तो उन्हें इक्कीस रुपये विदाई दी गई ,उन्हें जो भी सामान दिया गया वह सब नया था, अच्छा था।

तेरहवे दिन तेरही हुई ,इसमें क्षेत्र के ब्राह्मण; परिवार के पुरोहत; सभी नात-रिश्तेदार व पास-पड़ोस के भैवाध (भाई बन्धु) आमंत्रित किये गये।उन दिनों तीन किलोमीटर दूर एक कस्वे में डीजल से चलने वाली आटा चक्की थी,सात बोरे गेहूँ बैलगाड़ियों में भेजकर पिसाया गया,

आठ कनस्टर शुद्ध देशी घी कड़ाह में डाला गया। आठ मजे हुये अच्छे कड़ाहदार बुलाये गयें,पर्याप्त दूध-दही एकत्रित किया गया। सब्जी का कड़ाह अलग चढ़ाया गया।पड़ोसी गांव से औरतें पूड़ी बेलने के लिये बुलाई गई।एक दिन पूर्व से ही सारी व्यवस्था बननी प्रारम्भ हो गयी थी।

सायं पांच बजे सर्वप्रथम ब्राह्मण भोज हुआ। जितने भी ब्राह्मण उसमे उपस्थित हुये, सभी को एक-एक धोती व एक-एक रुपया दक्षिणा में दिया गया। सब एक सौ इक्कीस ब्राह्मणों ने भोजन किया ,इसमें कुछ बच्चे भी थे, लेकिन दक्षिणा सबको बराबर बराबर ही दी गई। उसमें छोटे- बड़े का कोई भेद नहीं रखा गया।

महापात्र को जो वस्तुयें बाजार से खरीद कर दी गई व तेरही में जो व्यय हुआ।घर के अन्न, घी व दूध दही को छोड़कर लगभग तेरह सौ रुपये व्यय हुये।मालिक साहब ने यह हिसाब लगाकर अपने अन्य भाइयों से बताया। उन्होंने अपने भाइयों से यह भी बताया कि महापात्र सुरेश बहुत चबुआर है, उसकी लालच की कोई सीमा नहीं है यदि यही स्थिति रही तो भविष्य में कोई श्राद्ध व पिण्डदान भी न करा सकेगा,कोई तेरही भी न करेगा।

बाबा साहब के समय से ही घर की व्यवस्था की जिम्मेदारी मालिक साहब पर आ गयी थी। दूसरे भाई जो उम्र में उनसे डेढ़ वर्ष बड़े थे ,इलाहाबाद से हाई स्कूल १९२८ में पास करके घर पर थे वह जमीन्दारी व कोर्ट कचहरी का काम देखते थे मालिक साहब को पूरे खर्च का ब्योरा देना इसलिये भी आवश्यक था ताकि कोई उनकी ईमानदारी पर उंगली न उठा सके , उस समय चांदी का सिक्का प्रचलन में था, अतः तेरह सौ विक्टोरिया छाप चांदी के सिक्के ब्राह्मण दान व तेरही में खिसक गयें।उस जमाने मे यह बहुत बड़ी रकम थी।

सायं दरवाजे पर जब सब लोग एकत्रित होते, खेत-खलिहान की चर्चा होती तो कभी-कभी मृतक संस्कार व तेरही पर हुये खर्च की बात भी उठ खड़ी होती।कभी कोई प्रश्न खड़ा कर देता- क्या मृत्यु के बाद प्राणी इन सब वस्तुओं का उपभोग करता है ? फिर परिवार के कुछ नवयुवक व्यंगात्मक ढंग से कहते- घर की एक कलोर महापात्र को दे दिया, जो उसके यहां बछिया व्यायी है वह महाराज बढ़िया दूध खा पी रहे हैं, गाय उनके खूंटे में बंधी है शायद वह वैतरणी पार करा आयी।...........वह वैतरणी पार हुये हों या न हुये हों, लेकिन महापात्र तो वैतरणी पार ही कर लिया.........।

X X X X

समयलाल 'मालिक साहब' के दूसरे पुत्र थे, बड़े पुत्र जगदीश थे जो मजदूरों के साथ खेत-खलिहान में रहा करते थे ,पिता का नाम मनोहर था। लेकिन इस नाम से बहुत कम लोग परिचित थे। अधिकांश लोग मालिक साहब ही जानते थे।इसी नाम से उन्हें पुकारते थे इसी नाम से सम्वोधित भी करते थे।समयलाल अपने पिता से बहुत हिले मिले थे। वह पिता जी से मन की शंकाओं को बताते और उनसे समाधान की अपेक्षा भी करते थे। समयलाल ने पिता जी से दो तीन बार पूंछा था-पिता जी ! वैतरणी क्या है ? गऊ माता कैसे पार लगाती है ?.....मालिक साहब इन प्रश्नों के उत्तर में उसे बताते- "ब्राह्मण लोग बताते हैं कि मरने के बाद जब प्राणी स्वर्गलोक जाता है तो मार्ग में एक नदी पड़ती है , जिसका नाम वैतरणी है उस नदी को पार करना प्राणी के लिये कठिन होता है मरते समय जिस गाय की पूंछ पकड़ायी जाती है। वही गाय प्राणी को वैतरणी पार कराती है प्राणी पूंछ पकड़ लेता है गाय तैरती जाती है। प्राणी भी उसी पूंछ के सहारे तैरता जाता है। गाय जब तैरकर उस पार पहुंच जाती है ,तो प्राणी भी उसके सहारे वैतरणी पार कर जाता है... जब पुरोहित जी आये ,या महापात्र आयें ,तो उनसे वैतरणी के सम्बन्ध में और पूंछना। हम लोग तो इसके अलावा और कुछ नहीं जानतें।जो मैं ने बताया यह भी उन्हीं की बतायी हुई बात है। समयलाल की उत्सुकता वैतरणी व स्वर्गलोक के सम्बन्ध में संतोष जनक जानकारी प्राप्त करने के लिये बनी रही। कभी-कभी वह मां से इनके सम्बन्ध में पूंछता। लेकिन मां सहजभाव से कह देती - "बेटा !" मैं इनके सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती," फिर कहतीं- "तू स्वर्ग -नरक की बात न कर।"

इस सम्मानित परिवार के पुरोहित पड़ोसी गांव के प्रयाग बाबा थे,वह काफी सयाने थे, शरीर से हृष्ट - पुष्ट व साढ़े छः फुट ऊंचे थे। भीड़ में वह दूर से ही दिख जाते थे,वही हर पूर्णमासी अमावस्या को सीधा लेने व मालिक साहब से मिलने आते थे। अग्रज महावीर इस परिवार के उस समय के सबसे अधिक पढ़े लिखे व्यक्ति थे ,अंग्रेजी का ज्ञान खूब था। शिष्टाचार बस प्रयाग बाबा उनसे दस पन्द्रह दिन में किसी न किसी बहाने अपने नाती को लेकर मिलने आ जाते थे , चौपाल में कुछ लोग बैठे हुये थे।उनमे महावीर मालिक साहब व परिवार के कुछ नवयुवक थे,सामाजिक चर्चायें चल ही रही थीं तभी समयलाल ने प्रयाग बाबा से पूंछा - "बाबा! वैतरणी क्या है ? इसे कैसे पार किया जाता है "? सभी लोगों की निगाहें समयलाल की ओर -

घूम गई। यह प्रश्न सुनकर बाबा जी अकबका से गये। यह अप्रत्याशित प्रश्न था ,चौपाल का वातावरण एकदम शान्त हो गया। सब बाबा जी के उत्तर की प्रतीक्षा धैर्यपूर्वक करने लगे। बाबा जी से ऐसा प्रश्न उस गांव में उनके इतने बड़े जीवन में प्रथम बार किया गया था ; वह भी एक छ : सात वर्ष के बालक द्वारा।उन्होंने अपने सारे ज्ञान और संयम के साथ कहा- "बेटा ! शास्त्रों में स्वर्ग नरक के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी गई है।कहते है : प्राणी मरने के बाद अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाता है।जो प्राणी स्वर्ग जाता हैं उसे भी स्वर्ग में पहुंचने से पहले वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है , वह नदी साधारण जल की नही होती है उस नदी का वर्णन भी शास्त्रों में किया गया है, शास्त्रों में लिखा है कि नदी खून,मवाद व कीड़ों से भरी हुई है ये बुलबुलाते हुये कीड़े वीभत्सदृश्य प्रस्तुत करते है प्राणी को यही भयानक नदी पार करनी पड़ती है, प्राणी ने यदि जीवन में पुण्य कार्य किया है, तो वही पुण्य कार्य उसे नदी पार करने की शक्ति देते है : नहीं तो प्राणी उसी नदी मे डूबता-उतराता रहता है मरते समय गाय की पूंछ इसीलिये पकड़ायी जाती है कि जीवन के अन्त में एक पुण्य कार्य हो जाय और यही पुण्य कार्य उसे वैतरणी पार करा दे।कुछ पंडित लोग यह भी बताते हैं कि गाय पवित्र प्राणी है गाय की पूंछ पकड़ने से प्राणी को वैतरणी नदी पार करने में सरलता हो जाती है, प्राणी को उससे बड़ी सहायता मिलती है, बाबा जी की बात सभी ध्यान से सुन रहे थे, उनकी बात सुनकर समयलाल को छोड़कर सभी सन्तुष्ट हो गये थे।सबकी निगाहें बाबा जी के मुँह की ओर लगी थीं तभी समयलाल ने पुनः पूँछा - "बाबा जी स्वर्ग कहां है ? नदी स्वर्ग से कितनी दूर है" ? इस प्रश्न को सुनते ही बाबा जी अन्दर ही अन्दर कांप उठे। वह क्या उत्तर देते ! सभी समयलाल के प्रश्न पर भी आश्चर्य करने लगे ,तभी मालिक साहब बोले- "इसने मुझसे भी कई बार स्वर्ग -नरक व वैतरणी के सम्बन्ध में पूंछा। हमें तो इनके सम्बन्ध मे कुछ ज्ञान है नही। हम क्या बताते, अच्छा हुआ,उसने आपसे ही पूँछ लिया, हमको भी जानकारी हो जायेगी।"

बाबा जी ने साहस बटोरते हुये आत्मविश्वास के साथ कहना प्रारम्भ किया- "शास्त्रों में लिखा है कि प्राणी मरने के बाद अपने -अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नर्क में जाते हैं। स्वर्गलोग के राजा इन्द्र हैं।और नरक के यमराज है जो प्राणी स्वर्ग जाते है ;उन्हें वहां सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते है , उनकी सारी इच्छायें ,कामनायें पूरी होती हैं ,कहा जाता है कि स्वर्गलोक

में कल्पवृक्ष है ,व कामधेनु है; वे वहां के निवासियों की सारी कामनायें पूरी करते हैं उन्हें निवास-के लिये अच्छे महल, सेवा के लिये सुन्दर अप्सरायें, खाने-पीने के लिये उत्तम पदार्थ, सब कुछ उपलब्ध है किसी वस्तु का अभाव नहीं है रोग शोक नहीं है : सुख ही सुख है................................तुमने वैतरणी नदी के सम्बन्ध में पूंछा है। शास्त्रों में लिखा है कि वैतरणी स्वर्ग के पहले ही पड़ती है। इस लोक से जब प्राणी मरकर जाता है तो स्वर्ग लोक में पहुंचने के लिये वैतरणी पार ही करनी पड़ती है , शास्त्रों में कहा गया है -कि स्वर्ग में नदियां ,सरोवर दूध,दही,मधु,घी,सुरा,सुन्दरियां आदि सभी पदार्थ सहज ही प्राप्त है।

स्वर्गलोक इस लोक से ऊपर बहुत दूर है। इसलोक से हजारों योजन दूर है....................।

बाबा जी के उक्त कथन को सुनकर रामराज ने हॅसते हुये कहा - बाबा , तब तो यहां का जीवन व्यर्थ है ,यहां तो बड़ा कष्ट है। बड़ी परेशानियां हैं , रात -दिन परिश्रम करने के बाद भी पूरा नहीं पड़ता है, दिन भर मांगो तो दिया भर , रात भर मांगो तो दिया भर , हम लोगो को तो स्वर्ग ही सिधार जाना चाहिये।.................."

बाबा जी ने कहा- "जब आदमी इस जीवन में खूब पुण्य अर्जित करता है; पूरा जीवन पुण्य अर्जन करते हुये व्यतीत करता हैं तब मरने के बाद ही वह स्वर्ग लोक जाता है इसके पहले नहीं ....................। "

रामराज ने कहा-" इसीलिये मर जाने के बाद लोग कहते है ,स्वर्गवास हो गया यानी स्वर्ग के निवासी हो गये।.................."

" हां बेटा ! तुम समझ गये ! "

समयलाल ने पुनः पूछां " बाबा जी ! क्या कोई आदमी स्वर्ग से वापस आकर वहां की बाते बताया है या कहीं लिखा है। " बाबा जी निरुत्तर होने की स्थिति में होते हुये भी चुप नहीं रह सके । बोले- " जो वहां चला जाता है , फिर वापस नहीं आता। आज तक जितने प्राणी मरकर स्वर्ग या नरक गये उनमें से कोई वापस आज तक नही आया। यह सब वेद-पुराणों में लिखा है, पढ़ा तो मैने भी नही। लेकिन जिन लोगों ने पढ़ा है ; जो विद्वान है ;जिन्होंने वेदों व पुराणों का अध्ययन किया है ; वे ऐसा ही बताते है : .........."

समयलाल की उत्सुकता अधिक व ठोस जानकारी प्राप्त करने की बढ़ती जा रही थी उसने फिर पूंछा- " बाबा जी ,जो वेदों या पुराणों में स्वर्ग -नरक के सम्बन्ध में लिखा है; उसव किसने लिखा है ? वे तो वहां जाकर देख आये होंगे ! बिना देखे कैसे कोई जान सकता है ,कि इ घर में क्या है; कौन-कौन है ? "

बाबा जी कुछ क्षण सोचने के बाद बोले -" वेदों और पुराणों को किसी व्यक्ति ने नह लिखा। उन्हें अपौरुषेय कहा जाता है। उन्हें ईश्वर ने स्वयं लिखा है ........" समयलाल जब तु बड़े हो जाओगे। तब सब समझ जाओगे ,इतने में महावीर दादा बोले- " जाओ , सीधा ले आओ। बाबा को बहुत परेशान किये हो ! अब और कुछ न पूँछना ........ "

जब समयलाल सीधा लेने चला गया तब रामराज ने कहा- " बाबा ! समयलाल आक अभी और पूछेगा। अभी आता ही है ; तैयार रहो ," दादा महावीर ने कहा- अब हम मना कर देंगे कुछ न पूछेगा।" बाबा जी ने कहा-यह बालक बहुत जिज्ञासु है, बहुत बुद्धिमान है,इसके प्रश्नों के उत्तर सभी पंडित नहीं दे सकते। मै.ने तो जो सुना-जाना है ,वही बताया है ,लेकिन इतना ही सत्य नहीं है सत्य तो बहुत कुछ और है, जो हम नहीं जानते। सही बात तो यह है; स्वर्ग-नर्क औ मोक्ष के सम्बन्ध में न जाने लोग कब से विचार करते आये हैं ; कोई ठीक -ठीक नहीं जानता य जो जानते हैं बताते नहीं हैं। हम लोग भी सुनी सुनाई बातें कहते आये हैं। वही आज भी कहा....'

समयलाल एक बड़ी फूल की थाली में चावल,दाल आटा, नमक व आध पाव घी रखकर लाया। बाबा जी के सामने रख दिया। तभी रामराज ने समयलाल की ओर इशारा करते हुये धीरे से कहा- "और पूंछो।" क्योंकि रामराज को प्रश्नोत्तर से बड़ा आनन्द आ रहा था तभी महावीर दादा ने कहा-" हो गया ; बहुत पूंछ लिया। अब फिर कभी पूंछना।" समयलाल चुप रह गया ,लेकिन मन की बात उसके मुंह से अनायास निकल गयी -" मैं वेदो और पुराणों का अध्ययन करुंगा ,। वे ईश्वर की रचनायें है ; उन्हें अवश्य देखूंगा..." तभी बाबा ने कहा- " बेटा ! वेद बहुत कठिन है ; फिर वेद तो हमारे देश में हैं ही नही। उन्हें जर्मनी वाले उठा ले गये। अंग्रेज सरकार ने ऐसा करने में मदद की....।"

बातचीत का सिलसिला फिर वदला। बाबा जी सीधा लेकर नाती के साथ चल दिये क्योंकि समय अधिक होने लगा था। अपरान्ह था। सूर्यास्त होने को था।

जब मार्ग मे प्रयाग बाबा अपने सात आठ साल के नाती के साथ जा रहे थे तब उन्होने नाती से कहा ..''देखा तुमने समयलाल को ! कैसे कैसे प्रश्न कर रहा था,उसके प्रश्नों के उत्तर तो अच्छे-अच्छे पंडित भी नहीं दे सकते। बताओं ! कल का लड़का है ; इतनी बुद्धि उसमें कहां से आ गयी ?.. बेटा ; स्वर्ग-नरकके सम्बन्ध में तो मैं भी ठीक-ठीक नही जानता। मैं ने उससे सुनी सुनायी बातें ही बतायीं है...... लगता है , जैसा मैं ने बताया,उसी प्रकार लोग एक दूसरे को बताते चले आ रहे हैं। लेकिन यदि अव उस पर प्रश्न होने लगे हैं लोग देखने की बात करने लगे हैं, तो जब आज तक कोई देखकर नहीं आया, न देखकर कोई आयेगा ही,तब उस पर से लोगो का विश्वास भी डगमगा जायेगा। कौन स्वर्ग नरक पर विश्वास करेगा ? जैसे अंग्रेजों का शासन डगमगाने लगा है ; राजाओं का सिंहासन हिलने लगा है; उसी प्रकार धर्म पर जमे विश्वास और आस्थायें भी डगमगाने लगी है.....गांधी जी छुआछूत के विरुद्ध अभियान ही छेड़े हैं , औरतें भी परदे से बाहर आने लगी है..; बेटा.. सब कुछ घूमता हुआ, बदलता हुआ दिखाई पड़ रहा है....''

बाबा अपने गांव पहुंच गये। लेकिन समयलाल के प्रश्नों ने उन्हें झकझोर दिया था। जब कभी वह एकान्त मे होते ; समयलाल के प्रश्न व उसकी यह बात ''मैं वेदों और पुराणों का अध्ययन करुंगा '' उनके मस्तिष्क में गूंजती रहतीं ! जो मैं नहीं कर सका , मेरे पूर्वजों में भी कोई नहीं कर सका ; वह समयलाल करेगा ! ..इससे उनको कुछ पीड़ा भी होती।

++++

## (दो)

जिस समय समयलाल गांव में गुरुआना में पढ़ रहे थे, उन्हीं दिनों पड़ोसी गांव के एक बहुत वड़े जमीन्दार ने एक प्राइमरी स्कूल की इमारत बनवाकर प्राइमरी स्कूल खुलवा दिया था अतः गांव के गुरुआना से पढ़कर समयलाल प्राइमरी स्कूल में प्रवेश ले लिया। नाम लिखाने उनके चाचा आये थे। उनके साथ पड़ोसी गांव के कई लड़के भी जो गुरु आना में--- पढ़ते थे, प्राइमरी स्कूल में नाम लिखवा लिये। प्रयाग बाबा के नाती ने भी कक्षा एक में प्रवेश ले लिया, यह बालक पढ़ने में कमजोर था, गुरुआना में डेढ़ रुपया प्रति माह फीस लगती थी। जबकि प्राइमरी स्कूल में कोई शुल्क नहीं लगता था।

प्रयाग बाबा के नाती ने तो तीन साल के बाद पढ़ाई छोड़ दी।वह अपने घर गृहस्थी के काम में लग गये।पढ़ाई छोड़ने का कारण कक्षा दो में लगातार दो वर्ष अनुत्तीर्ण होना था कक्षा दो के कक्षाध्यापक एक नवयुवक शिक्षक थे, जो लड़कों की बहुत पिटाई करते थे ,अतः केसू ने पढ़ाई छोड़ने में ही अपनी भलाई समझा।

प्रयाग बाबा ने केसू को अपने साथ रखना शुरु किया। उनके अन्य नाती जो पढ़ने में अच्छे थे वे तो पढ़ते रहे, लेकिन केसू क्या करे ? अतः उन्होने उसे पुरोहिती के कार्य में प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया। जहां कहीं बाबा जाते ,केसू को अपने साथ लिये रहते। किसी के यहां सत्यनारायण --कथा है ; कोई पूजा-पाठ है ; कोई शादी -विवाह है, बारात है, एकादशी है; पूर्णमासी है किसी के यहां कोई व्रत-कथा है ; सब जगह केसू को अपने साथ लिये रहते। केसू सब देखते समझते ; और भोजन भी करते। भोजन के साथ दक्षिणा भी मिलती। केसू ने अनुभव किया कि यह कार्य तो बहुत अच्छा है ; सम्माननीय है । अच्छा भोजन भी मिलता है , पर्याप्त दूध-दही खाने को मिलता है। पैसा भी मिलता है, धीरे-धीरे केसू की रुचि पुरोहिती में बढ़ती गई। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उसका पुरोहिती कार्य का ज्ञान भी बढ़ता गया। उसे कुछ श्लोक भी कंठाग्र हो गये। सत्यनारायण कथा भी पढ़ने लगा।पराग बाबा के आंखो की ज्योति धीरे-धीरे बहुत कम हो गयी थी, क्योकि उन्हें मोतियाबिन्द हो गया था उन दिनों मोतियाबिन्द के आपरेशन की सुविधा यत्र-तत्र नगरों में ही थी, किन्तु यह सुविधा सामान्य नागरिकों को उपलब्ध नहीं थी, अतः पराग बाबा बगल में बैठे रहते और केसू पुरोहिती कार्य सम्पन्न करवाते। यदि केसू सत्यानारायण कथा कह रहे होते तो जहां कुछ गलत पढ़ते, -

पराग बाबा तुरन्त टोक देते, फिर बताते कि यह नहीं, यह लिखा है।' उन्हें पूरी सत्यनारायण 
कथा कंठाग्र थी। विवाह संस्कार विधि की पूरी किताब कंठाग्र थी।बहुत से सुभाषितान व नीति के श्लोक कंठाग्र थे, वह केसू को भी सायं श्लोक रटाया करते थे।पराग बाबा किसी पाठशाला में नहीं पढ़े थे, वह किसी के यहां जाकर नियमित अध्ययन भी नहीं किये थे। उन्होंने सारी शिक्षा वंश परम्परा से प्राप्त की थी,फिर अपनी बुद्धि और लगन से अपने व्यवसाय में पर्याप्त कुशलता प्राप्त कर ली थी ,ज्योतिष का भी उन्हें ज्ञान था, ज्योतिष का ज्ञान अपने किसी रिश्तेदार से प्राप्त किया था, चूँकि वह प्रखर वुद्धि के थे अतः उन्हें सीखने समझने में अधिक समय नहीं लगता था,संस्कृत के प्रति उनकी अभिरुचि भी थी, पुरोहिती कार्य में भी रुचि थी, उनके यहां पौरोहित्य कार्य पीढ़ियों से चला आ रहा था, उनको --- इसका ज्ञान घरेलू वातावरण से हो गया था।

पराग बाबा में दो विशेषताएं थीं जिस प्रकार वह शरीर से हृष्ट- पुष्ट साढ़े छः फिट ऊंथे , उसी प्रकार उनकी वाणी भी गुरु गम्भीर थी, जव वह श्लोकों का सस्वर वाचन करते थे, तो लोगों का ध्यान बरबस उनकी ओर आकर्षित हो जाता था, उनकी वाणी में आकर्षण था, लालित्य था, उनकी आवाज को सुनकर लोग पहचान जाते थे कि पराग बाबा बोल रहे हैं ; दूसरी प्रमुख विशेषता थी, अपने यजमानों को प्रसन्न रखना। किसी यजमान के यहां कोई काम होता तो उसको वह अपना कार्य समझकर करते थे। अन्य पुराहितों की तरह वह लेन देन में या चढ़ोत्री में कभी कोई मांग नहीं रखते थे।जितना जो प्रसन्नता से दे देता , उतने ही में वह प्रसन्न रहते थे , वह अपने यजमानों के यहां भी यदा-कदा पहुंच जाते थे, लेकिन जबसे उनकी आखों की ज्योति मारी गयी तब से वह सिमटकर घर पर ही रहने लगे। इससे उनको मानसिक पीड़ा थी।

पराग बाबा केसू के साथ दो तीन साल तक यजमानों के यहां गये। फिर अत्यधिक शारीरिकअस्वस्थता व अन्धेपन के कारण जाना बन्द हो गया। फिर दो साल बाद उनका सत्तर साल की आयु में अवसान भी हो गया।

पराग बाबा की मृत्यु से गांव में एक रिक्तता उत्पन्न हो गयी। उतना कुशल शीलवान दमंग , योग्य पुरोहित गांव में कोई न रह गया। केसू ने सारा पौरोहित्य कार्य अपने ऊपर तो ले लिया था , बाबा के निर्देशन में प्रशिक्षण भी लिया था। लेकिन बाबा और केसू की तुलना

यदि करनी ही पड़ती तो यही कहना पड़ता कि कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली। केसू तो पौरोहित्य की लाश ढो रहे थे, न उनमें प्रतिभा थी; न ज्ञान था।पराग बाबा जेसे पुरोहित विरले थे। केसू संस्कृत के श्लोको का शुद्ध वाचन भी नहीं कर पाते थे। लेकिन बाबा ने इतना अवश्य सिखा दिया था कि वह सभी कार्य साधारण ढंग से सम्पन्न करा लेते

X X X X

समयलाल के कक्षा पांच पास करने के बहुत पहले ही मिडिल स्कूल की बिल्डिंग बनकर तैयार हो गई थी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की तरफ से अध्यापक भी आ गये थे। कक्षा छः सात और आठ लगने लगी थी। समयलाल कक्षा पांच प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण होकर मिडिल स्कूल में कक्षा छः में प्रवेश ले लिया। वहां से भी वह कक्षा आठ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर कक्षा नौ में प्रवेंश ले लिया क्योंकि जिस समय समयलाल कक्षा छः में पहुंचे थे ,उसी वर्ष क्षेत्र के सम्भ्रान्त नागरिकों कुछ शिक्षकों व कुछ समाज सेवियों ने जन-सहयोग से हाई स्कूल खोल दिया था कच्ची ईटों की दीवालें खड़ी करवाकर सरपत से छवा कर कमरे बना लियें गये थे। मंगनी के कुछ शीशम (पेड़)मिल गये थे उनसे लड़को के बैठने के लिये बेंचे बनवा ली गयी थी।

कक्षा ६ से १० तक की कक्षायें प्रारम्भ कर दी गयी थी कुछ शिक्षक नियुक्त कर लिये गये थे जिनमें कुछ क्षेत्रीय थे ,कुछ बाहर के थे।

एक दिन कक्षा ९ में एक शिक्षक हिन्दी पढ़ा रहे थे बिहारी का दोहा था उसका अर्थ बताकर वह अगला दोहा पढ़ने लगे ;तभी समयलाल अपनी सीट पर खड़ा हो गया। शिक्षक ने पूंछा- " क्या बात है ? कुछ कहना चाहते हो ? "

समयलाल ने कहा-" सर ! आपने जो अर्थ अभी बताया है ; उसी के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूँ। ".

"क्या कहना चाहते हो ? कहों ,"शिक्षक ने कहा।" मैं समझता हूँ कि दोहे का अर्थ यह होना चाहिये।अमुक शब्द श्लेष है, फिर समयलाल ने अपने ढंग से दोहे का जो अर्थ बताया उसे सुनकर लड़के भी कहने लगे कि यह अर्थ अधिक अच्छा लगता है , समझ में भी आ गया। शिक्षक ने भी थोड़ी देर तक चिन्तन -मनन करने के बाद कहा-"समयलाल तुम भी ठीक कह रहे हो।मैं ने जो बताया वह भी ठीक है अमुक शब्द मे श्लेष है; इस शब्द के अमुक अमुक अर्थ होते है ":- फिर शिक्षक ने कक्षा में सबके सामने कहा-" देखो ! तुम लोगों को

समयलाल की तरह अध्ययनशील होना चाहिये, अभी तक मुझे नहीं मालूम था कि मेरी इस कक्षा में ऐसे भी अध्ययनशील बुद्धिमान छात्र हैं ........." फिर शिक्षक ने समयलाल से पूँछा- "तुम कक्षा आठ किस डिवीजन से उत्तीर्ण हुये हो ?" "फर्स्ट डिवीजन सर !" समयलाल ने बताया। "किस स्कूल से आये हो ?"

"यहीं के मिडिल स्कूल से "

"अच्छा ! अपनी सीट से उठो ,तुम आगे आओ। कल से आगे की इस सीट में बैठोगे।" शिक्षक ने सीट भी बता दी जो प्रथम पंक्ति में थी।

फिर शिक्षक ने पूँछा- "वे लड़के खड़े हो जायें जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर आये हैं।" दो लड़के और खड़े हो गये। शिक्षक ने उन दोनों लड़कों को भी जो समयलाल की तरह बीच में बैठे थे बुलाकर समयलाल के बगल में बैठा दिया। शिक्षक ने कहा- "सामने की इन तीनों सीटों में यही तीनों लड़के आज से रोज बैठेंगे।"जो लड़के वहां बैठे थे, उनको उन सीटों में भेज दिया जहां ये तीनों बैठे थे।

उस दिन से कक्षा में समयलाल की धाक जम गयी। शिक्षक की निगाह में भी समयलाल आ गया। वह जब कभी खड़े होकर कोई बात कहता तो गुरु जी उस पर गम्भीर होकर विचार करते।उसकी बात को महत्व देते। लड़के भी उसे बहुत मानते। लेकिन समयलाल रिजर्व स्वभाव के थे। वह अनावश्यक किसी से न तो बात करते , न किसी से रिक्त समय या मध्यावकाश में गप्प मारते। खेलकूद में भी विशेष रुचि नहीं थी, फुटबाल व बालीबाल में कुछ रूचि अवश्य थी लेकिन अधिकतर वह अपना समय अध्ययन में ही लगाता। लाइब्रेरी से हर सप्ताह वह कोई न कोई अच्छी पुस्तक ले जाता।

समयलाल कक्षा में किसी से कोई विशेष बात नहीं करता था, लेकिन कक्षा में यदि कोई शिक्षक कहीं भी त्रुटि करता या उसे आभास हो जाता कि यहां ऐसा न होकर ऐसा होना चाहिये, तो तुरन्त खड़े होकर टोंक देता था,फिर हल्की सी चर्चा या बहस भी हो जाती थी। फिर जब दोनों पक्ष सन्तुष्ट हो जाते ,शिक्षक भी पूरी तरह आश्वस्त हो जाते , तो आगे बढ़तें। इससे लड़के बहुत प्रसन्न होते थे, घंटी बजने पर जब शिक्षक चले जाते तो कुछ लड़के समयलाल के पास आकर उसकी पीठ ठोंकते हुये कहते थे- "भाई समयलाल !आपने कमाल कर दिया। गुरु जी भी आपका लोहा मान गये।आप तो हमारी कक्षा की नाक हैं ।"

छमाही परीक्षा हो गयी थी। कक्षा में विषय शिक्षक मूल्यांकित उत्तर पुस्तिकायें छा: को दिखा रहे थे। संस्कृत विषय की उत्तर पुस्तिकायें भी पंडित जी लाकर दिखाने लगे। समयलाल ने अपनी कापी लेकर उलट पुलटकर देखी,फिर कापी लेकर पंडित जी के पास गय कहा-"पंडित जी !इस अनुवाद में क्या त्रुटि है ?आपने आधे अंक दिये हैं , जबकि मैं ने श्लो का अन्वय भी लिखा है। कठिन शब्दों का अर्थ भी लिखा है ;तब अर्थ लिखा है । पंडित जी भी ध्यान से देखा। मन ही मन अपनी गलती भी महसूस की। क्या कहें ; गलती तो हो ही ग है। फिर समयलाल को समझाते हुये कहा- "तुम्हारे अंक कक्षा में सबसे अधिक हैं। पचास इकतालिस पाये हो। किसी को पैंतीस से अधिक नहीं मिलें हैं।यदि मैं श्लोक में पूरे अंक दे दे तो तुम्हारे पैंतालिस अंक हो जाते। अधिक अंक देखकर तुम वार्षिक परीक्षा में असावधान हो जाओं ,तुम यथावत् परिश्रम करते रहों,इसलिये मैं ने काटने की गुंजाइश न होते हुये भी अं काट लिये हैं। तुमने वस्तुतः इतना अच्छा और सही लिखा है, कि अंक काटने की कहीं क गुंजाइश नहीं है। तुम्हें तो पचास में पचास मिलना चाहिये था , समयलाल समझ लो कि तु पचास अंक प्राप्त हो गये हैं" । पंडित जी ने किसी तरह समयलाल को समझाकर सन्तुष्ट क दिया लेकिन उनके अन्तरमन में यह पीड़ा बनी ही रह गयी कि उन्होंने रात में लालटेन की रोश में कापियां जाँची है , उनसे त्रुटि तो हो ही गयी। भविष्य में ऐसा न हो; इसका ध्यान रखने क संकल्प मन ही मन बनाया।

सभी शिक्षक और समयलाल के सहपाठी इस बात को जान गये थे कि यदि किसी कहीं कोई त्रुटि हो गयी, या समयलाल को कहीं कुछ अनुचित लगा तो वह टोकने में बिल्कु नहीं हिचकते थे ,कुछ लोगों की दृष्टि में उनकी यह आदत अच्छी नहीं थी, इसलिये वे लो समयलाल को विचित्र लड़का समझते थे,

समयलाल की टोका-टाकी का यह प्रभाव पड़ा कि सभी शिक्षक जो उसकी कक्षा क पढ़ाते थे ;अच्छे ढंग से तैयार होकर कक्षा में आते थे। इससे उनको भी पढ़ाने में आन आता था ; लड़को के सामने किसी समस्या के उत्पन्न होने पर उसका आत्मविश्वास के सा समाधान भी कर देते थे ; लड़के भी प्रसन्न रहते थे। कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक मन ही म भयभीत भी रहते थे कि समयलाल कहीं कोई प्रश्न न पूँछ ले। क्योंकि उसका अध्ययन पाठ पुस्तक तक ही सीमित नहीं था।

(तीन)

हाईस्कूल की परीक्षायें निकट थी : तभी समयलाल की शादी एक सुदूरवर्त्ती गांव में तय हो गयी। मार्च में परीक्षायें थीं,मई में शादी थी। दोनों के बीच डेढ़ माह का अन्तर था। हाईस्कूल की बोर्ड परीक्षा का केन्द्र जिला मुख्यालय था। समयलाल अपने सहपाठियों के साथ परीक्षा देने गया। जिला मुख्यालय में परीक्षा देने के सिलसिले में सत्रह दिन रुकना पड़ा था। भोजन बनाने के लिये गांव से एक ब्राह्मण लड़का गया था, क्योकि छः लड़के एक साथ एक स्थान पर रुके थे।

बीच-बीच में गैप था। गैप के दिनों में सभी लड़के सायं घूमने निकल जाया करते थे। वे सोचते थे कि इसी बहाने शहर भी देख लें। घूमते-घूमते वे काफी दूर तक निकल जाते थे, फिर सायं वापस आकर भोजन करते थे दो-दो के ग्रुप में अलग-अलग बैठ कर रात में ग्यारह बजे तक अध्ययन करते। वे सभी गांव से लालटेन ले गये थे।

समयलाल के पेपर बहुत अच्छे रहे।उसके अन्य साथियों के प्रश्न पत्र भी अच्छे रहें, सभी अपनी अपनी परीक्षाओं से सन्तुष्ट थे, परीक्षोपरान्त सभी वापस आ गये। लेकिन जब तक वे सब मुख्यालय में रहे, समयलाल से हँसी -मजाक करते रहे।

समयलाल के साथ जितने लड़के परीक्षा देने गये थे ,वे सभी विवाहित थे, उन दिनों जल्दी शादी करने की प्रथा थी, समयलाल बचे थे , वह भी डेढ़ माह बाद विवाह सूत्र में बंधने को थे ,इसलिये विवाहित लड़के मण्डप के नीचे कोहवर व कलेवा की चर्चा कर करके हंसते थे

यह हंसी-मजाक उस समय होता जब सभी लड़के सायं पांच साढ़े पांच बजे बाहर घूमने जाते। एक दिन एक लड़के ने मजाक में समयलाल से कहा- समयलाल भैया तुम्हारी शादी तो केसू करवायेगा।तुम्हे केसू के पद प्रच्छालन भी करना होगा।इस पर दूसरे लड़के हंस पड़े। फिर एक लड़के ने कहां - "इसमें हंसने की क्या बात है। यह तो हिन्दू समाज में रुढ़ि ही बनी है कि वर-कन्या पुरोहित जी का आशिर्वाद लेने के लिये उनको गोदान भी दें , या गोदान के नाम पर कुछ रुपये दें, फिर पुरोहित जी के पैर भी स्पर्श करें , कहीं-कहीं पद प्रच्छालन भी करवाते है ; जमुना पार में तो यही प्रथा है न विश्वास हो तो घस्सू से पूंछ लो," घस्सू ने कहा- "बात तो बिल्कुल ठीक है,मेरी शादी में तो ऐसा ही हुआ था.अभी पिछले वर्ष की ही बात तो है

ग्यारह ग्यारह रुपये गोदान हुआ था फिर पद प्रच्छालन भी करना पड़ा था" शेखर ने अप प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा-"यह तो बड़ी खराब प्रथा है, पैसा भी दो;पैर भी धोओ मण्डप के नीचे ऐसी स्थिति रहती है ; बैठे-बैठे इतना जी ऊब जाता है कि जो जो पुरोहित कह है। वह सब वर कन्या यन्त्रवत् करते जाते है : कन्या की तो बात छोड़िये ; वह तो अशिक्षि होती है। लेकिन पढ़े लिखे लड़के भी डोरी मे बंधी कठपुतली की तरह नाचते रहते है। खड़े जाओ ; खड़े हो गये. गणेश के सिन्दूर लगाओ। सिन्दूर लगा दिया। पानी छिड़को, पानी छिड़ दिया। कुसा लो,कुसा थाम लिया। यानी बिना बुद्धि विवेक के सभी क्रियायें यंत्रवत् सम्पादि की जाती रहती है , कोई कुछ इधर-उधर नहीं कर सकता। न कुछ उस समय पूँछ सकता ... पूंछो तो हंसी के पात्र बने..." श्याम ने कहा- "शेखर ! तुम भले ही न पूंछे हो ; लेकि समयलाल तो पूंछेगे। कक्षा में जब तुरन्त शिक्षक से पूँछ लेते थे ,तो मण्डप के नीचे क्यों न टों देंगे ? क्यों न पूंछेगे ? उन्हें ऐसा करने से कौन मना करेगा ?"

संगम ने कहा- "भाई ! मेरी समझ में अब तक न आया न किसी ने बताया ही। गोवर से गणेश क्यो बनाये जाते हैं और सर्व प्रथम गोवर गणेश की पूजा क्यो होती हैं ?

शेखर ने विनोद पूर्ण मुद्रा मे उत्तर दिया- "ताकि तुम गोवर गणेश बने रहो। मूर्ख ब रहो। याद है तुम्हे ! जब एक दिन कक्षा में उपाध्याय जी ने तुम्हें ही गोवर गणेश कहा था , फि ग़ोवर गणेश का अर्थ बताया था ...."

" हाँ ! याद है , "

समयलाल ने बीच में टोंकते हुये कहा-" मैं केसू के पैर तो न स्पर्श करुंगा। वह मे सहपाठी रह चुका है। कितना गधा था पढ़ने में ? अनुत्तीर्ण हो जाने के कारण ही उसने पढ़ा छोड़ी है।ऐसे लोगो के कहीं पैर स्पर्श किये जाते हैं ? पराग बाबा होते तो बात अलग थी क्योंि जो ज्ञानी है ; सदाचारी है ; बड़े है, उनके पैर छूने में अपनी आत्मा भी प्रसन्न होती है। वह का कभी न करे जिसे अपनी आत्मा न चाहे। सब काम आत्म संतोष व आत्मसंतुष्टि के लिए ह किये जाते हैं; जिस काम के करने में आत्मा ही अप्रसन्न हो ; पीड़ित हो,वह कार्य ही क्यो करें घस्सू ने जो किया , वह मैं नही करुंगा....... घस्सू ने कहा- "चाहता तो मैं भी नही था, लेकि मुझमें इतना साहस नहीं था कि मैं मना कर देता। लेकिन तुम ऐसा कर सकते हो। तुम साहस हो ; बुद्धिमान हो; बड़े घर के हो ,तुम्हारीचल जायेगी ,लोग बुरा भी नही मानेंगे।......" श्याम

ने कहा- "कोहबर में सावधान रहना। नहीं तो औरतें तुम्हारे जूतों को शंकर भगवान बनाकर पूजा भी करवा देंगी और हंसेगी भी, .."

"कैसे ? "समयलाल ने पूंछा ,

"मण्डप के बाद वर -कन्या को औरतें उठाकर एक कमरे में ले जाती है : वहॉ वर के जूतों को कपड़ों में ढककर ऐसा बना देती हैं कि जूते मालूम ही नहीं होते।फिर औरते कहती हें- "लाला इनकी पूजा करो.... यह तुम्हारे पूज्य हैं .." जब वर उनकी बात को मानकर उसकी पूजा करता है, तो औरते हंसती हैं ,तरह तरह के व्यंग भी कसती हैं....." समयलाल ने कहा- "जब औरतें जूतों को कपड़े से ढकती हैं ,तो लड़का देख तो लेता है, देखने के बाद वह जूतों को शंकर भगवान क्यों मानकर पूजा करेगा ? "

श्याम ने समयलाल को बताया कि औरते लड़के के जूते उसी समय नाउन से मंगवा लेती हैं जब लड़का मण्डप के नीचे रहता है । लड़के के सामने कुछ नही होता है वे पहले से ही जूतों को इस ढंग से कपड़े में छिपा देती हैं कि लड़का समझ ही नही पाता कि उसके जूते ही कपड़े के अन्दर लिपटे उसके सामने हैं ।

शेखर ने हंसते हुये कहा-" श्याम के साथ ऐसा ही हुआ है। श्याम ने कोहवर में तीन बार शंकर भगवान को सिर झुकाया है ,औरतो ने इन्हें खूब बेवकूफ बनाया है। बड़ी हंसाई की है ,जब उसी के सामने एक औरत ने धीरे से कपड़ा उठाया,तो अपने ही जूतों को देखकर श्याम शर्म में डूब गया था, बात सही है न ?" सब लड़के ठहाका मारकार हंसने लगे। श्याम ने हंसते हुये कहा- "आपने भी तो ऐसा किया है.." इस पर फिर सभी लड़के जोर जोर से हंसने लगे। ,कुछ क्षण बाद घस्सू ने कहा- "औरतें तो ऐसा हंसी मजाक में करती हैं यदि उनके बनाये भगवान को लड़का नत सिर होता है, फिर वे हॅसती हैं तो कौन बुरी बात है ? ऐसा अवसर तो जीवन में बड़े भाग्य से एक ही बार आता है।" शेखर ने कहा- "तो दुबारा फिर चले जाओ ससुराल ।वहां तुम्हारी साली सरहज हैं ; उनसे बता देना कि मैं कोहवर वाले शंकर भगवान को नतसिर होने आया हूं " फिर अबकी बार वे अपने चप्पलों को कपड़े में ढककर कह देंगी- "लाला इनकी पूजा करो।" पूजा कर आना, "सभी हंसने लगे।

संगम ने हंसते हुये धीरे से कहा- "आप सभी लोग अपनी अपनी शादियों के अनुभव समयलाल को बता दीजिये ताकि जो गल्तियां व बेवकूफियां आप लोगो ने अपनी शादियों में-

की है; उनको समयलाल न करें ।समयलाल पहले से सावधान रहें।"

घस्सू ने कहा-" मैं बता रहा हूं समयलाल सुनलो। कोहवर में औरतें जब कपड़े में किसी देवता या देबी को सिर झुकाने को कहें तो तुम कहना ' पहले आप लोग सिर झुकावें जब वे सिर झुकावें तो तुम भी चाहो तो सिर झुकाना। न चाहो तो न झुकाना ,जब ज्य आग्रह करें कि आपको ऐसा करना आवश्यक हैं, तो तुम कपड़े को हटाकर देख लेना। तुम स्वयं पता चल जायेगा कि असलियत क्या है ! दूसरी बात, जब कलेवा खाने जाना तो तु न खाने लगना। नही तो औरतें कहेंगी-" हाय रे ! लल्ला बहुत भूखे रहे...." सब हंस पड़े। "थोड़ी देर प्रतीक्षा करना। गम्भीर मुद्रा बनाये बैठे रहना। फिर देखना, तुम्हारे सास ससुर अं बहुत से लोग तुमसे प्रार्थना करेंगे- " लल्ला ! खाओं"... फिर तुम कहना- "एक मो चाहिये..." फिर वे एक मोहर लाकर तुम्हारी गर्दन में बांध देंगे .. समझे..।" इस पर सभी लड़ ताली पीट-पीट कर हंसने लगे। फिर शेखर ने कहा- बहुत देर तक गुरु गम्भीर बने न बैठे रह ,नही तो हंसी के पात्र भी बनोगे।"

तरह-तरह की बातें लड़के आपस में करते रहे हंसते रहें। समयलाल भी मुस्कराते सुनते रहे।

X X X X

मातृपूजन के चार पांच दिन शेष थे, तभी यू०पी० वोर्ड का हाईस्कूल का रिज निकल गया ।दूसरे दिन विद्यालय में अंक सूचियां भी आ गयीं। विद्यालय का रिजल्ट बहु अच्छा था। इससे प्राचार्य व सभी शिक्षक बहुत प्रसन्न थे। समयलाल अपनी संस्था मे प्रथ श्रेणी व प्रथम स्थान पर रहे। संस्था से कुल पांच लड़के प्रथम अट्ठाइस द्वितीय श्रेणी व इकताली लड़के तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। कुल इक्यासी लड़के परीक्षा में बैठे थे ,

समयलाल की अंकसूची देखकर प्राचार्य ने कहा- "इस बालक ने तो हमारे संस कीं प्रतिष्ठा बढ़ा दी है इतने अच्छे अंक पिछले दो वर्षो में यानी जब से संस्था के लड़ हाईस्कूल परीक्षा में बैठ रहे हैं ,किसी को नहीं प्राप्त हुये हैं। लगता है अगले कई वर्षो तक य रिकार्ड नहीं टूटेगा। इसकी तो मण्डल में कोई पोजीशन होनी चाहिये। सभी विषयों में अच अंक हैं अंग्रेजी विषय को छोड़कर सभी बिषयों में डिसटिंक्शन, मार्क्स हैं ,अंग्रेजी में भी पैंती अंक है, समयलाल की इस सफलता पर जितने उसके माता-पिता प्रसन्न थे ,उससे अधिक

स्कूल के वे शिक्षक थे जो समयलाल को पढ़ाये थे, लड़के भी समयलाल को बधाइयां देते रहे

।घस्सू, श्याम, शेखर, संगम उत्तमचन्द जो एक साथ रहकर परीक्षा में सम्मिलित हुये थे भी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये। लड़के अपनी अपनी अंक सूचियां लेने विद्यालय आने लगे, समयलाल भी अपनी अंकसूची ले गया।

मातृपूजन के दिन मण्डप बनवाने के लिए केसू महाराज आये।उन्होने विधि-विधान से मण्डप बनवाया। सीधा लिया। सीधा के साथ पांच विक्टोरिया छाप चांदी के रुपये पाये क्योंकि घर के लोग समयलाल की श्रेष्ठ सफलता पर अतिशय प्रसन्न थे -जब केसू महाराज उठने लगे कि धर चलें तभी समयलाल ने उनसे कहा-" केसू महाराज! मेरी एक बात सुन लो ,अभी से बताये देता हूं ; आप इस बात को ध्यान में रखेंगे कि चकखेड़ा में आप वर-वधू से पद-प्रच्छालन नहीं करायेंगे। यह मेरे सिद्धांत के प्रतिकूल है।आप वर-वधू की प्रतिष्ठा का ध्यान रखेंगे। बारात में सबसे बड़ा स्थान वर का रहता है, शेष सब उसकी सहायता व संरक्षण के लिये होते है, आप एक कार्यक्रम सम्पन्न कराने के लिये रहते है; वह है विवाह। पद प्रच्छालन उस कार्यक्रम का अंग नहीं है इसे पुरोहितों ने अपना महत्व वर से भी ऊपर रखने के लिये वैवाहिक कार्यक्रम में जोड़ लिया है। मै अपनी बात सबके सामने खुले आम अभी से बताये देता हूँ, बाद में वहां कोई कुछ नही कहेगा....." उस समय मण्डप में समयलाल के परिवार के सभी लोग व गांव के भी कुछ जन उपस्थित थे, सभी लोगों ने समयलाल की बातो को ध्यान से सुना।इससे पहले कि कोई बोले, केसू महाराज ने कहा- भैया जैसा आप चाह रहे हैं; वैसा हीं होगा। हम आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं करेंगे ..... ठीक है आप निश्चिन्त रहें। वह उठ खड़े हुये। अपना झोला उठाया, कंधे में लटकाया; चल दिया।

तेजपुर से चकखेड़ा पैंतीस किलोमीटर की दूरी पर था, बारात जाने का साधन मात्र बैलगाड़ियां थी, एक हाथी ग्यारह बड़ी रास के घोड़े ,तीन ,ऊंट ,तीन बैलगाड़ियां व तेरह रब्बे बारात के लिये तैयार थे, उन दिनों ट्रैक्टर जीप क्या, साइकिलें भी कहीं-कहीं ही थी;

बैलगाड़ियां तो एक दिन पूर्व रात ग्यारह बजे चल दी ,उन्हीं के साथ रब्बे भी थे, क्योंकि रब्बे भी बैलगाड़ी ही थे, सभी पैदल जाने वाले बाराती गाड़ियों व रब्बों में बैठ गये, घोड़े ऊंट व हाथी प्रात: सूर्योदय के पूर्व रवाना हुये, समयलाल पहले रब्बे में बैठकर गये, फिर चकखेड़ा के समीप नालकी में बैठ गये। उन्हें नालकी में बैठना अच्छा नहीं लगा था, क्योंकि

उसे चार व्यक्ति अपने कंधों पर ढो रहे थे, लेकिन न चाहते हुये भी उन्हें बैठना पड़ा।



बैलगाड़ियों व रब्बों को खींचने वाले बैल स्वस्थ, ऊंचे -पूरे व हृष्ट-पुष्ट थे, उनके गलों में घंटियां बंधी हुई थीं : ऊंटों के गलों में भी घंटियां बंधी हुई थी, हांथी के पीठ के दोनों ओर बड़े-बड़े घंटे लटक रहे थे, जो हांथी के चलते समय टन- टन की ऊंची ध्वनि पैदा कर रहे थे। पूरी बारात जब कच्ची सड़क होकर जा रही थी ; तो आकाश में धूल का बादल छा गया था, बैलों के ऊपर झूलें पड़ी हुई थी; गलों की घंटियां बज रही थी, सजे हुये रब्बे थे ; यह मनोहर दृश्य देखते ही बनता था, पूरी बारात चखखेड़ा से तीन मील..... पहले एक महुआ के बगीचे में एकत्रित हुई।जब सब बाराती व हांथी, घोड़े, नालकी तथा ऊंट आ गये तब वहां से व्यवस्थित ढंग से बारात चकखेड़ा के लिये रवाना हुई।सबसे आगे पांच घोड़े, फिर रब्बे, फिर नालकी, फिर शेष घोड़े।उनके पीछे ऊंट फिर हांथी व अन्त में तीन बैलगाड़ियां। इस क्रम से जब बारात चली, घोड़े हिनहिनाते हुये जा रहे थे, घंटियों की मधुर ध्वनि हो रही थी, हांथी के घंटे टन-टन की आवाज कर रहे थे, तो लोगों का ध्यान बरबस बारात की ओर आकृष्ट हो जाता था। एक लम्बी डोर लगी हुई थी, लोग आनन्द विभोर होकर बारात देख रहे थे ; अच्छी सजी सजाई ठाठ की बारात थी।

बारात का अगला हिस्सा चकखेड़ा पहुँच गया लेकिन पीछे पौन मील तक बारातियों की डोर लगी हुई थी, सायं पांच बजे तक सब लोग जनवासे में एकत्रित हुये। बारात को देखकर गांव वालों ने कहा- "अच्छी ठाठ की बारात है। ऐसी बारात तो इस गॉव में आज तक नहीं आयी। ग्रामवासी बारातियों के आदर स्वागत व उनकी समुचित व्यवस्था में लग गये, उन्हें हर प्रकार से सन्तुष्ट करने के प्रयास में जुट गये।

दूसरे दिन सायं आठ बजे से विवाह की मुहूर्त थी, पुरोहितों का कथन था कि ग्यारह बजे रात्रि के पूर्व कन्यादान हो जाना चाहिये।

पुरोहित व नाऊ तदनुसार सारी व्यवस्था बनाने में लग गये। व्यवस्था बन जाने पर वर व कन्या को मण्डप के नीचे बिठाया गया। कार्यक्रम पूजन से प्रारम्भ हुआ,

समयलाल के लिये यह नया व रोमांचक अनुभव था। इसलिये वह समस्त बातों को ध्यान से देखते -समझते हुये कार्य कर रहे थे, जब अन्त में वर व कन्या द्वारा गोदान कराया-

गया तो उनके द्वारा पद प्रच्छालन की बात को केसू महाराज ने मना कर दिया। कन्या पक्ष के

पुरोहित द्वारा पद प्रच्छालन पर कुछ जोर भी दिया गया और कहा गया कि यह कार्य वैवाहिक कार्यक्रम का एक अंग है तो केसू महाराज ने कहा- "यह भले ही अंग हो, लेकिन वर व कन्या इस कार्य को नही करेंगे। वर पक्ष के कुछ लोगो ने कहा- "लड़का इस कार्य के लिये तैयार नही है ; इसे छोड़ो। आगे चलो। तब थोड़ी देर तक कार्य के पक्ष विपक्ष में हल्की फुल्की चर्चा चलने के बाद कार्य आगे बढ़ा।

समयलाल पहले से ही सावधान था, इसलिये जब वह कोहवर में कन्या के साथ गया, तो औरतों ने मजाक में उससे पूँछा-" लाला, तुम्हारे कुल देवता कौन हैं ; कुल देवी कौन हैं ? उनकी पूजा करते हो न ! " समयलाल ने औरतों की ओर देखते हुये कहा-"हमारे कुल देवता तो वही हैं जो आपके है : और कुल देवी भी वही हैं जो आपकी है, उनकी पूजा तो हमारे घर की औरतें करती है, मैं तो अभी पुस्तकों और कलम की पूजा में लगा हुआ हूँ .."

एक औरत ने हंसते हुये कहा-" कोहवर में उनकी पूजा तो वर करते है ; दूल्हा राजा का यह काम है, आज यहां घर की औरते कहां है ?" फिर उसने कहा- "भगवान को यहां उठा लाओ अगरवत्ती और दियासलाई भी ले आओ, "

एक औरत एक थाल में नये कपड़े में ढक कर कुछ ले आयी। उनके सामने रखते हुये कहा- "अगरबत्ती जलाकर पूजा कर लो। आशीर्वाद ले लो। फिर कुछ प्रसाद पालो। रात भर बैठे-बैठे थक गये हो ;......"उसकी वाणी में सरसता थी, मधुरता थी,

समयलाल ने बिना कुछ कहे कपड़ा ऊपर की ओर उठा दिया। उसकी कल्पना के विरुद्ध वहां कुछ और था। उसने देखा- कपड़े के अन्दर शंकर भगवान की एक फोटो रखी थी; कुछ मिठाई रखी थी ;एक सोने की सलाई थी व एक सोने की जंजीर थी ,

एक औरत ने विनम्रतापूर्वक कहा- "लाला ! पहले शंकर भगवान की पूजा करो। फिर सलाई से इस दीपक की दोनो बत्तियों को एक में कर दो। फिर जंजीर पहन लो,जो मीठा रखा हुआ है, उसे खालो..."

एक लड़की ने तुरन्त दियासलाई से तीलियां निकाल कर चार अगरबत्तियां जलाई। फिर उन्हें समयलाल को देते हुये कहा- "शंकर भगवान की पूजा कर दो " फिर रखी हुई सलाई को उठाकर उन्हें दिया,कहा- "दोनों बाती एक में मिला दो।"समयलाल ने वैसा ही कर दिया-

फिर एक महिला ने रखी हुई जंजीर उठाकर उनके गले में डाल दिया। दूसरी ने कुछ मिठाई उ मुंह में रख दिया। एक औरत ने कन्या का घूंघट उठाते हुये कहा- " लाला ! देख लो। यह तुम् साथ रहेंगी ,सुख-दुख में सदैव तुम्हारे बगल में बनी रहेगी... फिर एक अन्य महिला ने कह "लाला ! यह विद्या हैं ,इनका नाम विद्या है। बहुत सरल,सीधी -साधी भोली दूल्हन हैं।फिर ने कहा- "लाला, इनको बहुत प्यार देना। इनसे कभी नाराज न होना।इनकी सुख-सुविधाः ओर ध्यान रखना।" फिर एक औरत ने कहा- "लाला ! हमको भी अपने गांव ले चलोगे? फिर एक ने कहा- "लाला ! हम भी आपके साथ चलेंगी, ले चलोगे न...."

समयलाल कन्या के बगल में बैठे थे। कन्या अब उनकी परिणीता हो गयी थी।दो के सामने शंकर भगवान की फोटो व एक जलता हुआ दीपक था। अगल-बगल व पीछे ब संख्या मे औरतें व सयानी उम्र की लड़कियां खड़ी थीं।कुछ बोल रहीं थीं ; कुछ मुस्करा थी।कुछ मजाक कर रहीं थीं। कुछ समयलाल को समझा रहीं थीं ;

समयलाल को एक नया रोमांचक अनुभव हो रहा था ; वैवाहिक कार्यक्रम कित सरस, मिठास पूर्ण व अनोखा अनुभवों से परिपूर्ण होता है ,इसका उसे प्रत्यक्षतः अनुभव हो था, उसके मन-मस्तिष्क में एक अजीब सिरहन उत्पन्न हो गयी थी, वह कुछ बोल न पा था, जैसा औरतें कह रही थी ; वैसा ही वह कर रहा था, उसे लगा कि औरते कुछ भी ऐसा न कर रहीं जो अशिष्ट या अनुचित हो।मजाक के नाम पर भी उन्होंने अशिष्टता नहीं की। उन व्यवहार बहुत मर्यादित और शालीन था,

उन दिनों बारातें तीन दिन रुकती थीं लेकिन चकखेड़ा वालों के विशेष आग्रह अनुरोध पर बारात को सात दिन तक रुकना पड़ा था, तीन दिन के बाद जब बारात विदा हुई लड़की के बड़े पिता जी हाथ जोड़कर खड़े हो गये थे, कहा- "मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजि सभी बाराती मेरे यहां एक दिन रुकें ।महावीर दादा व मालिक साहब उनके आग्रह को स्वीक करके रुक गये।" फिर क्या था ; लंड़की के पिता चार भाई थे। सभी ने अपने अपने ढंग व्यवस्था बना रखी थी , सभी ने बारी बारी से बारात को आग्रह करके रोका। बारातियों रुकना पड़ा।उनके प्रेमपूर्ण आग्रह भरे अनुरोध को वे ठुकरा न सके , सात दिनों तक बाराति का भरपूर स्वागत हुआ।सभी बाराती प्रमुदित थे।सभी चकखेड़ा वालों की प्रशंसा कर रहे कुछ बाराती तो रुकने की स्थिति में न रहने के कारण चुपचापं रात में चले गये थे। कुछ तो

चकखेड़ा वालों की मेहमान नवाजी की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। चकखेड़ा वाले बड़े आदमी थे ;उनके पास लम्बी काश्त थी ; गाय भैंसे बड़ी संख्या में थी , पिछले ही वर्ष वे फर्ग्युसन ट्रैक्टर लें आये थे। जबकि उस क्षेत्र में किसी के पास ट्रैक्टर नहीं था,उनकी चार गांव में काश्त थी। अच्छी जमीन थी। भरपूर पैदावार होती थी,उनके पास अपने निजी तालाब थे ;बाग बगीचे थे;रईस परिवार था,

समयलाल चकखेड़ा के सम्बंध से प्रसन्न था, परिवार के लोग भी कहते थे; कि चकखेड़ा दूर तो है आने जाने में बड़ा बल है नही तो है बहुत अच्छा। बहुत अच्छा सम्बन्ध हैं वे लोग खूब अन्दर से दृढ़ हैं ; गांव में उनकी टक्कर का कोई नही है क्षेत्र में भी कोई नहीं है।

X X X X

समयलाल ने आगे की पढ़ाई के लिये इलाहाबाद में आकर एक इण्टरमीडिएट कालेज में नाम लिखाया, मुट्ठी गंज में क्षेत्र के कुछ लड़के पहले से ही रह रहें थे। उन्हीं के साथ समयलाल की भी व्यवस्था बन गयी ।समयलाल इसके पूर्व इलाहाबाद नहीं आये थे। इसलिए शहर उनके लिये नया था, लड़कपन से ही इलाहाबाद की प्रशंसा सुनता आ रहा था। अब शिक्षा प्राप्त करने के बहाने इलाहाबाद में प्रवास करने का अवसर भी मिल गया।

समयलाल ने एक नयी साइकिल खरीदी क्योंकि कालेज पैदल आने जाने में असुविधा थी। उनके साथ रहने वाले अन्य लड़कों के पास भी साइकिलें थीं।

पन्द्रह अगस्त समीप था। समयलाल ने देखा कि कालेज और नगर सजाया जा रहा है,दो दिन बाद जब स्वतंत्रता-दिवस आया तो पूरे नगर मे लाउड स्पीकरों से राष्ट्रीय गीतों की ध्वनि गूंजने लगी। लड़के प्रातः नगर की गलियों में प्रभात फेरियां निकाली। विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये। मिठाइयां बंटी। यह स्वतंत्रता दिवस का नवां वर्ष था, पूरा नगर तिरंगे झण्डे व पन्नियों से सजाया गया था।

समयलाल के साथ उसी मकान मे कुछ जमुना पार के लड़के भी रह रहे थे,उनमें एक लड़का उन्हीं की कक्षा का था, लेकिन उसने अपना प्रवेश दूसरे इण्टरमीडिएट कालेज में लिया था,उससे समयलाल की मित्रता हो गयी। भोजन तो सभी का एक साथ बनता था। एक गंगापार का लड़का नौकर था। जो सभी का भोजन बनाता था। बर्तन धोता था, मेस में क्या है क्या नहीं है,इसकी जानकारी लड़का रामहित को देता था,रामहित एम०ए० के छात्र थे ।सबसे सयाने थे। उन्हीं के संरक्षण व देखरेख में सभी लड़के थे। कुछ लड़के बी०ए० में थे, कुछ बी०एस०सी० में व कुछ इण्टर में थे।

वह सभी लड़कों से प्रतिमाह दस दस रुपये ले लेते थे , उसी में से लकड़ी ,सब्जी, नमक मसाला आदि आता था। पैसा कम पड़ जाने पर पुनः ले लिया जाता था। फिर दो तीन माह बाद तीस तीस रुपये जमा करने की बात तय हुई क्योंकि बीच में जमा करने में असुविधा होती थी, सबको शहर का सामान्य खर्च मालूम हो गया था, कभी-कभी दो-दो तीन-तीन लड़के बाजार में जाकर इकट्ठा सामान खरीद लाते थे ; चावल दाल आटा घी आदि सामान गांव से आ जाता था।

सभी लड़के एक परिवार की तरह प्रेम से रह रहे थे। सायं कुछ लड़के दंड बैठक करते,

तेल मालिश करते फिर मुगदर भांजते। वहीं थोड़ी दूर पर कालूराम का अखाड़ा था, दो तीन लड़के लपटन्त के लिये प्रातः उस अखाड़े में भी जाते थे। यह लपटन्त सामान्यतः दीपावली के समीप तक चलती थी।

सभी लड़के स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट थे। कुल मिलाकर एक दर्जन लड़के थे। बड़ासा मकान था, प्रातः सायं मकान भरा रहता था। हल्ला-गुल्ला बना रहता था। कोई गाता था तो कोई तेल मालिश करता था, तो कोई पढ़ता था, तो कोई सबके कमरे में जाकर यह देखता था कि कौन क्या कर रहा है। मुहल्ले में कोई इन लड़को से छेड़खानी करने की हिम्मत नहीं करता था,आस-पास पण्डो के भी मकान थे; लेकिन कोई किसी से अनुचित व्यवहार नहीं करता था।

इस लाज में गांवों से लोगों का आगमन यदा-कदा बना रहता था। कभी किसी लड़के के भाई आ गये,कभी किसी के मामा; तो कभी किसी के पिता तो कभी किसी के गांव के परिचित व्यक्ति तो कभी कोई दवा कराने आ जाता, तो कोई त्रिवेणी नहाने आ जाता, इस लाज में एक दो मेहमान भी अतरे-दूसरे दिन बने रहते। लेकिन पढ़ाई व स्वास्थ्य की ओर सबका भरपूर ध्यान बना रहता। लड़के शरीर व मस्तिष्क से भरे पूरे थे।

समयलाल ने अपने जमुना पारी साथी शत्रुहन के साथ कम्पनी गार्डेन का वह पेड़ देखा जिसकी आड़ लेकर चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेज अधिकारियों व सिपाहियों पर गोली चलाई थी। फिर वह वहीं शहीद हो गये थे ; खुशरु बाग देखा ; विश्वविद्यालय आनन्द भवन भारद्वाज आश्रम किला,लाट आदि स्थानों को देखा। साइकिल से कभी जमुना ब्रिज तो कभी झूंसी की ओर निकल जाते। पूरा शहर व आस-पास का क्षेत्र देखा। इससे उन्हें नगर व आस-पास के क्षेत्र के सम्बंध में पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो गयी, उनके ज्ञान व अनुभव में पर्याप्त बृद्धि हुई ,

समयलाल अपने स्वास्थ्य व अध्ययन के प्रति बहुत सावधान था, वह प्रतिदिन प्रातः एक खेल के मैदान में दौड़ने जाता। प्रतिदिन दो तीन किलोमीटर दौड़ता। फिर आकर साढ़े आठ बजे तक अध्ययन करता। सायं तेलमालिश करके दण्ड-बैठक लगाता, रात में दस बजे तक पढ़ता। उस लाज के लगभग सभी लड़कों की ऐसी ही दिनचर्या थी,

जब समयलाल इण्टर में ही था, तभी उसका दुरागमन हो गया था। लाज के कुछ विद्यार्थी तो पिता भी बन गये थे। लेकिन हंसी -मजाक में लाज के लड़के आपस में यह कहते-

रहते थे, कि हमें कुछ बनना है। देश के लिये कुछ करना है, चन्द्रशेखर आजाद सा भगतसिंह,सुभाषचन्द्र बोस तो हमारे आदर्श हैं ; रामहित मूछों में हाथ फेरते हुये कह "चन्द्रशेखर आजाद भी ऐसे ही मूंछों में हाथ फेरते थे, हमें भी कुछ बनना है। वह तो देश लिये कुरबान हो गये। लेकिन उनकी कुरबानी ब्यर्थ नही जायेगी। हमें भी देश के निर्माण जुटना है। पहले ज्ञान; फिर ध्यान और फिर अपने लक्ष्य के लिये लगन। फिर वह कभी-क सभी लड़कों से कहते-"सुनो ! इस लाज में रहने वाला प्रत्येक लड़का कुछ न कुछ महत्व समाज सेवा करेगा। इस बात को कभी न भूलना कि समाज के प्रति हमारे कर्त्तब्य है, सम को ही ईश्वर का रुप समझना,जनता को ही जनार्दन समझना,चाहे कोई पुलिस बिभाग इंसपेक्टर बने,या कुछ और बने, चाहे कोई राजस्व बिभाग में जाये,चाहे कोई सेना में जाये, किसी और बिभाग में जाये, क्योंकि नौकरी तो लगभग सभी करेंगे। जो जहां रहे ; वह देश जनता की ईमानदारी से सेवा करने का ही अपना लक्ष्य रखेगा। हम सब की सम्मिलित ज़िम्मे है ; अब हम देश के जिम्मेदार नागरिक हैं। ".............................................................

.....रामहित का उद्वोधन यदा-कदा अपने साथ रहने वाले छात्रों के लिये होता रहता। उस प्रभाव भी छात्रों के मानस-पटल में स्थायी रुप से पड़ता रहता।

सभी छात्रों में स्वास्थ्य और अध्ययन की होड़ लगी हुई थी। इसका परिणाम हुआ कि सब हृष्ट-पुष्ट व पढ़ाई लिखाई में बहुत अच्छे हो गये थे, उन्हें दुनियादारी से मतलब भी नहीं था, उनके सामने एक ही लक्ष्य था, हर प्रकार से सक्षम युयोग्य बनकर देश समाज के लिये कुछ करना।

X X X X

देश समाज के लिये क्या करना है, वे क्या कर सकते हैं,यह बात सम्भवतः कु लड़कों के मस्तिष्क में स्पष्ट नहीं थी। कोई कहता कि हमारे गांव के आस-पास कोई ह स्कूल नहीं हैं ; वहां एक अच्छा सा विद्यालय खुल जाता तो बहुत अच्छा होता। कोई कहता हमारे आस-पास न कोई बैद्य है न डाक्कर। अस्पताल तो तहसील मे है; जहां मरीज का पहुंच ही मुश्किल है, गांवों में भी अस्पताल होने चाहिये, समयलाल ने कहा-"गावों में बड़ी निर्धन है, पैदावार कम है, किसानों के खेत विखरे हुये है , सिंचाई के साधन नहीं हैं ,आवागमन साधन नहीं है , गाँवो का जीवन बड़ा कष्टपूर्ण है ,बरसात समाप्त होते ही घर-घर लोग बुखा

से चारपाई पकड़ लेते है। बहुत से तो महीनों पड़े रहते हैं : कुछ तो इस संसार से ही बिदा हो जाते हैं......।



अरविन्द ने कहा-" फिर दाह-संस्कार ,पिण्डदान,श्राद्ध,तेरही शुरु होती है यानी गरीबी में आटा गीला। एक तो किसान यों ही निर्धन है; फिर यदि घर में किसी की मृत्यु हो जाय, तब तो समझ लो, कि वह महाजन के ऋण में डूब गया। किसान की स्थिति तोयों ही बड़ी दयनीय है, सारी चोट उसी पर आती है ; पानी नहीं बरसा,तो फसल नहीं हुई। अतिवृष्टि हो गई, बूड़ा आ गया; तो फसल बरबाद हो गयी ; यदि कुछ पैदा भी हुआ तो खलिहान से लेकर घर तक उसकी छीना-झपटी हुई। यदि किसी तरह से पेट काटकर कुछ भविष्य के लिये ,बाल -बच्चों के लिये संग्रह भी किया और इसी बीच यदि मृत्यु ने किसी परिजन को उठा लिया तो फिर क्या पूँछना, जो कुछ घर में था,वह तो चला ही जाता है , दूसरों से ऋण लेकर भी काम करना पड़ता है शादी-विवाह के अवसर भी कभी आते ही हैं ; उसमें भी बिना ऋण लिये काम नहीं चलता है ;यानी किसान का सारा जीवन ऋण ग्रस्तता में ही कट जाता है , बिरासत में वह अपने लड़कों को भी ऋण दे जाता है ...। "

समयलाल ने कहा- "सच है ; मेरे बाबा जी की जब मृत्यु हुई थी ; तो श्राद्ध व पिण्डदान के समय महापात्र को बहुत सामान दिया गया था, मरते समय गाय की पूंछ पकड़ाई गयी थी, ताकि वैतरणी नदी पार कर सके, मेरी स्मृति में तभी से वैतरणी नदी बनी हुई है, मुझे वेदों-पुराणों को अच्छे ढंग से देखना है, कि वैतरणी नदी ,स्वर्ग व नरक के सम्वन्ध में उनमें क्या लिखा है, कहते हैं, वेद अपौरुषेय हैं, यह बात मेरी समझ में आज तक नहीं आयी है, इसके सम्बन्ध में भी मैं आचार्यो से पूंछूँगा ..ईश्वर किसी पुस्तक को लिखने क्यों आयेगा ? या वह कोई पुस्तक लिखकर क्यों धरती पर भेजेगा ? उसकी क्या गरज,यह सब करने की ? "

तभी रामहित सुनकर बोल पड़े - "स्वर्ग नरक कहीं नहीं है सुख ही स्वर्ग है, दुःख ही नरक है स्वर्ग नरक मन की कल्पनायें है ; इनका आविष्कार इसलिये किया गया है कि मनुष्य जीवन में सदाचार को अपनाये और अनैतिक कार्यों से बचे। स्वर्ग -नरक का कोई भूखण्ड नहीं है सन्त कबीर सैकड़ों वर्ष पूर्व इस सम्बन्ध में कह गये हैं :-

इतते सब कोई गये ; भार लदाय लदाय ।
उतते कोई न आइया ;जासों पुछिये धाय ॥

x x x x

अनजाने को स्वर्ग नर्क है ; हरि जाने को नाहीं ।
जेहि डर से भव लोग डरतु है; सो डर हमरे नाहीं ॥

स्वर्ग से न कोई लौटकर आया ; न किसी नें जाकर देखा है सब गोल मोल बात है, एक विचारक कवि ने कहा है -

न कोई देखा आवता ; न कोई देखा जात ।
स्वर्ग नर्क और देव की ; गोल मोल है बात ॥

जो पुरोहित -पंडित स्वर्ग -नरक की बात करते हैं ; उसमें भी सार तत्व कुछ नहीं है-

" बैठा पंडित पढ़े पुरान, विन देखे का करत बखान ।"इन सब बातों को जो विवेक सम्मत नहीं है ; कसौटी में खरी नहीं उतरती है ; उन पर बिश्वास करने का कोई अर्थ नहीं है- क्यों कपोल कल्पित बातों व किस्से कहानियों को सत्य मानें ? उनमें निहित नैतिक शिक्षा को ग्रहण करो ; वही सत्य है , आज कैसे कोई यह मान लेगा कि "बाल समय रवि भक्ष लियों ; तब तीनहु लोक भयो अँधियारो " इससे यह समझ लो कि हनुमान जी अद्भुत पराक्रमी थे, उन्होने प्रातः कालीन सूरज को फल समझकर नहीं खा लिये थे आज सभी वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि सूरज की सतह पर ग्यारह हजार फर्नहाइट से अधिक ऊष्णता है ; पृथ्वी से दस लाख गुना बड़ा है ; उससे छः हजार किलोमीटर दूर इस्पात रख दिया जाय तो वह वाष्प बनकर उड़ जायेगा, तो फिर उसे कोई कैसे भक्षण कर सकता है ? इसलिये घटना तो असत्य ही है कि सूरज को निगल गये और तीनों लोक में अधेरा छा गया। फिर यह कहना कि "हनुमान जी संजीवनी बूटी नही पहचान सके तो पूरा पहाड़ ही उखाड़ कर उठा लाये " भी अविश्वसनीय और अतार्किक है, इसका अर्थ यह है कि वह बहुत सी,ढेर सारी जड़ी बूटियां उठा लाये जो सामान्य ब्यक्ति की क्षमता की दृष्टि से अकल्पनीय है ,ऐसी ढेर सारी बातें है ; स्वर्ग-नरक वैतरणी आदि की बातें भी इन्हीं के अन्तर्गत हैं। ये बातें बिज्ञान सम्मत नहीं हैं, उन पर कोई कैसे विश्वास करेगा ? यदि कोई अतिशय श्रद्धा के कारण विश्वास भी करता है तो वह अन्धविश्वास है आज समाज में अन्धविश्वास भी खूब फैला हुआ है......"

समयलाल ने कहा- "भैया ! अन्धविश्वास दूर करना तो समाज की बहुत बड़ी सेवा होगी यह कार्य तो बहुत आवश्यक है, गांवो की निर्धनता का एक कारण तो अन्धविश्वास भी है ; लोग सदियों से बिना समझे -बूझे उनका पालन करते आ रहे हैं तब तो स्वर्ग पाने की आशा, वैतरणी -पार करने की अभिलाषा में मृत्योपरान्त जो भी कार्य किये जाते हैं ;यथा श्राद्ध, पिण्डदान ब्रह्मभोज आदि, उनके पीछे भी कोई तर्क संगत आधार नहीं है..।"

"ऐसा ही समझो समयलाल ! लेकिन इनके सम्बन्ध में लोगों को समझाना,बताना कारगर न होगा , "रामहित ने गम्भीर होकर कहा-

"क्यों ?|"समयलाल ने प्रश्न किया।

रामहित ने कहा- "यदि खेत को अच्छे ढंग से तैयार करके बीज बोया जाता है, तो बीज भी अंकुरित होता है ; फसल भी होती है, उसके खर पतवार निकालते रहने से निदाई गुड़ाई करने से फसल स्वस्थ व लाभदायक होती है। बिना भूमि तैयार किये बीज बो देने से बीज अंकुरित रहने से रहा, इसी प्रकार समयलाल, मानव मस्तिष्क की भी बात है। जब तक मस्तिष्क ऐसे विचार ग्रहण करने के लायक न हो जायें ,तब तक विचार- बीज वपन करने का कोई अर्थ न होगा। यदि आजकल से तुम यह कहना प्रारम्भ कर दो; कि स्वर्ग-नरक काल्पनिक है ; तो जनसाधारण तुम्हारी बात को अधार्मिक समझकर ठुकरा देगा, यदि तुम यह कहो कि मरते समय प्राणी को गाय की पूंछ पकड़ाना अन्ध विश्वास है; उससे वैतरणी पार नहीं होती क्योंकि वैतरणी का कहीं अस्तित्व ही नहीं है ; तो लोग तुम्हें पागल करार कर देंगे, अधार्मिक समझेंगे: नास्तिक कहेंगे..तुम जानते हो ; कि मरने के बाद प्राणी जला दिया जाता है ; उसका शरीर पंच तत्व में विलीन हो जाता है, फिर भी लोग महापात्र को बुलाकर श्राद्ध और पिण्डदान .....करवाते हैं , और ढेर सारा सामान व अन्न उसे इसलिये देते हैं ताकि वह दिवंगत प्राणी को मिल जाय ! यह कितना बड़ा अन्ध विश्वास है ! फिर यह कहना कि महापात्र के तृप्त होने पर प्राणी को सद्गति प्राप्त हो जाती है, वह तर जाता है ; यह भी कितना बड़ा असत्य है ! लेकिन जन साधारण तो वही करेगा, जो वह करता आया है, कुछ तो लोक लाज के कारण; कुछ तो संस्कार के कारण और इन सबके मूल में है घोर अज्ञानता ; अशिक्षा ।उसका मस्तिष्क इन विचारों को ग्रहण ही नहीं करेगा। पीढ़ी दर पीढ़ी से जो संस्कार उसके साथ चले आ रहे हैं ,वे उसके खून में घुल-मिल गये हैं; अचानक वह इनसे मुक्त कैसे हो सकता है ? उसके लिये समय लगेगा । उसे शिक्षित करना पड़ेगा। -

एक वातावरण बनाना पड़ेगा , क्योंकि व्यक्ति के संस्कार सहज ही नहीं बदल पाते हैं। जब इ

निर्माण में पीढ़िया लग जाती हैं , तब इनके उन्मूलन में भी दो चार पीढ़ी तो लग ही जायेंगी, है
गौतम बुद्ध जैसे...........पुरुष का अवतरण हो जाय तो सम्भवतः इतना समय न लगे.....

शेखर ने कहा-" पूरा समाज अज्ञानता के अन्धकार में तिरोहित है, समाज में अ जितना धर्म के नाम पर शोषण है ; उतना सम्भवतः अन्य किसी तरीके से नहीं है; गंगा नदी किनारे देखिये ; मन्दिरों में देखिये ; गांवों में व्रत-कथा ; हरिवंश -पुराण ,श्रीमद्भागवत् क आदि अवसरों पर कितना ब्यय होता है। उसे देखिये। लोग समझते हैं कि यह सब करने से स्व मिलेगा। देबी-देवता की पूजा करने से ; गंगा स्नान करने से; पुण्य दान करने से जीवन के प कटेंगे; यह सब भी तो अन्धविश्वास है ,लोग देवी-देवता की तो पूजा करते है ; जो निर्जीव उन्हें भोग लगाते है ; जो खाते नहीं है ; लेकिन गांव के मेहतर-चमार को छूने से परहेज करते मैं तो समझता हूँ कि ईश्वर ने यदि सृष्टि रची है; तो उसने सभी मनुष्यों की एक ही जाति बना है; उसने अपनी और से किसी को ऊँचा-नीचा; छोटा-बड़ा ,पूज्य अपूज्य ; नहीं बनाया उसने अपनी कोई चुनी हुई जाति नहीं बनाई है, न उसने किसी देश के किसी समुदाय को क पुस्तक लिखकर दी है, उसने तो मानव को बुद्धि विवेक देकर सबसे श्रेष्ठ बना दिया है व्यास ने भी कहा है-|' गुह्यं ब्रह्म तदिदं ब्रवीमि, न हि मानवाश्रेष्ठ-तरं हि किंचित' अर्थात् तुम्हें ए गुप्त बात बताता हूँ। इस दुनिया में मनुष्य से श्रेष्ठ ,मनुष्य से बढ़िया दूसरा कोई भी प्राणी न है, तो फिर किसी को श्रेष्ठ किसी को हीन क्यों समझा जाता है ? "

रामहित ने कहा- "यह सब अधिकतर हिन्दू समाज में है, हमारे प्रोफेसर डां. धीरे वर्मा जो जर्मनी ,सोबियत, संघ, ग्रेट ब्रिटेन की यात्रा कर आये है, ने कक्षा में बताया था कि भार जैसी छुआछूत की समस्या वहां नहीं है । वहां तो परस्पर सामाजिक समानता है; खान-पान कोई अन्तर नहीं है; हमने तो अपना धर्म परस्पर भेदभाव पूर्ण आचरण में सीमित कर दिया बात हम बहुत ऊंची करते हैं; आध्यात्मिकता के क्षेत्र में हम दुनिया में अपने को सर्वोप समझते हैं ; विश्वगुरु होने का दम्भ भरते हैं, लेकिन आचरण में हम उसके बिल्कुल विपरीत हैं हमारा व्यक्तिव ही फटा हुआ है- कथनी कुछ, करनी कुछ। यही तो पाखण्ड है; नहीं सोचिये; जब आत्मा परमात्मा का अंश है; सभी में आत्मा का वास है। सभी जीवित प्राणी ईश्वरांश हैं; तो छुआछूत ऊँच-नीच का व्यवहार समाज में क्यों है ? "

समयलाल ने कहा- भैया मेरी समझ में इसलिये है कि समाज में घोर अशिक्षा है ; पिछड़ापन है ; गरीबी है ; इसके अतिरिक्त ; सामाजिक व्यवस्था भी इसके लिये जिम्मेदार है , हिन्दू- समाज का वर्ग बिभाजन जो कभी सामाजिक प्रगति का सोपान था , आर्थिक आध्यात्मिक उत्थान का आधार था ; उन दिनों जातियां कर्मज थी ; यानी कर्म के आधार पर थीं। खान-पान शादी-विवाह में बन्धन नहीं था। लेकिन जब जातियां जन्मज हो गई , यानी जन्म के आधार पर बन गई , और उसे पुष्ट करने के लिये पुराणों की, धर्मग्रन्थों की स्मृतियों की रचनायें हुईं ; कथाओं की सृष्टि हुई तो जातियां प्रस्तरीकृत हो गई। उनके ऊपर अनेक बन्धन लग गये। उन्हें कूपमण्डूक बनाये जाने के लिये सामाजिक मर्यादायें लगा दी गईं ,उनके उल्लंघन पर कठोर दण्ड की व्यवस्था की गई। खुलापन को रोका गया। उनके चारों तरफ बाड़ा बनाया गया। सामाजिक कानूनों की दीवालें खड़ी की गई। इन सबका परिणाम यह हुआ कि पूरा हिन्दू समाज मुरदा हो गया ; देश का पतन प्रारम्भ हुआ,अकल्पनीय पराभव हुआ,देश सैकड़ों वर्षो तक परतन्त्र रहा। गुलाम रहा। इसका भरपूर शोषण हुआ, मानसिक भी आर्थिक ,भी , सामाजिक भी; राजनैतिक भी। लोगों को मूक पशु बना दिया गया। उन्हें पशु से भी हीन समझा गया, उनका तरह-तरह से शोषण किया गया। आज भी गांवों में यह हो रहा है , बदलाव तो आयेगा ही, जब राजनैतिक व्यवस्था बदल गयी ; देश का संविधान बदल गया, तो सामाजिक व्यवस्था भी बदलेगी ही ; लेकिन उसके बदलाव में बहुत समय लगेगा, संतोष तो इस बात से है ही,कि परिवर्तन की शुरुआत हो गयी है। जो एक शुभ संकेत है, नहीं तो हमारे ही गांव में जब बिहारी चर्मकार का लड़का गुरुआना में जाने लगा था तो कालीचरण वाजपेयी ने ब्यंग करते हुये कहा था ,कलुआ से फिरंगी सरकार की नौकरी करायेगा बिहारी ; अव वह गांव में किसी का हल न जोतेगा ,वह यह नहीं जानता कि 'पढ़े-लिखे से कुछ न होई, हल जोते से बेर्रा होई, ' गांव के बड़े लोग चाहते ही नहीं थे कि गांव के निम्न समझे जाने वाले लोगों के बच्चे पढ़ना-लिखना सीखें। वे तो उन्हें और दस फीट नीचे गाड़ देने की मानसिकता रखते थे , आज भी लोग इस मानसिकता से नहीं उबर सके हैं इसीलिये तो पूरा हिन्दू समाज जड़ता का शिकार बन गया, वह आत्म गौरव के गान मेंही मस्त रहा, बाहर क्या हो रहा है ; उसका अपने भाइयों से सम्बन्ध कैसा है, उसमें सुधार की क्या कोई आवश्यकता है, इस पर कभी सोचा ही नहीं। उसकी दृष्टि ही नहीं गई जब समाज का नेतृत्व करने वाला वर्ग आत्मसंतुष्ट हो जाय, आत्मश्लाघा में अपनी मेघा को लगा दे;-

बाकी लोगों की ओर से आंखें मूँद लें, उन्हें भेड़- बकरी समझ ले, उनसे पशु तुल्य व्यवहार करे

तो फिर समाज कहाँ जायेगा ? रसातल में तो जायेगा ही। हमें इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता है ;..यदि इस दिशा में कुछ किया जा सका तो वह समाज की एक प्रशंसनीय सेवा होगी।"

रामहित ने समझाते हुये कहा- "ठीक है समयलाल ! हम जैसे नवयुवक यदि इस कार्य में लग जायॅ तो समाज को बदलकर रख सकते हैं , मैं यह समझता हूँ कि यह कोई सरल कार्य नहीं है; हिमालय पहाड़ जैसे उठाना है , लेकिन जब कोई व्यक्ति संकल्प के साथ ईश्वर पर पूरी श्रद्धा रखते हुये लग जाता हे तो फिर वह इस कार्य में अकेला नहीं रहता। ढेर सारे लोग उससे आकर जुड़ते जाते है; क्योंकि ईश्वर भी चाहता है कि उसकी सृष्टि में सभी प्राणी प्रसन्न रहें,सुखी रहें। **"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामया,सर्वे भद्राणिपश्यन्तुमा कश्चिद् दु:ख भागभवेत्"** यह ऋषि वाणी है ; 'ऋषिः स यो मनुर्हितः' यानी ऋषि वह है जो दूसरों का हित चाहता है ; दूसरों का भला चाहता है' गौतम बुद्ध को देख लो। उन्होंने समाज में समानता लाने , छुआछूत को न मानने ; का अभियान चलाया। प्रारम्भ में उनके वही पांच शिष्य थे जो उनको कभी भ्रष्ट हो जाने की बात समझकर त्याग दिये थे ; फिर उनके पीछे लोगों की संख्या बढ़ती गयी। धीरे-धीरे उनके अनुयायी असंख्य लोग हो गये। फिर उनका बुद्ध-धर्म भारत की सीमा लांघ गया। दूसरे देशों में फैल गया, देश के देश बुद्ध धर्म के अनुयायी हो गये, इसलिये कि वह मानवीय था, मनुष्य को समान समझा गया था; उसके साथ समानता का ब्यवहार समझा गया था।उनकी शिक्षा थी - सम्यक दृष्टि ,सम्यक् आचरण समतापूर्ण व्यवहार, अहिंसा, करुणा दया; केवल मनुष्य के प्रति ही नहीं, समस्त प्राणी जगत के साथ। उन्होंने अपनी शिक्षा आचरण से दी। उसका इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि झुण्ड के झुण्ड लोग उनके अनुयायी बन गये, वर्तमान समय में गांधी जी को देख लीजिये, जब वह देश की आजादी के लिये समर-भूमि में उतरे तो अकेले थे, फिर उनके पीछे लोग लगते गये। धींरे-धींरे सारा देश उनके पीछे हो गया, लोग पहले कहते थे कि कपड़ा यानी झण्डा हिलाने से राज्य नहीं मिल जायेगा, ऐसा मानव इतिहास में कभी देखा-सुना नहीं गया है लेकिन बाद में ऐसा हो भी गया। देश आजाद हुआ, अंग्रेज हट गये राजाओं के राज्य छूट गयें। जमीन्दारो की जमीन्दारी छूट गयी। इन सारी बातों की लोग बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व कल्पना भी नहीं करते थे ,इसी प्रकार सामाजिक परिवर्तन का चक्र भी हिल गया है, लेकिन यह-

बस कहने से नहीं करने से होगा चक्र तो घूमेगा ही.... "



समयलाल ने कहा- "ठीक कह रहे हो भैया ; हमें स्वयं ऐसा आचरण करना चाहिये। हमें अपने सामाजिक जीवन में अस्पृश्यता की तिलान्जलि दे देनी चाहिये। शिक्षा का प्रसार करना- चाहिये, क्योकि "नान्य पन्था विद्यते अयनाय" यानी शिक्षा के अलावा दूसरा कोई रास्ता नही है। शिक्षा सभी सुधारों की जड़ है, लेकिन मानसिक दासता बढ़ाने वाली शिक्षा नहीं ऐसी शिक्षा जो लोगों में जागृति ला सके, उनके संस्कार परिष्कृत कर सके ; उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सके ; युगानुसार चलने की शक्ति और साहस दे सके, ज्ञान वृद्धि कर सकें ; आत्म सम्मान की भावना भर सके। मै तो अपने क्षेत्र में ही नहीं अन्य क्षेत्रों में भी अधिक से अधिक संस्थायें खुलवाने का भरसक प्रयास करुंगा। निःसन्तान दम्पत्ति को स्कूल खुलवाने को प्रेरित करूँगा,"

समयलाल की बात को सुनकर रामहित प्रसन्न हुये। अरविन्द शेखर ; बसन्त ,शत्रुहन, प्रताप, रामकुमार, रामसनेही आदि लड़के भी ध्यान से सुनते रहे,....रामकुमार बोल पड़े- "मेरी समझ में लड़को से अधिक लड़कियों की शिक्षा आवश्यक है, क्योंकि बच्चे की प्रथम गुरु मां ही है, यदि मां सुशिक्षित है; जागृत है : तो वह अपने बच्चे में सद् संस्कारों का निर्माण कर सकती है नेपोलियन कहा करता था। मुझे सौ अच्छी मातायें दो तो मैं तुम्हें एक राष्ट्र दूंगा। [**Give me one hundred good mothers and i will give you a nation.**] मातायें बच्चों का व्यक्तिव ढालती है ; उसका निर्माण करती है ; फिर बच्चे अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार राष्ट्र का निर्माण करते हैं अच्छी संस्कारवान् मातायें बच्चे,ही राष्ट्र की सम्पन्ति है 'जिस देश के नागरिक ईमानदार होंगे ; संस्कारवान् व आचरण वान् होगे ; परिश्रमी होगे ; राष्ट्रभक्त होंगे, वह देश समुन्नत होगा; स्वतंत्र होगा। राष्ट्र की सच्ची निधि तो यही नागरिक हैं ऐसे ही नागरिक राष्ट्र को ऊपर उठाते हैं, यही देश की शक्ति हैं,..... "

रामकुमार की बात से सहमत होते हुये रामहित ने कहा- "हमें सर्वप्रथम अपनी पत्नियों को सुशिक्षित करना चाहिये। इसमें शर्म संकोच की कोई बात नहीं है। पर्दा प्रथा उनके विकास में बहुत बड़ी बाधा है , उसे भी हटाने का प्रयास किया जाना चाहिये। कहते हैं ,"चैरिटी बिगिन्स एट होम" यानी ये सारे सुधार अपने घरों से ही प्रारम्भ होने चाहिये। हम दूसरों से जो करने के लिये कहें, पहले उसे स्वयं करें। नया काम देखकर या प्रथा के विरुद्ध आचरण देखकर-

लोग टीका टिप्पणी भी करेंगे। लेकिन कौन क्या कहता है; इसकी ओर ध्यान देने की आवश्यक बिल्कुल नहीं है।जो तुम्हें करना है जो करने के लिये तुमने ठान लिया है; उसी में तुम प्राणप्रण जुट जाओ। निश्चय ही तुम कुछ करके दिखा दोगे, यह सब समाज सेवा के अंग ही हैं क्यों समाज बहुत बिस्तृत है; बहुत बिशाल है; उसका स्वरुप बहुत विराट् है; इसलिये समाज कोई एक क्षेत्र चुनकर उसी में लग जाओं। शिक्षा प्रसार का ही कार्य इतना विशाल है कि जित करो, उतना ही कम है। लेकिन कार्य की विशालता देखकर घबड़ाने या चुप होकर बैठने आवश्यकता नही है। समाज -निर्माण का कोई भी कार्य कम महत्व का नहीं होता है, त अरविन्द के गांव से एक व्यक्ति ने आकर बताया- "दादू! तुम्हारे बाबा की तबियत ठीक चल रही है, किसी दवा से कोई लाभ भी नहीं हो रहा है, मैं आ रहा था, तभी तुम्हारे पिता जी यह संदेश तुमको देने के लिये कहा। समय हो, तो बाबा जी के दर्शन कर आओ, अन्तिम स है कितने दिन तक रह जाये; कोई भरोसा नहीं हैं पता नहीं कब उनकी सांस टूट जाय..."

अरविन्द के बाबा उसे बहुत प्यार करते थे, बाबा के स्नेह और लाड़-प्यार भरी सारी स्मृतियां उसके मानस पटल में रील की तरह धूम गयीं, उसका चेहरा उदास हो गया,

समयलाल ने उसे समझाते हुये कहा- "तुम अभी तैयारी बनाकर चले जाओ बिल्कुल न करो, बाबा जी का अन्तिम समय है; वह तुम्हें देखने को उत्सुक होंगे..."

बातचीत का सिलसिला बदल गया, अरविन्द घर जाने की तैयारी करने लगा।

****

# (पांच)



अरविन्द बाइसवें दिन घर से वापस आया। आने पर उसने बताया कि उसके पहुँचने के दूसरे दिन उसके बाबा का अवसान हो गया, उसने कहा- मुझे ऐसा लगा कि बाबा मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे - बाबा ने देखकर कहा था, 'नाती! अच्छा हुआ तुम आ गये, मेरा अन्तिम समय है तुम मन लगाकर पढ़ाई करना ,पढ़ाई में शिथिलता न बरतना....' मैं उनकी सेवा में एक दिन रहा, बीच-बीच में वह अचेतावस्था में हो जाते थे, दूसरे दिन सूर्योदय के पूर्व उनका अवसान हो गया, उनके अगल-बगल मेरे पिता जी ,भैया कोई न कोई चौबीसो घंटे बने रहते रहे, दाह-संस्कार और तेरही आदि समस्त अन्तिम -संस्कार हो जाने के बाद आया हूँ -

समयलाल ने पूँछा-"क्या बाबा जी को गाय की पूँछ मरते समय पकड़ाई गई थी ? क्या महापात्र दसवें दिन श्राद्ध- पिण्डदान के लिये आये थे ? तेरही हुई ?

अरविन्द ने बताया कि यह तो सब जगह होता है, ऐसा कोई हिन्दू परिवार न होगा जहां यह सब न किया जाता हो , न चाहते हुये भी यह सब करना पड़ता है, इस क्रिया कर्म में घर का बड़ा धन चला गया, मेरी इलाहाबाद की दो तीन साल की पढ़ाई में जितना खर्च होता, उससे कम खर्च नहीं हुआ, बाबा जी के अन्तिम क्रिया कर्म में ,

समयलाल ने पूँछा- "अरविन्द! क्या तुमने भी इस अन्तिम क्रिया कर्म के सम्बन्ध में गहराई से सोचा है ? क्या प्राणी मरने के बाद हमारी तुम्हारी तरह नदी में तैरता होगा ? क्या नदी पार करते समय उसे गाय सहायता देती होगी ? क्या महापात्र को दिया गया धन व वस्तुयें मृतक प्राणी के उपयोग में आती होंगी ? ब्राह्मणभोज तेरही से दिवंगत का क्या सम्बन्ध रहता है? मुझे इन सबमें कोई सार नही दिखाई पड़ता है ; यह सब क्रिया-कर्म एक स्थापित रुढ़ि बन गयी है, इसी को धर्म का अंग मान लिया गया है , इसके पीछे तो मानसिक दासत्व व धार्मिक शोषण के अलावा मुझे कुछ भी नहीं प्रतीत होता है .. तुम्हारा क्या विचार है ? "

इस अवसर पर लाज के तीन चार लड़के और आ गये थे वे भी सुन रहे थे, अरविन्द के बोलने के पूर्व ही रतीभान बोल पड़ा- "इसके पीछे कोई सार तत्व नहीं है ,मृतक संस्कारों से हमारे गांव के महापात्र का बढ़िया खर्च चलता है , हर वर्ष वह तीन चार गायें बेंच लेते हैं :अन्न खरीदते नहीं है, घर की एक कोठरी में थाली लोटा आदि बर्तन भरे पड़े हैं , अच्छे पलंग भी वह -

चुपचाप दुसरों को दे देते है, खेती वह करते नहीं है ; जो थोड़ी बहुत जमीन है, उसे वह दूसरे को बंटाई मे दिये हुये हैं, उनका तो कथन है कि हमारा धन्धा ही हमारी खेती है . यानी हमारे यजमान ही हमारे खेत-खलिहान हैं......"

अरविन्द ने कहा- "हमारे विचार से स्वर्ग -नरक तो कहीं है नहीं ,इसी जीवन में व्यक्ति अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग नरक भोग लेता है, यदि वह स्वस्थ है ; घर में सम्पन्नता है। सभी सुखी है ; तो समझ लो कि वह स्वर्ग में ही है, क्योंकि स्वर्ग में भी तो सुख की ही कल्पना की गई है। यदि इसी जीवन में कष्ट ही कष्ट है ; घर के प्राणी दुःख-दारिद्रय में है ; घर में कलह है विवाद होता रहता है तो वह साक्षात् नरक ही है- वैतरणी नदी का अस्तित्व भी कल्पना लोक ही है ; मरते समय वैतरणी पार कराने के लिये गाय की पूंछ पकड़ायी जाती है ; मुँह में गंगाजल व सोना डाला जाता है ; फिर दसवें दिन महापात्र सूतक को समाप्त करने के लिये पूजापाठ कराता है ; दान दक्षिणा लेता है ; मृतक को तारने के नाम पर ढेर सारी गृहस्थी में उपयोग आने वाली वस्तुवें व पहनने के सभी नयें वस्त्र लेता है ; प्राणी के साल भर के खाने के लिये अन्न लेता है ,फिर तेरहवें दिन ब्रह्मभोज होता है , कोई -कोई इसी बीच गरुण पुराण भी सुनता है जिसके प्रथम अध्याय में ही दान-दक्षिणा का माहात्म्य है ; इन सब बातों पर ध्यान से विचार किया जाय तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह भी कुछ लोगों का धन्धा है ; उनकी खेती है , इससे उनके परिवार का पालन-पोषण होता है; और जिसके घर का प्राणी चला जाता है ।उसके परिजनों को ऐसे कृत्य में उलझा दिया जाता है कि उनका ध्यान दिवंगत प्राणी की ओर से हटकर क्रिया-कर्म में लग जाता है, इससे शोक जन्य व्यथा कम हो जाती है।.. "

रतीभान ने कहा-" मैं ने बताया न; कि यह उन लोगों की खेती है ; बिना शारीरिक श्रम व मानसिक चिन्ता के उन्हें सब कुछ मिल जाता है। लेकिन अब उनकी खेती में भव-बाधा आने लगी है ,हमारे पड़ोस गांव में एक व्यक्ति मरा, उसे यमुना जी में सेरा आये, न उसने कोई क्रिया- कर्म किया न , ब्रह्मभोज ही किया, छठवें दिन अपने परिवार व नात-रिश्तेदारों को बुलाकर छोटा सा भण्डारा कर दिया, सबको खिला-पिला दिया, इससे समाज में उसकी बड़ी चर्चा होती रही कि उसने अपने बाप का श्राद्ध पिण्डदान नहीं किया लेकिन उसने कहा जिसको जो कहना है कहे; मैं तो वही करुंगा जिसे मेरी बुद्धि-विवेक उचित समझती है ,दुनिया को जो कुछ कहना है ; कहती रहे। उसके कहने से मेरे ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वह एक छोटा

किसान है ; अधिक पढ़ा-लिखा भी नहीं है , उसने बड़ी हिम्मत की ,क्योंकि परम्परा के विरुद्ध जाने के लिये बड़े साहस की आवश्यकता होती है , सामान्य व्यक्ति तो ऐसा कर ही नहीं सकता।..."

शेखर बोल पड़ा- "लीक-लीक गाड़ी चले ,लीकहिं चलें कपूत, लीक छोड़ तीनों चले; सायर, सिंह ,सपूत," वह भले ही अनपढ़ हो; या कुछ पढ़ा लिखा हो, लेकिन वह तो हम लोगों से बहुत आगे है ;बहुत साहसी है। बताइये ! कब से पढ़ते आ रहे हो, जानते हो; कि पर्दा-प्रथा अच्छी नहीं है ; फिर भी उसे मानते हो ; जानते हो कि सभी मानव समान है ; जातियां यहीं की बनाई हुई हैं ; ईश्वर की कोई चुनी हुई जाति नहीं है ; फिर भी तुम मेहतर को नहीं छूते हो। एक मुसलमान को अपने चौके में बुलाकर नहीं खिला सकते हो ; है हिम्मत इस रुढ़ि को तोड़ने की ? लेकिन जो सायर है ; सिंह है , सपूत है, उसके सामने ये बन्धन ठहर नहीं सकते। वह बन्धनों के प्रतिबन्ध से ऊपर है। देख लो गौतम बुद्ध को , उनकी यह शिक्षा **'अप्पदीपोभव'** यानी तुम अपने दीपक स्वयं बनों किसी के पीछे मत जाओ, सपूत बनने के लिये ही है , किसी परम्परा का आंख मूँदकर न पालन करने के लिये ही है।उस ब्यक्ति ने परम्परा से चले आ रहे क्रिया-कर्म का अनुसरण न करके अपने विवेक से काम किया,अपना दीपक स्वयं बना,आज लोग भले ही उसकी आलोचना करते हो, लेकिन उसने असंख्य लोगों को रास्ता दिखा दिया है ; उनकी आँख खोल दी है ; ऐसे ही ब्यक्ति नरपुङ्गव कहलाते हैं।

शेखर की बातं को सुनकर सभी लोगों ने कहा- आप ठीक कहते हैं , जन सामान्य तो कोल्हू के बैल की तरह आंख में पट्टी बांधे सारा जीवन बिता देता है ; अपनी आंख , विवेक-बुद्धि का उपयोग नहीं करता है,

रतीमान ने कहा- "यारो ! सभी परम्परायें समयानुसार सुधार चाहती हैं ; लेकिन सभी बुरी नहीं है, उनमें अच्छाइयां भी है ; ये समाज की रहनुमाई के लिये हैं , जिनमें सोचने समझने की क्षमता नहीं हैं , उनके लिये मार्गदर्शक हैं ; सभी की बुराई न करो......."

शेखर ने टोकते हुये कहा- "सबकी बुराई कहॉ की जा रही है ? यहां तो श्राद्ध पिण्डदान और मृत्युभोज की बात चल रही है, उसकी सार्थकता कहां तक है ? मृत्युभोज कहां तक उचित है, आदि बातों को लेकर चर्चा शुरु हो गयी थी।

उसी पर सब लोग अपनी-अपनी प्रतिक्रियायें व्यक्त कर रहे थे, अच्छा समाप्त करो; यह प्रकरण, यह तो बताओ अरविन्द ! अब तो घर नही जाओगे। "माह डेढ़ माह बाद जाऊंगा घर जाने से पढ़ाई का बहुत नुकसान होता है, कोर्स भी पिछड़ गया है : यदि घर मे कोई आवश्यक कार्य न हुआ, पिता जी का बुलौवा न आया तो एक दो दिन के लिये राशन लेने महीने डेढ़ महीने में जाऊंगा"

"ठीक है ; फिर बताऊंगा "शेखर ने कहा-

X X X X

परीक्षाओं के बाद जब समयलाल घर आया तो देखा कि घर में बँटवारा हो रहा था परिवार में छोटे बड़े सब मिलाकर लगभग पैंसठ सत्तर प्राणी हो गये थे ; नवयुवकों में कई कारण से वर्षो से असन्तोष बना हुआ था, घर के मालिक परिवार की व्यवस्था बनाये रखने में कठिनाई महसूस करने लगे थे, हर नवयुवक और उसकी पत्नी अधिक स्वतंत्रता चाह रहे थे; रुपये पैसे कमाने के लिये धंधों की तलाश में इधर-उधर भी जाते रहते थे, मालिक से अपने खर्चो के लिये निरन्तर मांग करते रहते थे ; घर के दो नवयुवक रोजगार-धंधे की तलाश में घर से बाहर चले गये थे ; गृह-कार्यो में नवयुवक अरुचि दिखाने लगे थे ,गॉव के कुछ श्रमिक मजदूरों के लड़के शहर भग गये थे, इसलिये पहले की तरह घर में मजदूर भी नहीं रह गये थे ;घर के नवयुवक काम से जी चुराने लगे थे, औरतें घर के अन्दर छोटी-छोटी बातों को लेकर यदा-कदा चिल्ल-पों मचाती रहती थीं परिवार में अनुशासन ढीला पड़ गया था ;

मालिक ने महसूस किया कि अब परिवार चलने की स्थिति में नहीं है घर बांध के कुतिया शिकार नहीं करती हैं , इसलिये मालिक ने परिवार के अन्य सयाने लोगों से विचार-विमर्श करके बॅटवारा कर देने का निर्णय कर लिया था उसी का परिणाम था कि बंटवारा प्रारम्भ हो गया था,

घर में बैठे-बैठे सभी जमीनों और बगीचों का फॉट किया गया। फिर गोट्टी डाली गयी पटवारी और सेक्रेटरी को भी बुला लिया गया था, उनकी सहायता से बगीचों में जा-जाकर जंजीरों से नापकर चिन्ह बनाया गया, चारों हिस्सेदारों को मौके पर बताया गया कि यह अमुक व्यक्ति का हिस्सा है, यह अमुक व्यक्ति का है,खेतों में फसल खड़ी थी,उनमें तरफ तो पड़ गया था, कि उधर अमुक व्यक्ति का है; उसके बाद अमुक का है लेकिन जरीब से नापकर चिन्ह नहीं

लगाया जा सका था, कुछ जमीनें बिना नाप के क्षेत्र के आधार पर बाँट ली गई थी ; चूँकि जमीन पाँच गावों में फैली हुई थी, जमीन्दारी टूटने के बाद इन गांवों में उनकी जमीनें थी ; इसलिये बंटवारा बहुत सरल नहीं था ; फिर भी घर के सयाने बिवाद की स्थिति को बचाते हुये बंटवारा में लगे थे ;

घर का बंटवारा पहले ही कर लिया गया था, घर के अन्दर का सामान भाड़े- बरतन सोना चॉदी नगदी रुपयों का बंटवारा मालिक,महावीर, रामभवन और शिवराज आपस में एकान्त में बैठकर कर लिया था घर का अन्य कोई सदस्य उस समय उपस्थित नहीं था, किसी को बंटवारा स्थल में जाने की अनुमति भी नहीं थी, चारो ने एक कमरे में बैठकर बंटवारा किया था, जहां-जहां सोना चांदी गड़ा था, उसको खोदकर बाहर किया गया। तिजोड़ी और बड़ी-बड़ी सन्दूकों में जो धन रखा हुआ था जिनकी चाभियां हमेंशा मालिक के पास रहती थी, जिन्हें घर के नवयुवक आज तक नहीं जान पाये थे, कि उनमें क्या रखा है , जो रखा भी है, वह कितना है; वह सब मालिक ने अपने अन्य तीनों हिस्सेदारों के सामने निकाला,

चांदी के रुपयों से एक बाक्स भरा हुआ था। गिनकर बाँटने में असुविधा थी इसलिये उसका बंटवारा तौलकर किया गया। हर हिस्सेदार को चालीस-चालीस सेर सिक्के मिले-पन्द्रह पन्द्रह सेर चाँदी का सामान मिला।चॉदी के सामान में घोड़ों का साज, बारात में जाने वाले सामानों का साज चॅवर , चॉदी के दण्ड आदि बहुत सामग्री थी।चॉदी के सामानों व रुपयों के बॅटवारे में ही एक सप्ताह लग गया था, क्योंकि बॅटवारा की जाने-वाली वस्तुओं को पहले एकत्रित किया जाता था यदि कोई सामान बाहर होता ,तो दसे मंगाया जाता, फिर चारों हिस्सेदार उसे देखते ; आपस में बिचार-बिमर्श करते, कि इनका बॅटवारा कैसे किया जाय। आपस में सहमत होने पर उसके चार हिस्से किये जाते,फिर गोट्टी पड़ती।कोई जल्दी थी नही। बहुत सोच विचार कर बॅटवारा किया जा रहा था ताकि कल को किसी को शिकायत न रहे।

अन्त में जब सोना के बंटवारे का मामला आया तो सभी साझे का सोना इकत्रित किया गया, औरतों के पास जेवर के रुप में जो सोना चॉदी था,उसका कोई हिस्सा न किये जाने की बात पहले ही तय कर ली गई थी, जो सम्पत्ति मालिक के पास घर की थी ; संयुक्त सम्पत्ति थी; उसी का बंटवारा था, जब सभी मोहरें , गिन्नियां और सोने के जेवरात जो बारात के समय, शादी-विवाह के अवसर पर निकाले जाते थे,उनको एकत्रित किया गया,फिर उस स्वर्णकार -

को चुपचाप बुलाया गया जो उनका विश्वस्त था, जिससे वह सोना खरीदते थे। वैवाहि अवसरों पर जिससे वह आभूषण बनवाया करते थे, उसे सूचित कर दिया गया था कि अपना काँटा-बाँट लेकर आ जाय।

मालिक के संदेश के अनुसार वह अपना काँटा-बाट लेकर आया। उसे कमरे के अ ले जाया गया। फिर उससे चार भाग करने को कहा गया। मोहरों का वजन कराया गया। आपस में बिचार बिमर्श करके उन्हें तौलाकर चार भाग किया गया, फिर गोट्टी डाली ग सबको अपने-अपने हिस्से में लगभग तीन-तीन सेर सोना मिला था।

ढेर सारी वस्तुयें घर में और थी। यथा बन्दूक नालकी, रब्बे, फुटकर सामान, ट्रै आदि, जिनका बंटवारा करते नहीं बनता था। उन्हें साझे में ही रखने का निर्णय लिया गया। कु बगीचे और जमीन ऐसी भी थी; जिनमें कुछ ही लोगों के नाम थे। अतः उनमें अन्य लोगों नाम जुड़वाने की कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया। सब कुछ बंट जाने व आपसी सहम से निर्णय ले लिये जाने के बाद भी नवयुवकों में कुछ असंतोष बना रहा।

समयलाल ने अनुभव किया कि घर में पहले जैसा वातावरण नही है, चार जगह भो बन रहा है, सबके घरों के सामने उनके बैल भैंसे बँधी हैं। सब अपनी अपनी व्यवस्था में लगे यह देखकर उसे कुछ पीड़ा हुई। लेकिन वह सबसे पूर्ववत् मिलता; उन्हें वैसा ही आदर सम देता लेकिन उसने महसूस किया कि बँटवारा के बाद सभी लोग अत्यधिक ब्यस्त हो गये सब अपनी-अपनी ब्यवस्था में प्राणपण से जुटे है। किसी के पास बैठने का समय नहीं सभी अपनी ब्यवस्था को अच्छी बनाने की चिन्ता में है। सभी अपनी अपनी प्रगति के लि योजनायें बना रहे हैं।

++++++

समयलाल के बड़े भाई का नाम जगदीश था, पिता 'मालिक साहब 'सयाने हो गये थे, उनकी अवस्था सत्तर बहत्तर की हो गयी थी ; जब तक वह स्वस्थ व नवयुवक रहे ; परिवार को अनुशासन में बांधे रहे, लेकिन ज्यों-ज्यों वह सयाने होते गये, परिवार के सदस्यों पर उनका शासन ढीला होता गया, नौकरों पर नियंत्रण ढीला हो गया, धीरे- धीरे ऐसी स्थिति आ गई कि बँटवारा कर देना ही उपयुक्त समझा गया, क्योंकि जबरदस्ती एक सूत्र में बांधे रहने का अर्थ दिनोंदिन अव्यवस्था और अवनति की स्थिति ही निर्मित करनी थी, बॅटवारा तो कभी का हो जाता , दसों वर्ष पूर्व हो जाता लेकिन मालिक साहब के कठोर नियंत्रण के कारण अब तक किसी प्रकार चलता रहा , लेकिन अब उनके कमजोर हो जाने पर सब गड़बड़ा गया। आगे चलने की स्थिति बिल्कुल न रह गयी। बटवारा ही सबके संतोष का समाधान था, क्योंकि कोई अन्य उपाय शेष न रह गया था। एक दो व्यक्तियों का अलग भोजन दो तीन वर्ष पहले से ही बनने लगा था। लोग खींचातानी मचाये थे। ऐसी स्थिति में किसको-किसको समझाया जाता ? कोई सुनने को भी तैयार नहीं था। कुछ नवयुवक मनमानी करने लगे थे। मालिक ने भी हथियार डाल दिये थे। बॅटवारा उनकी दृष्टि में भी जरुरी हो गया था ।

मई जून में शादियाँ बहुत थीं , पहले जहाँ निमंत्रण पत्र महावीर दादा के नाम आते थे, वहाँ अब चार व्यक्तियों के नाम आने लगे। क्योंकि संयुक्त परिवार विखरकर चार भागों में बॅट चुका था। नात-रिश्तेदारी में भी परिवार के विखण्डन की जानकारी हो गयी थी, अब नात-रिश्तेदारों का भी बँटवारा होने लगा,जिसका जिससे सम्बन्ध होता, वह उसी के यहां भोजन करता ; रात व्यतीत करता। मिलने के लिये तो वह सभी से मिलता ; सबके पास समय निकालकर बैठता , लेकिन उसका आन्तरिक प्रेम लगाव अपने सगे रिश्तेदार के परिवार के साथ ही रहता। नात- रिश्ते भी सामान्यत: एक ही दो पीढ़ी तक चलते हैं। पुराने सम्बन्ध कोई कोई चलते हैं , नये सम्बन्धों में ससुराल सढ्ढुवान , मामा, फुफू ,जीजा के सम्बन्ध ही प्रमुख हैं इन रिश्तों वाला कोई आता तो वह सिमटकर उसी परिवार में रह जाता,जिस परिवार से उसका रिश्ता होता।

फसलों की धुरचट कटाई शुरु थी। जगदीश को बाहर जाने की फुरसत नहीं थी जगदीश के दोनों लड़के छोटे थे, वे बाहर जाने लायक नहीं थे,अत: बाहर से आये निमंत्रणों को पूरा करने का भार समयलाल के ऊपर पड़ा।समयलाल अपनी साइकल भी छुट्टी मे लेता आया था, -

अतः उसे बाहर निमंत्रणों में जाने में कोई कठिनाई नहीं थी।

समयलाल क्षेत्र में पहली बार स्वतंत्रतापूर्वक घूमा। वह साइकिल से जमुनापार अपने मित्र अरविन्द के गांव गया। रामहित के छोटे भाई की शादी में भी गया। उसे इसी बहाने अनेक गांवों व पूरा क्षेत्र देखने का अवसर मिला। उसने अनुभव किया कि क्षेत्र में समस्यायें ही समस्यायें है।स्कूलों की संख्या नगण्य है।अन्धविश्वास ; मूढ़ परम्परायें , सामाजिक कुरीतियां गरीबी, बेरोजगारी,अशिक्षा ,अज्ञानता, अन्याय , पारस्परिक बिवाद पूरे सामाजिक जीवन को क्षत-विक्षत किये हुये है। लोगों के जीवन में सुख शान्ति नहीं है। हर व्यक्ति अपनी तथा घरेलू समस्याओं से पीड़ित है, यदि नहीं ; तो पारिवारिक कलह व ईर्ष्या- द्वेष तथा आपसी झीना-झपटी से परेशान है, मानसिक सुख-शान्ति किसी को नहीं है उनके चेहरों पर जो प्रसन्नता या मुस्कराहट यदा- कदा दिख जाती है, वह बहुत क्षणिक होती है , कभी- कभी तो बनावटी व ऊपरी होती है, अन्दर तो बेदना का सागर लहरा रहा होता है,

व्यक्तियों का जीवन अत्यन्त कष्ट पूर्ण है, कोई एक ही कष्ट नहीं ; बिविध कष्टां फिर भी लोग शिकवा-शिकायत के साथ जीवन काट रहे हैं, इस जीवन की दंशकारी पीड़ाओं से घायल व क्षत विक्षत मन की ही कल्पना सम्भवतः स्वर्ग है जहां हर प्रकार का सुख है ; दंशकारी पीड़ाओं से मुक्ति है- अभावों से मुक्ति है क्योंकि वर्तमान जीवन में अभाव ही अभाव है कभी आवास का तो कभी अच्छे पड़ोसी का ; तो कभी धन का तो कभी अच्छे भोजन का; तो कभी अच्छे मित्र का तो कभी अच्छी संगति का तो कभी अन्न का। मन की शान्ति का अभाव तो हमेशा ही बना रहता है,किसी के मन के अन्दर घुसकर देखो तो वहां अभावों की पीड़ा की ज्वाला प्रज्वलित दिखाई पड़ती है, किसी को सुख शान्ति नहीं है।इस जीवन में कभी किसी की कामना पूरी भी नहीं हुई ,चुँकि कुछ कामनायें न्याय संगत होती भी नहीं, फिर उनकी कोई सीमा भी नहीं है, तो पूर्ण होने का प्रश्न भी नहीं उठता है।

स्वर्ग में किसी प्रकार का अभाव नहीं है , सभी प्रकार की कामनायें कल्पवृक्ष व कामधेनु तत्काल पूरी कर देतें है; इसलिये उसके प्रति आकर्षण बना रहता है; उसे प्राप्त करने के लोभ में लोग इस जीवन में वह सब आँख मूँदकर करते हैं जो करने को उनसे कहा जाता है लोग उस पर न तो गहराई से सोचते है , न अपने बिवेक का प्रयोग करते है, वे भेड़ की तरह एक दूसरे के पीछे चले जा रहे है , सारा संसार ऐसा ही चलता हुआ दिखाई पड़ रहा है।

समयलाल लोगों के बीच में सदा-कदा बात छिड़ने पर अन्ध विश्वासों के सम्बन्ध में अपनी बात कहता ; सामाजिक कुरीतियों के सम्बन्ध में बताता ; सामाजिक न्याय की आवश्यकता पर बल देता तो कहीं लोग उसकी बातों को बड़े ध्यान से सुनते ; उससे प्रभावित होते ; कहीं सुनकर कह देते कि यह कहाँ संभव होगा ? समाज में ऊँच-नीच की भावना कभी न समाप्त होगी ? एक हिन्दू एक मुसलमान के साथ कभी भी खान-पान का सम्बन्ध नहीं बना पायेगा ; समाज छोटा-बड़ा रहा है ; रहेगा। मंदिरों में पुजारी निम्न जाति का न है ; न कोई उसे स्वीकार करेगा ; फिर मंदिरों में मुसलमान पुजारी हो इसकी तो कभी कोई कल्पना ही नही करेगा जो जैसा समाज में चला आया है ; उसमें परिवर्तन लाना हिमालय पहाड़ जैसे उठाना है, अत्यन्त दुष्कर है; असम्भव है, भविष्य में दो चार पीढ़ी बाद हो सकता हे, कुछ परिवर्तन कहीं हो; सम्भव है लेकिन व्यापक रुप से सामाजिक परिवर्तन सम्भव नहीं है हाँ, जब प्रलय ही हो जाय, संसार में फिर से मानव का उद्भव हो तो हो सकता है; कि नयी व्यवस्था में ये सब नातें न रहें, वर्तमान समाज में तो बड़ी जड़ता है ; कूपमण्डूकता है ; लोग यथास्थिति में आंशिक परिवर्तन भी नहीं चाहते। जो चाहते भी है ; उनके सामने ऐसे भय दिखाये जाते है ; ये भय धर्म के नाम पर ईश्वर के नाम पर स्वार्थी लोग दिखाते हैं ; कि नरक गामी होगें ; भयंकर पाप होगा। परिणाम यह होता है कि लोग जड़वत् स्थिति से हिल-डुल नहीं पाते- जहां जिस स्थिति में हैं ; उसी में पड़े रहते हैं।

बँटवारे के बाद से मालिक साहब ने सन्यास ले लिया था। सारा दायित्व बड़े लड़के जगदीश को सौप दिया था। वही सारी व्यवस्था अपनी पूरी क्षमता व ईमानदारी से करने लगा था, समयलाल की पढ़ाई का पूरा व्यय भार उसी पर था उसका कहना था कि समयलाल पेटभर पढ़ ले ,यदि वह जीवन भर पढ़ेगा तो वह उसे जीवन भर पढ़ायेगा। वह मन लगाकर पढ़े, उसे घर की चिन्ता करने की कोई आवश्कता नहीं है वह घर की सारी व्यवस्था स्वयं देख लेगा।

उस समय कृषि से आय बहुत अच्छी नहीं थी। एक तो सिंचाई के साधन अच्छे नहीं थे ; नहर का पानी सब जगह सरलता से पहुंच नहीं पाता था ,तालाबों से सीमित क्षेत्र में ही सिंचाई हो पाती थी, वर्षा पर आधारित खेती थी, गल्ला भी सस्ता था, अतः कृषक अपने बच्चों को शहर भेजकर पढ़ाने का खर्च पूरा नहीं कर पाते थे , शहर का खर्च अधिक ही था, लेकिन समयलाल के साथ ऐसी स्थिति नहीं थी।उसके पिता-पितामह जमीन्दार थे।पिताश्री -

मनोहर को आपसी बटवारे में जार्ज पंचम व विक्टोरिया छाप के चांदी के सिक्के लगभग एक बोरी व सोना तीन किलो के लगभग मिला था, कृषि से भी अच्छा सूल हो जाता था अच्छी खेती थी इसलिये समयलाल के सामने कोई कठिनाई नहीं थी, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी,

समयलाल ने अच्छे अंकों से इण्टर मीडिएट पास करके इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया था, वह बी०ए० प्रथम वर्ष में ही था कि उनके पिताश्री का अवसान हो गया,मालिक साहब के अवसान की सूचना आस-पास के गांवों में जंगल में लगी आग की तरह तेजी से फैल गयी। समयलाल को भी सूचना मिली। बड़ी संख्या में लोग उनके दाह संस्कार में सम्मिलित होने के लियें आने लगे; क्योंकि क्षेत्र में उनका बड़ा सम्मान था, वह जमीन्दार थे बहुत बड़े काश्तकार थे, चार पांच खौं गल्ला रखते थे, क्षेत्र के लोग उनके यहां से बाढ़ी का गल्ला ले जाते थे, निकट सम्पर्क वाले शादी विवाह में आवश्यकता पड़ने पर बाढ़ी का घी भी ले जाते थे। रुपये पैसे ले जाते थे। लड़कों की शादी में मोहन माला, सोने की ज़ंज़ीर ,मोहरें, बैलों की झूलें ,नालकी व पालकी,दरियाँ ,गुलाब जल छिड़कने वाले चाँदी के स्प्रिन्कलर आदि सामग्री भी ले जाते थे, लेकिन सोने चांदी का सामान खास लोगों को दिया जाता था इस प्रकार पूरा क्षेत्र उनका किसी न किसी प्रकार ऋणी था।

मालिक साहब का पूरा नाम नई पीढ़ी के लोग सम्भवतः जानते भी नहीं थे ।सभी उन्हें इसी नाम से पुकारते थे। यह उनका चलताऊ नाम था, जो असली नाम की तरह प्रयुक्त होता था, सयाने लोग कहने लगे कि आज से मनोहर दादा का नाम समाप्त हो गया। लेकिन कुछ लोगों ने कहा-|"उनका नाम समाप्त नहीं हुआ। वह तो बहुत समय तक याद किये जाते रहेंगे समाप्त तो उनका शरीर हुआ है क्योंकि शरीर कभी किसी का अमर नहीं रहा। अमर तो नाम रहता है आज भी लोग राम ;कृष्ण, गाँधी,नेहरु,सरदार पटेल,सरदार भगतसिंह आदि महापुरुषों का पुण्यस्मरण करते हैं जबकि उनके शरीर कभी के नष्ट हो गये है, आप अपने ही समय में देख लीजिय। चौधरी शिवसहाय सिंह को दिवंगत हुये कितने वर्ष हो गये,लेकिन उनका नाम अमर है, पूरा क्षेत्र उनका नाम जानता है, इस पर गजराजसिंह ने कहा- यदि व्यक्ति अपने जीवन में समाज का काम करता है ; जनता के हितार्थ समर्पित रहता है तो वह व्यक्ति कभी नहीं मरता है वह अमर हो जाता है, लेकिन शरीर से नहीं नाम से। मनोहर दादा ने भी अपने जीवन में लोगों की यथाशक्ति सहायता की है ।उनकी जरूरतें पूरी की हैं, कभी किसी को सताया नहीं है ।जो भी

उनके दरवाजे गया है। किसी भी काम से गया है, उसका आतिथ्य सत्कार किया है उसका काम किया है। लोग उनके इस भले स्वभाव को कैसे भूल सकेंगे ? कम से कम एक दो पीढ़ी तक लोग तो उन्हें स्मरण ही रखेंगे, "

धर्म सिंह बोल पड़े- "उन्होने कभी किसी का अहित नहीं किया है। किसी के साथ अन्याय नही होने दिया है। सबके सुख-दुःख में सम्मिलित रहे हैं। लोग उन्हें कैसे भूल पायेंगे ? उनकी सुकृतियाँ ,उनके द्वारा किये गये परमार्थ उन्हें अमर रखेंगे "

मालिक साहब के चचेरे भाई महावीर,जिन्हें लोग बड़े मालिक कहते थे, क्योंकि परिवार में वह सबसे सयाने थे ; मनोहर दादा से एक साल बड़े थे, बहुत शोकाकुल थे मालिक साहब मनोहर उनके समवयस्क थे , वह परिवार के बाहरी कामों को देखते थे, मालिक साहब परिवार खेती पशु नौकर चाकरों की देखरेख करते थे परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ जाने व औरतों में आपस में न पटने के कारण यद्यपि बंटवारा हो गया था, लेकिन दोनों बुजुर्गों के बीच बड़ा घनिष्ठ प्रेम था। दरवाजे पर बहुधा दोनों एक दूसरे के समीप बैठकर पारिवारिक चर्चायें , परिवार में यदा-कदा उठे बिवादों पर बिचार- बिमर्श करते रहते थे , आज से उनके निधन हो जाने के कारण वह अकेले हो गये हैं, अब परिवार में उनका कोई हम उम्र नहीं रहा।

दरवाजे पर शोकाकुल लोगों की भीड़ लगी थी ,नात रिश्तेदार, बहन बेटियां भी पहुँच रहे थे ,कुछ पहुँच भी गये थे, मालिक साहब की मृत्यु की सूचना हरकारों नौकरों, द्वारा भेज दी गयी थी , परिवार के कुछ नवयुवक भी अपनी-अपनी साइकिलें उठाकर अलग-अलग स्थानों में सूचना देने के लिये रवाना हो गये थे, दरवाजे पर भीड़ एकत्रित होती जा रही थी, घर के सामने का चौगान लोगों से भरता जा रहा था, शोक पूर्ण वातावरण था।

समयलाल अब तक नहीं पहुंच पाये थे, इसलिये बड़े मालिक ने कहा कि टिकठी तैयार करों। बगीचे में जहां दाह-संस्कार किया जाना है, वहां ले चलो। वहां भी काफी समय लगेगा।तब तक में जो अभी तक नहीं पहुँच सके हैं , वे पहुँच जायेंगे। समयलाल भी आ रहा होगा।अब घर से लाश को उठाओ। गाड़ियों में लकड़ी भरकर भिजवाओं। तभी केवलसिंह ने बताया कि रामावतार दो गाड़ियां दो नौकर व कुल्हाड़ा लेकर अभी कुछ देर पहले चले गयें हैं ।

परिजनों ने शव को टिकठी में रखा। सारी तैयारी बनाकर टिकठी को कन्धे में उठाया। 'राम नाम सत्य है ; और सब असत्य है,' ' राम नाम सत्य है..." कहते हुये बगीचे की ओर -

चल पड़े। पीछे-पीछे लम्बी भीड़ चल रही थी। बगीचा घर से लगभग पौन किलोमीटर की पर था . परिवार के लोगों का दाह-संस्कार इसी बगीचे में होता चला आया है, आत्मीय परि ने मनोहर दादा को कंधा दिया।

दाह-संस्कार की व्यवस्था बनायी जा रही थी। कुछ लोग चिता बनाने में लगे थे। कु आग जलाने व अंगारा बनाने में जुटे थे। पंडित जी जगदीश को तैयार होने का निर्देश दे रहे तभी समयलाल पहुँच गये। जिन प्रमुख लोगों की अबतक प्रतीक्षा थी, वे लगभग सभी आ थे। इसलिये शव को उठाकर चिता में रख दिया गया। तभी समयलाल ने अग्रज से पूँछा-

"चिता में डालने के लिये घी कितना लाये हो " ?|

" पांच सेर के आस पास होगा " जगदीश ने बताया ,

" यह तो कम है, दाह-संस्कार में कम से कम पन्द्रह सेर घी से कम तो होना ही नहीं चाहि होना तो प्राणी के वजन के बराबर चाहिये।उतना न हो तो आधा तो होना ही चाहिये।यदि उ भी न हो तो पन्द्रह सेर से कम तो किसी भी दशा में नहीं होना चाहिये,घर में घी तो होगा ?

" हाँ; घी तो है ;"

" जब घर में घी है तो कृपणता क्यों ? किसी को भेजकर कम से कम दस सेर और मंगवा ले

जगदीश दाग देने की तैयारी कर रहे थे, उन्होनें एक व्यक्ति को भेजकर घी मंगवाय वह एक कनस्टर सिर पर रखकर ले आया। उसे चिता में डालने के लिये पिघलाया गया। दश व दीपावली के बीच का समय था, घी कुछ जमा हुआ था।

फिर समयलाल ने अपने परिजनों से कहा- उनमें कुछ बुजुर्ग भी थे , "मैं सोचता हूँ पिता जी के दशगात संस्कार में महापात्र को न बुलाया जाये " यह बात सुनकर सभी चौंक हो गये। सभी विस्फारित नेत्रों से समयलाल को देखने लगे,नीरवता छा गई , लोग उनके आस पास आकर खड़े हो गये। समयलाल नें चुप्पी तोड़ते हुये फिर कहा- "महापात्र को जो गल्ला सारा दैनिक जीवन में उपभोग किया जाने वाला सामान व धन दशगात के दिन दिया जाता , वह परम्परागत रुढ़ि के कारण दिया जाता है । उसके पीछे यह अन्धविश्वास रहता है मृतक इन सब वस्तुओं का परलोक में उपभोग करेगा।उसे परलोक में किसी वस्तु की कमी कोई अभाव न रहे,इसलिये ढेर सारी वस्तुयें महापात्र को दी जाती है ।यह अन्धविश्वास भी

लोगों के मन- मष्तिष्क में स्थापित कर दिया गया है कि मृतक को सारी वस्तुयें ब्राह्मण को दिये गये भोजन व दान के माध्यम से प्राप्त हो जाती है। लेकिन सही बात यह है कि मृतक को न ये वस्तुयें परलोक में मिलती हैं ; न उसे आवश्यकता होती है, न वह इन वस्तुओं का उपभोग ही करता है- यह सब अज्ञान जन्य अन्धविश्वास है कि प्राणी इन वस्तुओं का उपभोग करता है, उपभोग तो दूसरे लोग करते है ,

वैतरणी पार करने के लिये गाय की पूँछ पकड़ायी जाती है ताकि मृतक गाय की पूँछ के सहारे वैतरणी पार कर सके , फिर वह गाय किसी ब्राह्मण या महापात्र को दे दी जाती है; मरते समय मुँह में गंगाजल व सोना डाल दिया जाता है ताकि उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सके , लेकिन यह परम्परागत विश्वास है जिसके पीछे कोई तथ्य या तर्क संगत बात नहीं है मैं इसके सम्बन्ध में फिर चर्चा करुं गा, अभी तो दाह-संस्कार का कार्य पूरा किया जाना आवश्यक है, अभी मेरा इतना ही कहना है कि भैया को दाग देने की कोई आवश्यकता नहीं है न पीपल में घट बांधने का आवश्यकता है न प्रतिदिन पीपल को नहलाने जाने की आवश्यकता है ,

यदि किसी को कुछ कहना है, तो अभी कहे, मैं भी सुनूँ। दूसरे लोग भी सुनें मैं ने तो अपनी बात कह ही दी ,

परिवार के कुछ लोग सिर नीचा करके बैठ गये। रज्जन ने कहा-"ऐसा तो हिन्दू समाज में कोई नहीं करता जैसा करने के लिये तुम कह रहे हो, क्या जो अब तक करते आये हैं ; सब गलत थे ?" फिर शिवभवन ने कहा- " हमारी समझ में तो यही आता है कि जो पुरखे करते आये हैं ,वहीं हम लोग भी कर," गुलब ने कहा-" यह तो बिल्कुल नयी रीति होगी। लोग सुनकर क्या कहेंगे ?" तब परिवार के एक बुजुर्ग ने कहा- " नया जमाना आ गया है, नयी-नयी बातें हो रहीं हैं , अब तुम जैसा चाहो, वैसा ही करो। हमारी तो बीत आयी है अब तुम्हीं लोगों का जमाना है, पढ़े-लिखे हो ; शहर मे रहकर पढ़ रहे हो, विश्व विद्यालय में हो जैसा उचित समझो ; वैसा करो,हमें कोई आपत्ति नहीं है, अपने बड़े भाई से भी पूँछ लो" जब समयलाल ने अपने अग्रज से पूँछा-"भैया ! बताओं क्या किया जाय ? "

जगदीश ने कहा- " हम तो दाग देने की तैयारी किये बैठे थे, ". फिर धीरे से बोले- "हमसे क्या पूँछते हो ? जैसा कहो, वैसा हम करें। हम तो अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं; किसान हैं ,तुम तो पढ़े-

लिखे हो। जैसा तुम कहोगे, हम वैसा ही करेंगे..."

समयलाल कुछ क्षण मौन होकर सोचते रहे। फिर धीरे से बोले- "दाग देने की तैयारी किये बैठे हो, लेकिन-अभी दाग दिया नहीं गया, है। इसलिये नौ दिन तक आप जैसा चाहें, वैसे रहें, नौ दिन तक घर में हवन हो, बेदपाठ हो ; गीता पाठ हो, दसवें दिन भण्डारा हो, कल पिता जी की अस्थियाँ व राख एकत्र कर ली जायँ, अस्थियाँ बगीचे में गड्ढा खोदकर गाड़ दी जायें भस्म खेतों में डाल दी जाय। उनके चिता की सफाई कर दी जाय। वर्षाऋतु में वहां एक वृक्ष लगा दिया जाय। वही उनका स्मारक बन जायगा। यही बगीचा हमारे परिवार का स्मारक-स्थल हो इसलिये ऐसी क्रिया हर दिवंगत परिजन के उत्तराधिकारियों द्वारा की जाय। "

समयलाल की ब्रातें सुनकर वहां एकत्रित लोग तो आश्चर्य चकित हो गये। कुछ तो मन ही मन बहुत नाराज हुये। वे क्रोध का घूंट पीकर रह गये। लेकिन कुछ उनकी तीखी आलोचना करने लगे। बैजनाथ ने कहा कि समयलाल पढ़-लिखकर मूर्ख बन गया है अपनी धार्मिक परम्परा के विरुद्ध आचरण करने की बात कह रहा है- रामरुप ने कहा-" बताओ दसगात, तेरही, ब्रह्मभोज को भी अन्धविश्वास बताता है," रज्जन ने प्रश्न किया कि अब तक सनातन काल से जो चला आया है क्या वह सब गलत है ? क्या हमारे पुरखे गलत ही करते आये हैं ? फिर कुछ लोग कटाक्ष करते हुये कहने लगे कि पढ़े -लिखे लोग सब धर्म कर्म ही छोड़ते जा रहे हैं, इसीलिये नाना प्रकार की दैवी आपत्तियां आ रही है "फिर दर्शन ने ब्यंगात्मक ढंग से कहा-" नया जमाना आ गया है देखते जाओ " अच्छा हुआ,अपना समय तो बीत गया। "तब एक नवयुवक ने अपने बिचार ब्यक्त करते हुये कहा-"न स्वर्ग कहीं है ; न नर्क ही,सुख ही स्वर्ग है ! और दुःख ही नरक है, बाल्मीकि रामायण में अयोध्याकाण्ड सर्ग १०८ में जाबालि राम को सम्बोधित करके कहते हैं - "यज्ञ करो; दान दो, यज्ञ की दीक्षा लो, तप करो और सन्यास लो आदि बातों का समर्थन करने वाले शास्त्र अपना स्वार्थ साधने के लिये बुद्धिमानों ने बनाये हैं, महामते राम ! तुम निश्चय समझो कि इस लोक के अतिरिक्त कोई दूसरा लोक नहीं है, जो प्रत्यक्ष है ; उसी पर आस्था करो, कोई दूसरा लोक नहीं है, परोक्ष का परित्याग कर दो। जाबालि की बातें सुनकर राम उत्तर में कुछ नहीं कहते हैं, मौन रहते हैं, इसलिये जो समयलाल कह रहें हैं कर रहे हैं वह ठीक ही है।

मालिक साहब का दाह संस्कार हुआ, लेकिन समयलाल की इच्छानुसार ही। क्योंकि उनकी इच्छा को बरीयता दी गई। सभी लोग वहाँ से वापस होकर कुयें, तालाब जहाँ जिसको जैसी सुविधा हुई, स्नान किया। फिर अपने-अपने घर चले गये। लेकिन समयलाल की आलोचना व परम्परा -विरुद्ध कार्य के लिये चर्चा होती रही। यह चर्चा धीरे-धीरे क्षेत्र में फैल गयी। पूरे इलाके में वह परम्परा व सनातनी रुढ़ि के विरुद्ध कार्य करने के लिये चर्चा का केन्द्र बिन्दु बने रहे।

+++|

# सात

समयलाल के परम्परा व रुढ़ि विरुद्ध कृत्य से सुरेश प्रसाद महापात्र सर्वाधिक नारा हुये क्योंकि उनकी आय पर सीधा कुठाराघात हुआ था, उनकी खेती पर अचानक तुषारापा हो गया था। उन्होंने कल्पना ही नहीं की थी कि एक कृषक परिवार में अचानक स्थापित संस्क के विरुद्ध आचरण हो जाएगा। इसलिये वह बिना बुलाये, जानकारी मात्र हो जाने से अप पोथी-पत्रा झोले में रखकर मृतक संस्कार सम्पन्न कराने दसवें दिन प्रातः आ गये – उन्हें आ थी ,कि पहले की तरह इस बार भी पर्याप्त मात्रा में अन्न, वर्तन भाड़े व नकद राशि मिलेगी लेकिन जब वह जगदीश के यहां पहुँचे तो वहां उनकी पहले की तरह आवभगत नहीं हुई। उन्हों मृतक संस्कार कराने हेतु तैयारी कराने को कहा तो समयलाल ने विनम्रता पूर्वक मना कर दि और कहा- "नौ दिन से लगातार घर में हवन, वेद पाठ,गीता पाठ व ईश्वर -प्रार्थना हो रही है आज भण्डारा की तैयारी की जा रही है, वेद-रीति से यही अन्तिम व उत्तम मृतक संस्कार है।

अच्छा हुआ ; आप आ गये , आप भी भण्डारा में सम्मिलित हों ।यदि आपको बना बनाया भोजन ग्रहण करने में आपत्ति है, तो सीधा ले लीजिये, बनाइये खाइये। यदि बनाने में कष्ट है तो सीधा ले लीजिये, घर में बनाइये खाइये। जैसी आपकी इच्छा हों.... आप सात आ किलोमीटर से आये हैं ; बैठिये , आराम कर लीजिये; "

कुछ क्षण रुकने के बाद सुरेश प्रसाद ने गम्भीरता-पूर्वक कहा- "आप वेद- विरु कार्य न करें , सनातन काल से जो चला आया है, वही करो, परिवार के अन्य लोगों का पूर्व का जिस प्रकार संस्कार होता आया है ; वैसा ही मालिक साहब का भी होना चाहिये। यदि आ देने के कारण यह संस्कार नहीं करवा रहें हैं तों जो कुछ आपकी मर्जी हो, दें या न देना चाहें न दें। लेकिन लोक रीति का उल्लंघन न करें , इससे अपयश मिलेगा ; हानि होगी ,.."

सुरेश प्रसाद की बातें सुनकर कुछ लोगों ने उन्हीं के सामने कहा- "पंडित जी ठी कह रहे हैं।" फिर एक बुजुर्ग ने कहा-जब किसी ने दाग ही नहीं दिया है तो पीपल के नीचे कौ बैठकर मृतक संस्कार करवायेगा ? " समयलाल बोल पड़े-" महाराज ! हर प्राणी को अप किये हुये कर्मों का फल भोगना पड़ता है, उनसे कोई बच नहीं सकता ,फिर पिण्डा पराने व सारे कर्मकाण्ड का क्या मतलब ! इन कार्यों का मृतक से क्या सम्बन्ध ? घर के लोगों को-

कर्मकाण्ड के जाल में उलझाने का क्या मतलब ? कोल्हू के बैल की तरह आँख में पट्टी बांधकर ही परम्परा व रुढ़ि में चलते रहने का कोई अर्थ नहीं, जहाँ तक लोकरीति की बात है उसके सम्बन्ध में मेरा विचार है कि उनका पालन विवेक के साथ हो ,आंख मूँदकर नहीं। मेरा विवेक जिस काम को करने की अनुमति देगा ; मैं वही कार्य करुँगा अन्यथा नहीं। बहुत सी लोकरीतियां हैं जिनमें संशोधन, परिमार्जन की आवश्यकता है, मैं आपसे ही कह रहा हूँ कि यह लोकरीति है कि शादी के बाद यदि कोई लड़की विधवा हो जाय तो सारा जीवन त्याग, तपस्याके साथ विताये, इसी लोकरीति के पालन हेतु उसे कहा जाता है लेकिन यही बात उस व्यक्ति को नहीं कही जाती है जिसकी पत्नी दिवंगत हो जाती है ; जो विधुर हो जाता है, क्या इस लोकरीति का पालन किया जाना न्याय संगत है ? मान लो ; एक व्यक्ति की उम्र तीस वर्ष है, उसके दो संताने हैं ; वह विधुर हो गया तो क्या उसे पुनर्विवाह करना चाहिये, नियमत:, तो नही होना चाहिये, क्योंकि विवाह का मूल अर्थ संतति प्राप्त करने ; मानव धारा को निरन्तर बनाये रखने का है। जब दो सन्ताने हैं तो विवाह फिर पुनः क्यों रचाया जाय ? शेष जीवन त्याग, तपस्या के साथ क्यों न बिताया जाय ? टेटका के रामआसरे को देख लीजिये, उसके दो लड़के तीन लड़कियां थीं , पत्नी को प्रसव होना था बच्चा पैट में ही मर गया , पत्नी भी मर गयी, एक वर्ष बाद उसने एक लड़की से शादी कर ली ।इसी गांव में लक्ष्मण पंडित की लड़की रत्ना को देख लीजिये। लड़की की मात्र शादी भर हुई थी, लड़की ससुराल भी नहीं गयी थी, लड़का जामुन के पेड़ से गिरकर मर गया। लड़की घर मे वैधव्य जीवन व्यतीत करने के लिये बैठी है, क्या उसके पुनर्विवाह की व्यवस्था नहीं होनी चाहिये ? लेकिन लोकरीति के अनुसार नहीं होनी चाहियें। इस प्रकार लोकरीतियों ने समाज को ऐसा जकड़ा है कि लोग उनसे हटकर कुछ सोच ही नहीं पाते... लेकिन मैं अपनी बात बता रहा हूँ कि मैं ऐसी किसी परम्परा या लोकरीति का पालन नहीं करुँगा जिसे मेरा विवेक उचित नहीं मानता है.. एक बात मैं और बताये देता हूँ कि आने वाले समय में लोग ऐंसी किसी बात को स्वीकार नहीं करेंगे जो विज्ञान सम्मत, न्यायसंगत , व विवेक सम्मत न होगी, वे सारी रुढ़ियां ,परम्परायें व लोक रीतियां जो विवेक पर आधारित नहीं है ; धीरे-धीरे अपने आप कपूर की तरह काल प्रवाह में विलीन होती जायेंगी,युग ऐसा आ रहा है कि स्त्री-पुरुष के बीच चल रही सामाजिक असमानता समाप्त हो जायेगी , विधवाओं का विवाह होगा ; पुरुषों की तरह स्त्रियां हर क्षेत्र में आयेंगी ; पुरुषों के समकक्ष साबित होंगी ।लड़कपन में ही शादी कर देनें की जो रीति-

चली आ रही है, वह किसी के विरोध किये बिना अपने आप टूट जायेगी। गाँव के छोटे-ब
सभी लोग अपनी रुचि के अनुसार संस्कृत पढ़ेंगे ; वेद-पुराण पढ़ेंगे। विज्ञान का प्रसार होगा
औरतें नौकरियां करेंगी।अन्तर जातीय शादियां होंगी।जाति बन्धन ढीले होंगे। मानव-मानव के
बीच ,जाति-जाति के बीच, धर्म-धर्म के वीच बनी प्रतिवन्धात्मक दीवारें जिसकी देखभा
बड़े यत्न से की जाती रही हैं ; टूट जायेंगी। गाँव-गाँव में स्कूल खुल जायेंगे। किसी का जा
के आधार पर मान-सम्मान नहीं होगा। ज्ञान का सुर्योदय हो गया है,क्रान्ति के बीजों का व
हो रहा है ; सामाजिक क्रान्ति की भूमिका निर्मित हो रही है ; लेकिन जन सामान्य को नहीं मालू
हो रहा है। भविष्य में अप्रत्याशित परिवर्तन के संकेत नहीं देख पा रहे हैं ,इसीलिये परम्पराओं
चिपके रहने में अपना गौरव समझ रहे हैं।

पंडित जी ! आप गम्भीरता पूर्वक सोचियें। समझिये लोकरीति अथवा परम्परा
दुहाई देकर विवेक विरुद्ध कार्यों को करते रहने की वकालत न कीजिये। थोड़ा समझें, ।एक दि
था, जब राजा रानी के पेट से पैदा होता था। आज राजा जनता के वोट से पैदा होता है, जै
वहुमत चाहेगा ; वैसा ही होगा।

मैं ने पिता श्री के मृतक संस्कार को लोकरीति से हटकर करने का विचार बना लिया
यदि किसी दूसरे को ऐसा करने को कहता तो वह मेरी बात न सुनता। मानने की कौन कहे
इसलिये मैंने अपने घर से ही लोकरीति के विरुद्ध कार्य करना प्रारम्भ किया है मेरा मतलब ऐ
लोकरीति से हे जो मेरी बुद्धि-विवेक के विरुद्ध है मैं सभी का आंख मूँदकर विरोध नहीं कर रहा
; न करूँगा।

चूँकि आपने लोकरीति की बात कही है इसलिये मैं उसी के सम्बन्ध में एक और ब
बता दूँ। बंगाल में पति के मरने के बाद पत्नी को पति के साथ जीवित जला दिया जाता था, ब
जाति के लोगों की विधवाओं के लिये पति के साथ सती हो जाना लोकरीति बन गयी थी य
धर्म का अंग बन गया था, इसका विरोध जब राममोहन राय ने किया तो उनकी माँ व परिवार
लोगों ने ही उनका जवर्दस्त विरोध किया। देश में अंग्रेजों का शासन था , वे भारतीयों के ध
व उनकी रीतियों में हस्तक्षेप करना नही चाहते थे, लेकिन राजा राममोहन राय ने ब्रिटिश सरक
से प्रार्थना करके , आवेदन प्रस्तुत करके ,बड़े प्रयास के बाद सती प्रथा के विरुद्ध कानू
वनवाया जो उस समय की लोकरीति के विरुद्ध था।अब भी कहीं-कहीं सती होने की घटनायें

सुनाई पड जाती है, जिसकी पुरातन वादी लोग प्रशंसा करते हैं। उसको महिमामण्डित करते हैं , इसलिये मैं आप से कहता हूँ ; कि हमें युग के अनुकूल आचरण करना चाहिये। युग की भावना का आदर करना चाहिये। लोकरीति या परम्परा की जड़ पकड़कर नहीं बैठे रहना चाहिये। समय निरन्तर बदल रहा है; इस परिवर्तन के कारण लोकरीतियों, सामाजिक व्यवस्थाओं ,रीति-रिवाजों ,विचार -व्यवहारों में भी कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्यम्भावी हैं। हम उनके मोह में पड़कर जहां के तहां ही न बैठे रहें। बन्दरिया के बच्चे की तरह मृत परम्पराओं से ही न चिपके रहें। नहीं तो आने वाली पीढ़ी के लिये हम हँसी के पात्र बन जायेंगे ,सोचो। क्या आप शैशवावस्था के कपड़े जवान होने पर भी पहने रहेंगे ? पहली बात तो आप पहन नहीं पायेंगे ; यदि आपनें किसी प्रकार अपने ऊपर रख भी लिया तो आपकी स्थिति विदूषक जैसी बन जायेगी। लोकरीतियों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही कुछ है।अब समय आ गया है कि उन परम्पराओं और रीतियों से मोह भङ्ग करें जो विवेक सम्मत नहीं हैं ,कोई समय था, उनका उपयोग था ; समाज के हित में था लेकिन जो कभी समाज के हित में था ; वह सदैव समाज के हित में नही रह सकता , समय बदल जाने पर सन्दर्भ और प्रसंग बदल जाते हैं।

अब भी आप लोग सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण राहु और केतु नामक राक्षस द्वारा ग्रस लिये जाने के कारण होना मानते हैं , उन्हें कष्ट से मुक्ति दिलाये जाने हेतु आप लोग दान-दक्षिणा लेते देते है। लेकिन सत्य कुछ और है। न तो सूर्यग्रहण के समय सूर्य को राहु ग्रसता है, न चन्द्रग्रहण के समय केतु चन्द्रमा को... ग्रसता है,चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण का कारण स्कूल जाने वाला कक्षा छः सात का बालक जानता है यदि सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथ्वी आ जाती है तो चन्द्रग्रहण और पृथ्वी व सूर्य के बीच में चन्द्रमा आ जाता है तो सूर्यग्रहण हो जाता है। विज्ञान विरुद्ध विश्वास कब तक टिकेगा ?अब धीरे-धीरे राहु-केतु की बात समाप्त हो रही है।

जिस प्रकार हमारे यहां दिवंगत प्राणी के तरने के लिये गोदान दिये जाने व मरते समय मुँह में गंगा जल व सोना डालने तथा मृत्योपरान्त दसवें दिन महापात्र को क्रिया काण्ड के समय कपड़े ,वर्तन अन्न आदि दिये जाने की लोक रीति है , ऐसी ही रीति प्राचीन काल में मिस्त्र देश में थी वहाँ जब राजा मरता था, तो उसके शव के साथ सुन्दर औरतें ; बहुत से नौकर चाकर, ढेर सारे सोने- चाँदी के वर्तन व कीमती कपड़े व दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुयें भी दफना दी जाती थीं, अनेक निरीह प्राणी बे मौत मारे जाते थे।

उनका विश्वास था कि प्राणी को दूसरे लोक में भी इन वस्तुओं की जरुरत पड़ेगी , दूसरे लो में उसे कष्ट न हो ; इसलिये वे सारी सामग्री व प्राणी उसके शव के साथ दफना दिये जाते। बहुत से राजाओं के शवों को अच्छे ताबूतों में सुगन्धित मशाले लगाकर रख दिया जाता था। उनके ऊपर पिरामिड बना दिये जाते थे ,मिश्र के पिरामिड वहां के शासकों के कब्रिस्तान ही किन्तु लम्बे अन्तराल के बाद जब ऐसे विश्वास रखने वालों का सम्पर्क अन्य लोगों से हुआ मिश्र पर दूसरे राजवंशों का शासन हुआ तो उनकी प्रथाओं में भी अन्तर आया।

मृत्यु तो जीवन की अनिवार्य और स्वाभाविक घटना है ।उससे उत्पन्न शोक औ सन्ताप को शान्ति और धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिये । मृत्यु के वाद उसके परिजनों क कर्मकाण्ड के जाल में उलझाकर उसके सन्ताप को और बढ़ा दिया जाता है। दुःखी कुटुम्बि से नाना प्रकार के पेचीदे धार्मिक संस्कार कराये जाते हैं उसके घर के धन को बरब करायाजाता है ; यह कहां तक उचित है ?

सुरेश प्रसाद समयलाल की बातों को अन्यमनस्क भाव से सुन रहा था, लेकिन उ ऐसे भाषण सुनने की न तो कल्पना थी ; न वह सुनना चाहता था। उसे मन ही मन भारी पी हो रही थी। उसने जो कुछ सोचा था, वह कुछ भी नहीं हुआ। घर से वह आशा लगाकर च था कि मालिक के दशगात संस्कार में उसे दस बारह मन अन्न मिल जायगा। बर्तन, कपड़े, ग रजाई, आदि मिलेंगे ; नकद राशि भी मिलेगी। लेकिन हो गया उल्टा। एक मात्र पांच रुपये व ए सीधा ही प्राप्त हुआ। पत्नी क्या सोचेगी ?

समयलाल की बातें उनके कुटुम्बी जन भी सुनते रहे। वे भी कहने लगे कि सभी पुरा प्रथायें अच्छी ही हैं , ऐसा नहीं है। सभी नयी बातें त्याज्य हैं; ऐसा भी नहीं हैं।

सुरेश प्रसाद बुझे-बुझे से बैठे रहे ।उनके पास कुछ कहने के लिये था ही नहीं। एक उनको अपने क्रिया काण्ड केअलावा अन्य किसी विषय का विशेष ज्ञान भी नहीं था, उन स्कूली शिक्षा नगण्य थी, उनके पास व्यावहारिक ज्ञान था , अपने व्यावहारिक ज्ञान से व अपना व्यवसाय चला रहे थे। लेकिन समयलाल के सामने वह भी असफल हो गया। वह अप झोला लेकर खड़े हो गये। "बोले- अब मैं जा रहा हूँ , मेरे प्रतिष्ठित यजमान स्वर्ग सिधार गये मृतक की आत्मा की शान्ति हेतु ही शास्त्रों मं कर्मकाण्ड का विधान है, आपने नहीं कराया, भी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ ,कि हमारे मालिक साहब की आत्मा को शान्ति मिले। वह जहां

" कहीं रहें, सुखी रहें। उनको किसी प्रकार का कष्ट न हो..।" वह चले गये।

सायं भण्डारा था। बड़ी संख्या में लोग आमंत्रित थे, दरवाजे पर सायं चार बजे से ही चहल-पहल शुरु हो गयी। रात ग्यारह बजे तक भण्डारा का कार्यक्रम चलता रहा, अच्छी व्यवस्था थी। सुस्वादु भोजन के लिये लोगों ने मन ही मन प्रशंसा भी की। ऐसी व्यवस्था व खर्च को देखकर कुछ लोग यह अवश्य कहते रहे कि जब समयलाल ने इतना खर्च किया है तो महापात्र को भी सन्तुष्ट कर देना चाहिये था।आखिरकार इतना खर्च तो किया ही गया, महापात्र को कितना लगता ? सम्पन्न तो हैं , किसी वस्तु की कोई कमी भी तो नहीं है।

चारों ओर यह बात शीघ्रता से फैल गयी कि समयलाल ने अपने पिता का शास्त्रीय-विधि से मृतक संस्कार नहीं कराया। महापात्र बिना कर्मकाण्ड करायें यो ही चला गया।

चूँकि समयलाल का यह काम प्रचलित प्रथा के विरुद्ध था ; सभी लोग मृत्यु के दसवें दिन महापात्र को बुलाते हैं , कर्मकाण्ड कराते हैं ; क्षेत्र मे वही ऐसा प्रथम ब्यक्ति था जिसने इस प्रथा का पालन नहीं किया था। इसलिये उसका यह कृत्य चर्चा का विषय बन गया। कुछ लोग उसकी आलोचना और कुछ उसकी निन्दा करते रहे। लेकिन समयलाल के ऊपर आलोचना और निन्दा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

सुरेश प्रसाद को भारी मानसिक अवसाद था, भारी कदमों के साथ वह अपने घर आये। लेकिन रास्ते भर वह सोचते रहे कि यदि हर गांव में एक समयलाल हो जाये तो उनका बेड़ा ही गर्त में चला जाये। लेकिन यदि पढ़ा-लिखा विश्व विद्यालय का नवयुवक छात्र मृतक - संस्कार को सरेआम अमान्य कर दे ; उसकी आलोचना करने लगे ;उसे निरर्थक कहने लगे तो देर- सवेरे समाज में उसका प्रभाव तो पड़ेगा ही। धीरे-धीरे यदि मृतक -संस्कार बन्द होता गया ; लोग उसके प्रति उदासीन होते गये तो मेरे जैसे असंख्य परिवारों का जीवनयापन कैसे होगा ? हमारी आय का तो स्त्रोत ही सूख जायेगा। ऐसा लगता है कि इस व्यवसाय का भविष्य ही अन्धकार पूर्ण है। एक समय था जब मैं उसी गाँव से उसी परिवार से एक प्राणी के चले जाने पर इतना गल्ला लाता था कि मेरा परिवार दो तीन महीने आराम से खा-पी लेता था, गधों में गल्ला आता था , आज स्थिति यह हुई कि एक आदमी का एक दिन का सीधा ही मिल सका।

समयलाल की बातें उसके मस्तिष्क में रह-रहकर गूँजती रहीं। कभी-कभी वह अपने से स्वयं प्रश्न करता कि क्या समयलाल ने जो कुछ कहा, वह सत्य नहीं है ? क्या मृतक उन-

सारी वस्तुओं का उपभोग करता है जो वह उनके परिजनों के यहां से मृतक के नाम से ला है ? क्या यह उस जैसे असंख्य लोगों का व्यवसाय नही है ? क्या मृतक परलोक में इन सा वस्तुओं की आवश्यकता महसूस करता है ? तमाम बाते हैं जिनका कोई ठोस प्रमाण सहि उत्तर उसके पास नहीं है।

मरने के बाद आज तक कोई बताने नहीं आया कि परलोक कैसा है ; उसे वहाँ कि वस्तुओं की जरुरत पड़ती है ? मरने के वाद कौन कहां जाता है, आज तक किसी को माल नहीं हुआ। मरने के बाद जीव की क्या स्थिति होती है सम्भवतः कोई जानता भी नहीं। क्या कह सकता हूँ कि मृतक आत्मा के नाम पर मैंने यजमानों से जो कुछ लिया,वह मृतक आत्मा लिये ही था ? क्या उन वस्तुओं का उपयोग मेरे परिवार वालों ने नहीं किया ? यह सोचकर व सिहर उठा। समयलाल के आचरण ने मानों उसे झकझोर दिया हो,

एक समय था जब सभी लोग विश्वास करते थे कि सूरज पृथ्वी के चारों ओर घूमता है उसी से रात दिन होते है ; आज भी रज्जू की माँ यही मानती है। जब एक दिन रज्जू स्कूल पढ़कर घर पर आया तो बताने लगा कि पिता जी !आप गलत बताते थे कि सूर्य घूमता है स्कूल में पढ़ाया गया है कि सूर्य नहीं पृथ्वी सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है। तब हम लो हंसे थे। उसकी माँ ने तब भी नही माना था। तभी मैंने कहा था कि स्कूल में शास्त्र विरुद्ध बा बतायी जा रही है ।अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार का ही कारण है, कि लोगों को ऐसी बातों की जानकारी मिलती जा रही है जो सप्रमाण है ; वैज्ञानिक हैं , सत्य है। लगता है अब वह समय द नहीं है जब शास्त्रों में लिखी हुई बातों को लोग इसलिये नहीं मानेंगे कि वे शास्त्रों में लिखी हैं उन बातों को तभी मानेंगे जब वे कसौटी में खरी उतरेंगी। मुझे भय है कि शास्त्रों में लिखी बा कसौटी में खरी उतरेंगी!अव तो शास्त्र भी झूठे साबित होंगे!

मुझे भी रज्जू को शहर भेजकर अंग्रेजी शिक्षा दिलानी चाहिये, भले ही मुझे उसके लि कुछ क्यों न करना पड़े। धन्धे में भी सार नहीं दिखाई पड़ता , उसे सरकारी नौकरी के लि तैयार करना चाहिये, यह बिना अंग्रेजी शिक्षा के सम्भव नहीं है, शिक्षा पर ही लड़को का भविष् निर्भर है, देश और समाज का भविष्य लड़को पर निर्भर है, शिक्षा ही सुधार और प्रगति की कुंज है,वही सम्मान और प्रतिष्ठा की आधार शिला है ;शक्ति है ; सामर्थ्य है। मुझे रज्जू को उच्च शिक्षा दिलानी है। इसके लिये मैं अपनी शक्ति लगा दूंगा। जमीन जायदाद तक बेंच दूंगा।नहीं

पूरा पड़ेगा तो भीख भी मांगूंगा। लेकिन शहर भेजकर उसे कालेज और विश्व विद्यालय में अवश्य पढ़ाऊँगा। इसी में परिवार का हित है ; बच्चों का कल्याण है।

(आठ)

समयलाल की बी०ए० प्रथम वर्ष की परीक्षा मार्च में होनी थी , पिताश्री के अवसान के कारण उसकी पढ़ाई का पन्द्रह दिन का अमूल्य समय कम हो गया था, इसलिये उसने सोचा कि परीक्षा के समय तक उसे घर नहीं आना है, उसने जगदीश से कहा- "भैया! मैं कल इलाहाबाद जाऊँगा। रेल्वे स्टेशन तक राशन व घी भिजवा दो। मैं अब परीक्षा के बाद ही आऊँगा। इसलिए मार्च तक का राशन और खर्च ले जाऊँगा। अपने ढंग से घर खेती देखते रहियेगा। जो आपकी सहायता में मजदूर हैं, उनसे अच्छा व्यवहार रखियेगा-क्योंकि अब आने वालें युग में न कोई मालिक होगा न मजदूर न कोई स्वामी होगा न सेवक। इसलिये किसी से भेदभाव पूर्ण व्यवहार न करियेगा। आप में और उनमें अन्तर बस इतना ही है कि वे निर्धन हैं, न अशिक्षित हैं। उनके पास जर-जमीन नहीं है। लेकिन गहराई से सोचो तो स्पष्ट हो जायेगा कि जो हमारे पास धन सम्पत्ति है, उसमें उनके श्रम का भी योगदान है । इसलिये उनके साथ भातृवत् व्यवहार कीजियेगा। समय पर नाश्ता भोजन का भी ध्यान रखियेगा। चूँकि मैं आपसे हर प्रकार की बात करता आया हूँ, इसलिये यह बात भी आपसे निःसंकोच कह रहा हूँ, मैं शहर में रहकर पश्चिमी लेखकों की पुस्तकें पढ़कर जो जान सका हूँ ; उसे छोटा भाई होकर भी आपको सावधान रहने के लिये बताना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ..... समय तेजी से बदल रहा है। इसका आभास यहां गांव में नहीं हो रहा है। लेकिन शहरी जीवन से उसका स्पष्ट आभास मिल रहा है..... कुछ समय के बाद यहां भी दिखने लगेगा।

दूसरे दिन समयलाल पूरी तैयारी के साथ इलाहाबाद चला गया। अपनी पूरी शक्ति व लगन के साथ पढ़ाई में लग गया अपने परिश्रम के बल पर उसने हाई स्कूल व इण्टर मीडिएट की बोर्ड परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी, बी०ए० की परीक्षा में भी वह अपना स्थापित रिकार्ड बनाये रखना चाहता था, वह अध्ययन ,लेखन कार्य में डूबा रहता। उसे बाहरी दुनियादारी से कोई मतलब नहीं था।

एक दिन समयलाल के पड़ोसी गांव के दो लड़के उसके पास आये।समयलाल को शुभ सूचना देते हुये तत्काल मीठा मंगवाने का आग्रह किया। शुभ सूचना थी किवह एक पुत्र के-

पिता बन गये हैं .पुत्ररत्न प्राप्ति की सूचना उन्हें गांव से आये एक व्यक्ति से मिली थी, समयलाल को उनके आग्रह के कारण 'सिंह मिष्ठान्न भण्डार' से एक किलो मीठा मंगाना ही पड़ा। समयलाल के मेस में भोजन कर रहे पांच विद्यार्थी और थे, उन्हें भी बुला लिया गया। सभी लोग एक साथ मीठा खाकर, समयलाल को पुत्ररत्न प्राप्ति हेतु बधाइयां दी व कामना की कि लड़का उनके परिवार के यश गौरव व प्रतिष्ठा की वृद्धि करे,सभी छात्र अपने-अपने आवास वापस चले गये।

परीक्षायें निकट ही थीं, समयलाल अपनी पूरी शक्ति सामर्थ्य से तैयारी में लगा रहा। जब परीक्षा सम्पन्न हुई तब उसे भारी आत्मसंतोष था क्योंकि उसके सभी प्रश्न पत्र उसकी आकांक्षा के अनुरुप ही हुये थे।

X X X X

परीक्षा के बाद समयलाल घर आया। फसल कट कर खलिहान आ चुकी थी, गहाई का काम प्रारम्भ था, शादी -विवाह भी ग्रीष्मकाल में खूब थे, समयलाल को निमंत्रण पूरा करने का दायित्व सौंपा गया,

समयलाल ने चार बारातें की। लेकिन कोई भी बारात ऐसी न थी जिसमें उससे कर्मकाण्ड व मृत्योपरान्त संस्कार के सम्बन्ध में पूँछताँछ न की गई हो। समाज में शिक्षा का प्रसार था नहीं; लोग भय मिश्रित आश्चर्य से सुनी -सुनाई बातों के आधार पर घिसे पिटे प्रश्न पूँछते रहें ,जैसे-

"क्या आप स्वर्ग-नरक नहीं मानते ? युगों से लोग जो कर्मकाण्ड करते आये हैं क्या वे सब गलत हैं ? क्या पुराणों और शास्त्रों में लिखी बातें असत्य हैं ? आपने पुरातन काल से चले आ रहे कर्मकाण्ड को क्यों नहीं करने दिया ? क्या तेरही करना अनुचित है ? आदि समयलाल अपने ढंग से उपस्थित प्रश्नों के उत्तर देता। उन्हें समझाते हुये कहता कि वेद, पुराण और दुनिया की सारी पुस्तकें वे किसी भी धर्म या जाति की क्यों न हों ;मनुष्यों द्वारा ही लिखी गयी हैं। दुनिया की कोई पुस्तक या कोई ग्रन्थ ईश्वर कृत नहीं है। इसलिये उनमें जो कुछ लिखा है उनमें भी समयानुसार परिवर्तन या संशोधन की गुंजाइश है।जहां तक भवसागर से पार होने की बात है; मोक्ष प्राप्त करने की बात है, तो ये कोई भौतिक पदार्थ नहीं है, यानी जड़ वस्तु नहीं है ; असल में मन का शान्त हो जाना ही भवसागर से पार हो जाना है किसी प्राणी-पदार्थ के प्रति मोह का न होना ही मोक्ष है, 'मोह सकल व्याधिन कर भूला'(गोस्वामी तुलसीदास) कोई किसी को मोक्ष-

फिर वह मुस्काराकर कह देता- अभी समाज में बहुत पिछड़ापन है, बौद्धिक पंगुता है, सोचने-विचारने की क्षमता नहीं है।सब भेड़ की तरह एक दूसरे के पीछे लगे है, जैसा चला आ रहा है; वैसा ही चलाये जा रहें हैं उसमें न विवेक का प्रयोग कर रहे हैं न तर्क की कसौटी पर उसे कस रहे हैं।अज्ञानता,अशिक्षा के कारण सबको सही मानकर मानते चले जा रहे हैं, इसलिये आप लोगो से मेरा यह कथन है कि आप मृत्यु संस्कार पर होने वाले सामान्य खर्च से बचें।अनावश्यक दान-दक्षिणा से अपना हाथ समेटे। आप लोग मिल जुलकर चन्दा से या अन्य किसी साधन से धन राशि एकत्रित करें , उससे गांव में एक दो कमरे बनवाकर स्कूल खुलवायें।अधिक से अधिक स्कूल खुलवाने का प्रयास करें। इससे लोगों में जागृति आयेगी। क्षेत्र में जन-जागरण होगा, अज्ञान अन्धकार सिमटना प्रारम्भ करेगा,..... मैं यह समझता हूँ कि मन में छिपा अन्धकार ; सनातन काल से बने संस्कारों के चिन्ह सहज ही मिटने वाले नहीं हैं लेकिन उनमें प्रश्न चिन्ह लगना तो प्रारम्भ हो जायेगा। कुछ अन्दर अन्दर साहस तो पैदा होगा, मानसिक पङ्गुता के दूर होने में समय तो लगेगा ही.

शिक्षा ही सभी सुधारों की आधार शिला है।अन्धविश्वासों व मूढ़ परम्पराओं को ध्वस्त करने वाली औषधि है। देश-विदेश को देखने- समझने का वातायन है।आत्मविश्वास जगाने वाली है। व्यक्ति की शक्ति है; सम्बल है। इसलिये मेरा आग्रह है कि गाँव -गाँव में स्कूल स्थापित करो। उसके लिये धन की व्यवस्था मिल-जुलकर करो। मृत्यु-भोज व दसगात में जो व्यय होने वाली राशि है, व अन्य संस्कारों के ताम-झाम में जो व्यय होता है, वह धन बचाकर संस्थाओं को दें, क्योंकि जब तक संस्थायें नहीं होगी ; क्षेत्र का उद्धार नही होगा।

संस्थायें ही ज्ञान का मन्दिर हैं, "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" अर्थात ज्ञान के सदृश कुछ भी पवित्र नहीं है। संस्थाओं में जीवित मूर्तियां रहती हैं, उनके बनने ,सवरने से ही देश और समाज का उत्थान होगा ;देश आगे बढ़ेगा,

मुझे इसी बात की पीड़ा है कि हमारे क्षेत्र मे संस्थाओं का अभाव है, जो धनी हैं वे अपने बच्चों को घर से बाहर भेजकर शिक्षित कर देते हैं, लेकिन जन-साधारण के बच्चे तो अशिक्षित ही बने रहते है। गावों में बेरोंजगारी और निर्धनता भी बहुत है, मांत्र कृषि ही जीवन का सहारा है, कृषि में उत्पादन भी संतोषजनक नहीं है,कभी अनावृष्टि तो कभी अतिवृष्टि से -

फसलें मारी जाती हैं अस्पताल भी नहीं हैं झाड़-फूँकपर लोगों का विश्वास है, जादू टोना में विश्वास है।लेकिन ये विश्वास अज्ञानता अशिक्षा के कारण लोगों के मन-मस्तिष्क में धंसे हुए हैं, ज्यों-ज्यों लोगों का भ्रम दूर होता जायेगा, ज्ञान की किरणों फैलती जायेगी, त्यों त्यों अज्ञानता का अन्धकार भी दूर होता जायेगा । इसलिये स्कूल कालेजों का होना बहुत आवश्यक है-

आज़ सारी दुनिया सिमटती जा रही है कोई जमाना था जब दुनिया बहुत बड़ी थी, लोग दूसरे देशों के सम्बन्ध में कुछ जानते भी नहीं थे , नाम तक नहीं जानते थे। दुनिया को चपटी समझते थे, लेकिन अव बैज्ञानिक आविष्कारों के कारण संसार छोटा होता जा रहा है, एक बड़े नगर की तरह बनता जा रहा है। संस्कृतियों का पारस्परिक मिलाप बढ़ता जा रहा है। आदान-प्रदान हो रहा है। विभिन्न देशों के बीच यह आदान-प्रदान विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। वह समय धीरे-धीरे निकट आ रहा है जब हमारी आने वाली पीढ़ी उन तमाम बातों को मानने से इंक़ार कर देगी जो आज हमारी आस्था को केन्द्र बनी हुई है, अभी आप मेरे एक कर्मकाण्ड को त्यागने पर इतना आश्चर्य कर रहे हैं ; हाय तोबा मचा रहे है, और तमाम तरह के प्रश्न पूँछ रहे हैं समाज में प्रचलित अनेक कर्मकाण्ड तब अपने अस्तित्व के लिये संघर्ष करेंगे। कुछ लोग उनके अस्तित्व को बनाये रखने के लिये वकालत करेंगे; तर्क प्रस्तुत करेंगे , लेकिन वे स्थिर न रह सकेंगे। वही कर्मकाण्ड , वही बातें अस्तित्व में रहेंगी ; जो विज्ञान व विवेक की कसौटी में खरी उतरेंगी।

सबसे अधिक शिक्षा की आवश्यकता लड़कियों को है, एक लड़की यदि सुशिक्षित हो जाती है तो उससे पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है ; सुसंस्कृत हो जाता है ; सुधर जाता है। लड़कियो की शिक्षा की ओर तो और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि अन्ध विश्वास के मामले में वे पुरुषों से भी आगे हैं।

लोग समयलाल की बातें ध्यान से सुनते रहते फिर कहते कि वह बहुत सही कह रहे हैं।सच है 'बिना पढ़े नर पशु कहावें' वे माता पिता भी बैरी हैं जो अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते। ऐसे ही एक अवसर पर शिक्षा के सम्बन्ध में फिर एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा- शिक्षा गुप्त धन है ; जिसे कोई छीन नहीं सकता है भाई उसे बटा नहीं सकते हैं, शिक्षा व्यक्ति की सदैव रक्षा करती है ; उसे सम्मान देती है।विद्वान पुरुष का सर्वत्र सम्मान होता है , शिक्षा देश-विदेश में

सदैव सहायता करती है, शिक्षा व्यक्ति को विनय सम्पन्न करती है इसलिये शिक्षा आवश्यक ही नही अनिवार्य है , अतएव शिक्षा के प्रसार में संस्थायें खुलवाने में सबको मुक्त हाथ से दान देना चाहिये , इसी में उनके धन की सार्थकता है ।

# (नौ)

बी०ए० प्रथम वर्ष का रिजल्ट निकल चुका था ; समयलाल को सत्तर प्रतिशत अंक मिले थे । वह मई में दो वार इलाहावाद गया । अंकसूची दूसरी बार जाने पर मिली , उसने अपने आवास की अलग व्यवस्था की ।एक अलग क्वार्टर तलाश कर किराया तय कर लिया । एक माह का किराया दे आया ।

जून का अन्तिम सप्ताह चल रहा था , तभी उसने अपनी माँ व बड़े भाई से कहा- "मैं इस वर्ष इलाहाबाद में रानी को भी रखना चाहता हूँ, उसके न रहने से भाभी को कुछ असुविधा तो होगी, घरेलू कार्यों मे भी परेशानी होगी...." उसकी मां बहुत सयानी थीं , तो भी उसकी देखभाल व सेवा सुश्रुषा के लिये किसी की आवश्यकता नही थी वह घरेलू कार्यो मे भी कुछ सहायता करती थी, इस उम्र में भी वह पर्याप्त स्वस्थ थी, उन्हें कभी बुखार तक नहीं आया था, प्रातःसूर्योदय के तीन घंटे पूर्व वह उठ जाती थी, खट-खुट करने लगती । माँ पुत्र की बात सुनकर चुप रह गयी , लेकिन जगदीश ने कहा- "असाढ़ का महीना है , खेती का काम पानी वरसने पर ही शुरु होगा, है तो महीने -डेढ़ महीने का काम ! फिर तो डोल-डाल का ही काम है, वैसे तो खेती के काम मे घर में चाहे जितने आदमी हो ; कम ही रहते हैं ,काम तो द्रौपदी की चीर की तरह बढ़ता ही रहता है । करो तो काम ही काम है । लेकिन तुम्हारी इच्छा लिवा ले जाने की है; तो लिवा ले जाओ । घर के काम की न पूँछो ।यहाँ सब काम होता रहेगा, इलाहाबाद में पहले अलग क्वार्टर तलाश लो फिर लिवा ले जाओ ।"

समयलाल ने जगदीश को आश्वस्त किया कि क्वार्टर मिल गया है, सब प्रकार की सुविधा है क्वार्टर मुट्ठी गंज में मिला है ।

माँ की आन्तरिक इच्छा रानी को समयलाल के साथ भेजने की नहीं थी, लेकिन उन्हें-

अपने लड़के की किसी इच्छा को अतृप्त भी नहीं रखनी थी ; इसलिये उन्होंने भी अनुमति दे दी।

ससुराल में आने के बाद विद्या का नाम रानी रख दिया गया था, घर में उसे इसी नाम से पुकारा जाता था, पड़ोस के लोग भी इसी नाम से पुकारते थे वह स्वस्थ सुन्दर व तीव्र बुद्धि की थी, लेकिन अशिक्षित थी। गांव में शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण वह अपढ़ रह गयी थी,यद्यपि उसकी पढ़ने की तीव्र इच्छा थी लेकिन गांव में पढ़ने का अवसर ही नहीं था।

जब समयलाल रानी को, जिसकी गोद में चार माह का बच्चा था ; लेकर इलाहाबाद के लिये गांव से चला तो कुटुम्ब और गॉव के लोग आश्चर्य व्यक्त करने लगे। मन्नालाल ने कहा- "समयलाल बड़ा विचित्र है, बताओ ! पत्नी को भी साथ ले जा रहा है, वह विद्यार्थी है , विद्यार्थी का जीवन तपस्वी का ज़ीवन होता है, उसे सुखार्थी नहीं होना चाहिये। लेकिन वह तो सुखोपभोग में लगा हुआ है, वह पढ़ेगा क्या ? शहर में एक ही व्यक्ति के खर्च को पूरा करने में राम से काम पड़ता है, फिर एक व्यक्ति को वे मतलब और देना पड़े ; कितनी परेशानी है ! "
अशर्फी ने कुछ झुंझलाकर कहा- "जगदीश के पास क्या कमी है ? उसके सामर्थ्य है वह दो नहीं, चार का खर्च दे सकता है ; फिर समयलाल की क्या बात करते हो ? है कोई उस जैसा समझदार बुद्धिमान विद्यार्थी ! है कोई उसकी टक्कर का क्षेत्र में ! वह सभी परीक्षाओं में फर्स्ट आया है ; कभी सेकण्ड नहीं आया। उसे अच्छे अंक प्राप्त करने पर पुरस्कार भी मिले हैं, वह पत्नी को कुछ सोचकर ही ले जा रहा है, यों ही खर्च बढ़ाने के लिये नहीं ले जा रहा, "
केवल ने गम्भीर होकर कहा- "अशर्फी ठीक कह रहा है। समयलाल किसी खास मतलब से ही 'रानी' को साथ में लिये जा रहा है, " लेकिन समयलाल चर्चा का विषय कुछ दिनों तक बना रहा क्योंकि जब गॉव में कुछ भी नयी बात होती है तो वह चर्चा का विषय बन ही जाती है।

समयलाल का क्वार्टर मुठ्ठी गंज में था जो विश्वविद्यालय से दूर था ; एकान्त भी था, रानीअशिक्षित थी। ग्रामीण वातावरण में पली थी, उसे ट्रेन देखने का भी अवसर नहीं नसीब हुआ था। समयलाल उसे शिक्षित ,सुयोग्य, बनाना चाहता था, अपना सारा समय पढ़ने-पढ़ाने; अध्ययन अध्यापन में लगाना चाहता था। बाजार से उसने स्लेट-बत्ती व प्रारम्भिक कक्षा की पुस्तके खरीदीं, रानी को पढ़ाना शुरु किया।स्वयं भी अध्ययन मे लग गया।

रानी में सीखने का उत्साह था, लगन थी ; बुद्धि थी, प्रतिमा थी, उसे अवसर नहीं मिला था, समयलाल ने वह अवसर भी उपलब्ध करा दिया।

रानी को नगर का जीवन अच्छा लगा। उसे पूर्ण स्वतंत्रता मिल गयी। जिस प्रकार वह अपने माता-पिता के साथ रहती थी, उसी प्रकार इलाहाबाद में पति के साथ रहने लगी, समयलाल पहले से ही परदा प्रथा का विरोधी था , उसने घूंघट काढने को पहले ही मना कर दिया था , पड़ोस भी अच्छा था, बगल में एक मुस्लिम परिवार भी था, मुहल्ले में पंडो की बस्ती अधिक थी ,शहर में सब अपने-अपने काम में सुबह से शाम तक व्यस्त रहते ,

कहते हैं रगड़ से चमक आती है ; रानी ने भी अपने श्रम और उत्साह से जल्दी ही पढ़ना सीख लिया। अभ्यास ने उसे कुछ से कुछ बना दिया। उसके सामने एक आकर्षक विस्तृत संसार का दृश्य उपस्थित होने लगा। उसे नई-नई बातें जानने व समझने से प्रसन्नता होने लगी , उसकी सीखने की गति में भी बृद्धि होने लगी। उत्कट रुचि , उत्साह एवं पति के प्रोत्साहन-निर्देशन के कारण उसने तीन महीने में ही कक्षा दो की योग्यता प्राप्त कर ली, मार्च तक मे उसने कक्षा पांच तक का योग्यता प्राप्त कर ली। पति-पत्नी में पढ़ाई की प्रतियोगिता सी थी।

x x x x

मार्च के अन्तिम सप्ताह मे समयलाल की परीक्षा समाप्त हुई। तभी वह सपरिवार घर आया। गांव-घर वालों ने देखा कि रानी पहले से अधिक स्वस्थ सुन्दर व आकर्षक है, मां नाती को देखकर बहुत प्रसन्न हुई। नाती दौड़ने लगा था, जेठानी निर्मला भी प्रसन्न थी, उसके दोनों बच्चे अनुज को पाकर गद्‌गद् थे। घर में प्रसन्नता की फुहार सी पड़ गयी थी।

एक दिन सायं रानी ने सास मां व जेठानी निर्मला से कहा- "आज मैं रामायण सुनाऊँगी आप लोगों को, " दोनों को ही उसके इस कथन से आश्चर्य हुआ क्योंकि रानी तो अशिक्षित थी। लेकिन उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि रानी ने इलाहाबाद जाकर पढ़ना -लिखना सीख लिया है। फिर जब सायं उसने रामायण पढ़कर सुनायी तो सास माँ व दीदी को भी बताया कि उसने किस प्रकार परिश्रम करके लिखना-पढ़ना सीखा है, फिर उसने निर्मला से कहा- "दीदी; तुम सायं कुछ समय पढ़ाई के लिये दो, मैं तुम्हें पढ़ना सिखा दूंगी।रामेश्वर गुरु आना में जाता ही है,उसकी स्लेट बत्ती में तुम 'क' 'ख' 'ग' वर्णमाला रोज सीखो। तुम्हें बड़ा मजा आयेगा।

बड़ा अच्छा लगेगा।

रानी लगभग दो माह तक गॉव में रही।इस अवधि में उसने सास मॉ व दीदी को पूरी रामायण पढ़कर सुना डाली। दीदी को पूरी वर्णमाला का ज्ञान करा दिया। दो-दो अक्षर मिलाकर पढ़ते भी बनने लगा, इससे निर्मला का उत्साह बढ़ा, उसने भी मन ही मन संकल्प किया कि वह भी जल्दी ही रामायण पढ़ने की क्षमता प्राप्त करेगी। सास माँ दुलारी को भी पूरी रामायण सुनने के बाद अनेक अच्छी -अच्छी बातों का ज्ञान हुआ, परिवार में परस्पर एक दूसरे के प्रति किस प्रकार का प्रेम होना चाहिये, पिता-पुत्र, भाई-भाई सास-बहू, चाचा-भतीचा,नौकर,-चाकर व अन्य व्यक्तियों से कैसे सम्बन्ध होने चाहिये, इसकी शिक्षा उन्हें मिली। जीवन में आई हुई विषम परिस्थितियों का सामना किस धैर्य और साहस के साथ किया जाय, जीवन का धर्म क्या है, इन बातों की भी शिक्षा उन्हें मिली। श्रीराम,सीता,भरत,लक्ष्मण,हनुमान आदि अनेक पात्रों के चरित कितने अनुकरणीय हैं समाज के लिये कितने उपयोगी हैं, घर- परिवार ,समाज की सुख -समृद्धि व शान्ति के लिये उनके जीवन चरित कितने उपादेय हैं, इन बातों का ज्ञान उन्हें अपने आप हो गया।

सीता को अपना आदर्श मानकर रानी अपनी सास माँ की सेवा बड़ी तत्परता से करती रही। निर्मला दीदी को घरेलू कार्यों मे भरपूर सहयोग देती रही , दोनों भतीजों को भी यथाशक्ति पढ़ाई में सहायता करती रही। दो माह की अवधि में उसने अपनी सेवाभावना व आज्ञाकारिता से घर के सभी लोगों का हृदय जीत लिया। सास माँ के मुरझाये चेहरे में आत्मिक प्रसन्नता की चमक झलकने लगी। घर में सुख शान्ति का साम्राज्य हो गया।यह सब परस्पर प्रेम और सुमति के कारण था जिसका गांव के लगभग सभी घरों में अभाव था। घर -घर में ईर्ष्या-द्वेष कलह की आग लगी थी, लेकिन जगदीश के घर का दृश्य सबसे बिल्कुन भिन्न था, वहाँ तो कलह अशान्ति की परछाई भी दूर तक नहीं दिखाई पड़ती थी।

X X X X

समयलाल बी०ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया। बी०ए०में मात्र तीन बालक प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये थे, इलाहाबाद विश्वविद्यालय अपने श्रेष्ठ स्तर के लिये प्रसिद्ध था, वहाँ से प्रथम आने का कोई मतलब होता था, उसकी श्रेष्ठ स्तर की सफलता से उसके घर में उत्सव जैसा आनन्द छा गया।

समयलाल जून के अन्तिम सप्ताह में रानी को लेकर इलाहाबाद ,आगे की कक्षा में अध्ययन के लिये ,पुनः आया। उसने संस्कृत विषय से एम.ए. करने का विचार बनाया। संस्कृत के साथ-साथ उसने भारतीय इतिहास व संस्कृति का विशद् अध्ययन करने का भी संकल्प बनाया। जब वह बी०ए० का छात्र था तब भी उसने पाठ्येत्तर विषयों व प्रसिद्ध लेखकों की अनेक पुस्तकों का गम्भीरता से अध्ययन किया था। वह विश्व विद्यालय के पुस्तकालय का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहता था ,कि विद्याध्ययन का जो सुयोग उसे उपलब्ध हुआ था , उसको वह पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहता था। यह ईश्वर की असीम कृपा ही थी कि उसे अपनी ज्ञान पिपासा को तृप्त करने का सुखद सौभाग्य मिल गया था अन्यथा उस जैसे अनेक युवक अपना सारा जीवन तो घोर अज्ञानता में ही गुजार देते हैं; खेती और पशुपालन में ही काट देते हैं ,

रानी की उम्र उन्नीस वर्ष की हो रही थी, उसका पुत्र दौड़ने लगा था। उसे सभी लोग प्यार से 'आशीष' कहते थे, समयलाल ने उसे एक इण्टरमीडिएट कालेज के प्राचार्य से मिलकर टेस्ट बेस से कक्षा आठ में प्रवेश दिला दिया , प्राचार्य ने उस पर अतिशय कृपा की थी,

समयलाल की तरह रानी भी नियमित छात्रा के रुप में विद्यालय जाने लगी,समयलाल की कक्षायें प्रातः कालीन थी, वह सामान्यतः बारह बजे तक आ जाते थे, रानी साढ़े दस बजे जाती थी, इस बीच में 'आशीष' पड़ोस के एक दम्पत्ति के पास रहता था, दम्पत्ति के पास कोई विशेष कार्य नहीं था , वह गॉव से शहर आ गये थे, क्योंकि गॉव में उनके पास न अधिक जमीन थी ; न गॉव में किसी प्रकार की सुविधा थी। वर्षा ऋतु में बड़ी परेशानी थी। एक मात्र लड़का सेना में कैप्टन पद पर था,उसी ने माता पिता की सुख सुविधा के लिये शहर में एक मकान बनवा दिया था, वही दंम्पत्ति समयलाल का पड़ोसी था।

X X X X

एक दिन रविवार को समयलाल के गॉव के एक विद्यार्थी श्याम उससे मिलने आये। गॉव के रिश्ते से श्याम समयलाल के चाचा लगते थे। उम्र में विशेष अन्तर नहीं था, श्याम ने रानी को देखा कि वह घूंघट नहीं काढ़ती है, वह बालिकाओं की तरह रहती है ; सबसे बातें करती है ; परदा नही करती है तो श्याम को बहुत बुरा लगा। श्याम का साहस नहीं हुआ कि वह बहू के चेहरे की ओर नजर उठाकर देख सके। अत्यधिक लज्जा व संकोच के कारण वह रानी की ओर-

निहार भी न सका। वह कुछ समय रुकने के बाद चलने लगा तो समयलाल ने आग्रह किया कि खाना खाकर जाओं। लेकिन श्याम रुका नहीं। वह चला गया, किन्तु चलते-चलते उसने समयलाल से नाराज होकर डाटते हुये कहा- "समयलाल! तुमने सारी मर्यादा भङ्ग कर दी है, सारी इज्जत धूल में मिटा दी। सब मान-मर्यादा घोटकर पी गये" चाचा के मुँह से यह सुनकर समयलाल चकित रह गया। साश्चर्य उसने पूँछा कि बात क्या है चाचा जी ? "श्याम ने कहा- "तुम पत्नी को ऐसे रखते हो मानों वह बहू नहीं ; बहन है। बहू को मर्यादित ढंग से रहना चाहिये, घूँघट काढ़ना चाहिये, अपने सयानों से परदा करना चाहिये............"

समयलाल ने विनम्रता पूर्वक कहा- "चाचा जी ! रानी का मैं ने आर्य कन्या इण्टरमीडिएट कालेज में प्रवेश दिला दिया है, वह रोज पढ़ने जाती है कभी अकेले रिक्शे में जाती है; कभी पैदल जाती है, अब मैं उसे साइकिल चलाना भी सिखा रहा हूँ घूंघट काढ़ेगी तो वह यहां हँसी का पात्र तो बनेगी ही, ये सब वह कर भी नहीं सकेगी , चाचा जी! मैं उसे इसीलिये यहां लाया हूँ कि उसमें इतना आत्मविश्वास और साहस भर जाय कि वह गाँव में भी घूँघट काढ़ना अपने आप बन्द कर दे। घूँघट काढ़ने व परदा करने को मैं स्वयं अच्छा नहीं समझता हूँ। इससे तो नारी का व्यक्तित्व ही घुट कर रह जाता है।उसका स्वाभाविक विकास रूक जाता है। उसके बहुत से गुण दबे पड़े रह जाते है ;सच बताऊँ चाचा !मैं घूँघट और परदा-प्रथा का विरोधी हूँ। मैं इसे नारी जाति का अपमान समझता हूँ, बदनुमा कलंक समझता हूँ, मुँह तो वह छिपाये चाचा, जिसने कोई अपराध किया है ; समाज-विरोधी कार्य किया है, वह क्यों छिपाये जो अहर्निश समाज व घर की सेवा में घड़ी की सुई की तरह गतिमान रहती है..................नारी को अशिक्षित रखकर, घूँघट काढ़ने व परदे में रहने का अभिशाप देकर भारतीय हिन्दू समाज ने उसके साथ न्याय नहीं किया है । समाज के विवेकशील लोगों का कर्त्तव्य है कि वे इस अपमानकारी प्रथा को समाप्त करने हेतु आगे आयें। चाचा जी। आप तो विश्वविद्यालय के छात्र है, आप देखते हैं कि विश्वविद्यालयमें लड़कियां पढ़ने आती हैं उनमें से कई विवाहित कन्यायें भी हैं, वे भी किसी की बहू,पतोह होगी। लेकिन वे घूँघट नहीं काढ़ती हैं इस मामले में आपको चाचा जी ; हताश नहीं करना चाहिये। आप स्वयं गम्भीरता पूर्वक सोंचे कि यह सब कहाँ तक उचित है !

श्याम के पास कोई उत्तर नहीं था वह केवल परम्परा और रूढ़ि की ही बात करता रहा फिर वह अपने क्वार्टर चला गया। लेकिन रास्ते भर समयलाल की बातों पर चिन्तन - मनन करता रहा, उसके अन्तर्मन से भी यह बात स्फुलिंग की तरह निकल आती थी कि घूँघट और परदा-प्रथा के पीछे कोई सारपूर्ण तथ्य नहीं है।महापुरुषों ने भी इसका विरोध किया है। जो प्रथायें पुरुषों के लिये अच्छी नहीं हैं, वे नारियों के लिये अच्छी कैसे हो सकती हैं ? आखिर समाज रुपी गाड़ी के दोनों ही तो पहिये हैं। जब दोनों की स्थिति व गति समान होगी तभी तो गाड़ी अच्छे ढंग से चल सकेगी। समयलाल ठीक ही कर रहा है। उसमें ज्ञान है ; विवेक है; प्रतिभा है; तभी तो वह परम्परा के विरुद्ध बोल रहा है ; उसे तोड़ रहा है, गांव में उसकी अगुवाई कर रहा है, सबमें तो ऐसा साहस नहीं है,

श्याम अपने क्वार्टर पहुंचने के बाद अपने साथियों से भी वह सब बताया जो उसने समयलाल के यहां देखा था, उसके अधिकांश साथियों ने समयलाल के कार्यों का समर्थन किया, कुछ ने तो आलोचना और निन्दा भी की। इस पर रतीभान ने हंसते हुये जोर से कहा-

''लीक लीक गाड़ी चले, लीकहिं चलें कपूत

लीक छोड़ तीनों चलें, सायर ,सिंह, सपूत''

अरे, सबमें परम्पराओं को तोड़ने का साहस नहीं है बताओ, तुम औरत से घूँघट कढ़वाना बन्द करा सकते हो ? क्या तुम अपनी पत्नी को एक बच्चे की माँ बनने के बाद अपने साथ रखकर पढ़ा सकते हो ? क्या उसको स्कूल में प्रवेश दिलाकर नियमित छात्रा बना सकते हो ? बच्चू ! समयलाल की बात न करो, वह अद्भुत आदमी है बताओ! उसने बाप का दशगात नहीं करने दिया। महापात्र से पिण्डदान नहीं कराया। किसमें ऐसा साहस है कि इन स्थापित कर्मकाण्डों को अमान्य घोषित कर दे। उसमें अद्भुत साहस है, तभी तो पत्नी को इलाहाबाद लाकर पढ़ाने लगा है कौन करेगा ऐसा ? वह सिंह है, सपूत है , तभी तो लीक छोड़कर चल रहा है, उसकी छोड़ो, हिम्मत हो तो तुम भी वैसा करके दिखाओ।

समयलाल को आभास हो गया कि रानी में प्रतिभा है ; क्षमता है जो अव तक सुषुप्तावस्था में थी, अवसर मिलने पर वह दिखने लगी है , उसमें निरन्तर निखार आने लगा है, उसे इस बात से प्रसन्नता थी कि रानी ने घर के वातावरण में मधुरता, समरसता व सुख शान्ति घोल दिया है, वह अपनी जेठानी व सास माँ की आँखों का तारा बन गयी है, उसके गॉव में -

और घर थे, जहाँ कलह, ईर्ष्या, द्वेष, घुटन थी, घरो में अपना पराया के कारण जलन थीं; एक दूसरे के प्रति शिकायतें थीं ; घरेलू कार्यों में हिसका था, एक दूसरे के प्रति अन्दर ही अन्दर द्वेष था; पीठ पीछे एक दूसरे की आलोचनायें करते थे, लेकिन जगदीश के घर में सुख- शान्ति का स्वर्ग था, स्वर्ग का अवतरण घर में रानी के कारण हुआ था, उसके आचरण, सद् व्यवहार मधुर वाणी के कारण घर के लोग तो प्रसन्न थे ही, पड़ोसी घरो के लोग भी उसकी प्रशंसा करने लगे थे।

रानी के आचरण व उसके कार्य व्यवहार में जो अनुकूल परिवर्तन हुआ, उससे समय्रलाल का प्रभाव व कद घर-गांव में बढ़ गया। रानी के घूँघट न काढ़ने पर ग्रामवासी कुछ भी अनुचित नहीं मानने लगे थे। गाँव के बुजुर्ग भी यह कहने लगे कि मर्यादा आवरण का नहीं आचरण का होता है, असली घूँघट तो मर्यादित आचरण का है। घर के लोगों से ठीक से न बोलना सास-ससुर से कटु भाषण करना ; अनर्गल बोलना;पास-पड़ोस में विवाद करना; गाली-गलौज करना ; घर में मुँह फुलाये रखना ; घर के कार्यो सें जी चुराना। अपनी ही सुख-सुविधा का ध्यान रखना और घूँघट काढ़ना तो ऐसे घूँघट काढ़ने का क्या अर्थ ? महावीर दादा बताया करते थे कि घूँघट काढ़ना व परदा प्रथा मुस्लिम युग की देन है बहन वेटियां को कुदृष्टि से बचाने के लिये समाज के शुभ चिन्तकों ने मुस्लिम सभ्यता के प्रभाव से परदा-प्रथा अपना लिया था, तत्कालीन परिस्थितियों में ऐसा करना उचित था, लेकिन अब तो परिस्थितियाँ बदल गयीं है ; युग बदल गया है, अब तो हमीं शासक हैं ; हमीं शासित हैं ; हमारे ही वीच के लोग प्रशासन में हैं, अब जनता का शासन ; जनता के लिये -जनता द्वारा है, इसलिये घूँघट काढ़ने की बात अब नहीं है ; न परदा- प्रथा को प्रचलन में बनाये रखने की आवश्यकता है। लेकिन समाज में एक बार जो बात रुढ़ि या रीति बन जाती है ; चलन में आ जाती है ; वह धीरे-धीरे ऐसे जड़ जमा लेती है कि उसे हटाना या मिटाना बड़ा कठिन हो जाता है ; रीति कितनी ही अप्रासांङ्गिक क्यों न हो जाय ; सामान्यत : लोग उससे चिपके ही रहते हैं , बहुत प्रयास के बाद वह धीरे-धीरे मिटती है,

गाँव के लोग भी यह अनुभव करने लगे थे कि लड़कों की तरह लड़कियों को पढ़ने-लिखने का अवसर मिलना चाहिये। उन्हें चाहार दीवारी तक ही नही सीमित रखा जाना चाहिये, जब लड़कियां पढ़ लिख जायेंगी ,तब वे सुयोग्य बहू, सुयोग्य बहन, सयोग्य मातायें बन सकेंगी,

समाज में जागृति आयेगी। इससे वांछित सामाजिक सुधार होगा और सामाजिक परिवर्तन भी होगा।

समयलाल को देखकर यह शिक्षा गाँव के हर परिवार को लेनी चाहिये। उसने पत्नी को शिक्षित व सुसंस्कृत करके घर की प्रतिष्ठा बढ़ा दी है क्या उसके घर में अन्य घरों की तरह टिन्न-फुस सुनाई पड़ता है ? कितनी शान्ति हैं उसके घर में! उसकी पत्नी जैसी बहुयें यदि हर घर में आ जायॅं तो हर घर स्वर्ग बन सकता है। स्वर्ग धन से नहीं बनता है, धन से तो हमारी भोतिक आवश्यकतायें ही पूरी होती है, अधिक धन से तो अशान्ति ही उत्पन्न होती है, ग्राम्य जीवन स्वर्ग कहा जाता था इसलिये कि यहां आपसी प्रेम था ; सद्भाव था, साहचर्य था , परस्पर सहयोग की भावना थी, लोगों में सुमति थी, जहां यह सब है ; वहाँ स्वर्ग है, जगदीश के घर में यह सब है।

++++

(दस)

समयलाल इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय में एम०ए० की परीक्षा देकर गांव आया, रानी ने भी हाई स्कूल की परीक्षा दी थी, वह भी साथ में गांव आयी, चारों ओर पढ़े-लिखे लोगो मेंयह चर्चा होने लगी कि समयलाल की योग्यता का इस क्षेत्र में कोई व्यक्ति नहीं है, वह संस्कृत भाषा से एम०ए० है, वह महापण्डित है, क्षेत्र के बड़े -बड़े पण्डित उसके सामने बौने लगते थे, वे उसका ऊपर से बड़ा सम्मान करते थे, लेकिन वे अन्दर ही अन्दर उससे भयभीत भी रहते थे क्यों कि संस्कृत भाषा में उनका ज्ञान व अध्ययन अल्यल्प था, जहाँ पेड़ नहीं वहाँ रेंड ही पेड़ माना जाता है ; वाली कहावत थी, समयलाल उनके बीच में एक विशाल वृक्ष की तरह था।

पुरोहित समयलाल को 'दादू भैया' शब्द से सम्बोधित करने लगे थे, वे 'दादू भैया' के सामने न तो संस्कृत में कुछ बोलते थे, न संस्कृत व्याकरण के सम्बन्ध में कुछ कहपाते थे। कभी कभी पणिनि की अष्टध्यायी की बात अवश्य करते थे, लेकिन क्षेत्र के अनेक पुरोहितों ने न तो अष्टध्यायी पढ़े थे, न उसके सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखते थे कुछ लोगों ने तो केवल नाम ही सुन रखा था ऐसी स्थिति मेंवे समयलाल से संस्कृत भाषा व उसके व्याकरण के सम्बन्ध में क्या चर्चा करते ! उनकी आकांक्षा तो समयलाल से ही सुनने की रहती। चर्चा छिड़ने पर समयलाल उनसे वेदों उपनिषदों के सम्बन्ध में अवश्य कुछ बताता। वेदों के अपौरुषेय होने के सम्बन्ध में वह अपनी बात कहता।अपने आचार्यों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों को बताता। उसका सारांश था कि वेदों के मंत्र भिन्न-भिन्न ऋषियों द्वारा चिन्तन के उच्च्च शिखर पर पहुॅचने के बाद रचे गये हैं, उनकी दृष्टि समस्त मानव-जाति पर थी, वेदों में सन्निहित ज्ञान समस्त मानव जाति के लिये है; वेद ऋषि प्रणीत है ; लेकिन उनमें किसी का नाम सृष्ठा या रचयिता के रुप में नहीं है.........

'दादू भैया' की प्रशंसा में कोई कोई पंडित कभी कभी इतने विशेषणों का प्रयोग करते कि उनकी प्रशंसा चापलूसी के दायरे में पहुॅच जाती, समयलाल को प्रशस्ति-स्तवन व प्रशंसा पसन्द नहीं थी, उसने कई बार आपत्ति भी प्रगट की ,यह भी कहा कि ज्ञान का क्षेत्र असीम है ; उसने अब तक जो जाना है ; वह अत्यल्प है , देवभाषा का साहित्य विपुल है ।उसका व्याकरण बहुत गूढ़ है ; सिद्धात परक है। उसने अब तक जो जाना है, वह तालाब में एकत्रित-

जलराशि के एक बूँद से भी कम है..... लोग उसके इस कथन को अतिशय विनम्रता की श्रेणी में ले लेते ; भले ही वह सही कहता रहा हो।

X X X X

अप्रैल के अन्त में समयलाल का रिजल्ट निकला, वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ ; प्रथम पोजीशन पाया। विश्व विद्यालय में संस्कृत विभाग में तेरह लड़के एम०ए० फाइनल में थे, समयलाल का स्थान सबसे ऊपर था, उसके प्रोफेसरों का भी यही अनुमान था,

मई के अन्त में हाई स्कूल का रिजल्ट निकला। रानी भी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गयी, पूरे गॉव में यह सूचना फैल गयी कि रानी हाईस्कूल पास हो गयी है गॉव में एकमात्र वही पढ़ी-लिखी व हाईस्कूल पास महिला बन गयी। इससे उसके सम्मान में और अधिक वृद्धि हो गयी।

X X X X

समयलाल बहुधा इस विचार में डूबा रहता कि अब वह क्या करे ? सामने कई विकल्प थे नौकरी, समाज-सेवा ; राजनीति। वह प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठ सकता था, किसी अच्छे पद को पा सकता था, लेकिन इससे क्या वह समाज में ब्याप्त कुरीतियों को दूर करने में सहायक हो सकता है ? सम्भवतः नहीं। क्या वह समाज सुधारक बन सकता है? क्या वह समाज में विद्यमान कुरीतियों को दूर कर सकता है जो समाज को रुग्ण बनाये हुये हैं ? यह कार्य भी अत्यन्त दुष्कर है ; विशाल है तो कया इससे दूर रहा जाय ! इसमें हाथ न डाला जाय ! यह सोचना भी का पुरुषता है समाज जो ईश्वर का व्यक्त रुप है, सच्ची ईश्वरोपासना तो जन सेवा ही है ;जन कल्याण करना ही है यह कार्य यद्यपि अति पावन है, पुनीत है लेकिन इसका रुप क्या हो ? क्या समाज-सेवा के लिये राजनीति में जाना उचित रहेगा ? क्योंकि राजनीति भी तो समाज -सेवा का एक रुप है उसके माध्यम से समाज सेवा प्रभावी रुप से की जा सकती है लेकिन राजनीति में सफलता के लिये जिस मनोवृत्ति की आवश्यकता है, जो विकार उसमें धीरे-धीरे घुलते जा रहे हैं, उस दृष्टि से मैं सम्भवतः राजनीति में उपयुक्त न रहूँ। तो फिर समाज सेवा का कोई क्षेत्र क्यों न चुना जाय !

समाज -सेवा में गौतम बुद्ध ने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। कबीर, नानक, राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा ज्योतिराव फुले, स्वामी विवेकानन्द,-

महात्मागांधी पेरियार ई०वी० समरस्वामी आदि महापुरुषों ने अपने-अपने ढंग से समाज की विकृतियों को दूर करने का प्रयास किया, वे जात-पाँत,छुआछूत , ऊँच-नीच के विरुद्ध कार्य करते रहे। मानव- समानता; सामाजिक न्याय की बात करते रहे। समाज में धर्म के नाम पर व्याप्त पाखण्ड, को दूर करने व पुरोहितवाद के विरुद्ध जन जागृति करते रहे। स्मामी विवेकानन्द ने तो यहॉ तक कहा था- ''स्मृति और पुराण सीमित बुद्धि वाले व्यक्तियों की रचनायें हैं और भ्रम,त्रुटि, प्रभाद, भेद तथा द्वेषभाव से परिपूर्ण हैं । रामकृष्ण , बुद्ध,चैतन्य नानक , कबीर आदि सच्चे अवतार हैं क्योकि उनके हृदय आकाश के समान विशाल हैं ...........
पुरोहितों की लिखी हुई पुस्तकों ही में जाति जैसे पागल विचार पाये जाते हैं। ''

तथ्य यह हैं कि दुनिया के और किन्हीं देशों में जात-पाँत और छुआछूत नहीं है, दुनिया का गुरु कहलाने वाले भारत में यह विकृति अत्यन्त विध्वंशकारी है।यह भारतीय मानस में गहराई से जड़ जमाये है।

गावों में बड़ी सामाजिक विषमता है। जातिवादी भावना, छुआछूत ,पाखण्ड तथा असंगत कर्मकाण्ड का बोलबाला है। समाज में समता और सत्य ज्ञान लाने का भरसक प्रयास करना आवश्यक है।

सारे सुधारों की जड़ शिक्षा है 'नान्य पन्था विद्यतेअयनाय अर्थात 'शिक्षा के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है, क्यों न सारी शक्ति ,शिक्षा प्रसार व संस्थाओं के खोलने में लगा दी जाय।

X X X X

भारतीय संविधान ने सभी नागरिकों को समानता का अधिकार दिया है, कानून की दृष्टि मं सभी समान है। धर्म, वंश, जाति, लिङ्ग, जन्म स्थान,आदि के आधार पर भेदभाव करना कानून के विरुद्ध समझा जायेगा,अस्पृश्यता का अन्त कर दिया गया है। किसी भी रूप में अस्पृश्यता का आचरण करना कानून की दृष्टि में दण्डनीय अपराध होगा। सभी नागरिकों को स्वतंत्रता का भी अधिकार मिला हुआ है। उन्हें भाषण ,लेखन एवं अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार है सार्वजनिक स्थानों में जाने का अधिकार है। यदि कोई जलपान गृह या होटल चला रहा है तो वह उसमें जाने से किसी को रोक नहीं सकता है लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं है, गॉव का ब्राह्मण यदि होटल खोल ले, तो उसमें कोई निम्न जाति का व्यक्ति जाकर चाय नहीं पी-

सकता है, यदि पान की दुकान खोल ले, तो पान उसे उस प्लेट में नहीं देगा, जिसमें अन्य व्यक्तियों को देता है, उनके मस्तिष्क में जाति वंश के ऐसे संस्कार गड़े हुये है ;वंश -परम्परा से प्राप्त विशेषाधिकार के कारण जो मानसिकता बन गयी है, जो संस्कार बन गये है ; वे इस सत्य के विपरीत हैं कि सभी मनुष्य समान है। इसी तरह निम्न जाति के लोगों के मस्तिष्क में यह बात जमी है कि जन्म से ही कोई ऊँचा है , कोई निम्न हैं, कोई शुद्ध है; कोई अपावन है ; दुर्भाग्य की बात यह है कि इस प्रकार का विष अनेक धर्मग्रन्थों एवं तथा कथित सर्वज्ञ देवताओं और ऋषियों के मुख से भी उगलवाया गया है कि अमुक वर्ण, वर्ग एवं जाति जन्म से ही ऊँचे तथा पावन है तथा अमुक नीच और अपावन हैं ; अस्पृश्य है ...

वैदिक युग में ऐसा नहीं था ऋग्वेद् की ऋचाओं में ऐसे विचार कहीं नहीं मिलते। जाति-वंश का कोई महत्व नहीं था।सदाचार और ज्ञान का महत्व था।चरित्रवान ,शीलवान,आचरणवान;ज्ञानवान ही श्रेष्ठ माना जाता था, जिसमें ,अहिंसा,तय,त्याग था, वही श्रेष्ठ था जो समर्पित भाव से बहुजन हिताय,बहुजनसुखाय लगा था वही श्रेष्ठ था आज भी जिसकी दृष्टि में सभी मानव समान है ; जो एकनिष्ठ भाव से उनके कल्याण में लगा है ; वही श्रेष्ठ है, और ये श्रेष्ठ जन ही देवी, देवता हैं जो इन गुणों के विपरीत है ; वे ही निम्न हैं। जन्म के आधार पर किसी को निम्न या उच्च नहीं कहा जा सकता है।लेकिन समाज में यह विषैली विकृति जड़ जमाकर बैठ गयी है कि जन्म से ही कोई निम्न या उच्च बन जाता है ; समझ लिया जाता है, इस विकृति को दूर करने का एक ही उपाय है- शिक्षा, दूसरा कोई उपाय नहीं है।

X X X X

समयलाला इलाहाबाद में ही जमा रहा। रानी को उसने वहीं विश्व विद्यालय से बी०ए० करवाकर एल०टी० में प्रवेश दिला दिया। रानी तो एल०टी० क़रने लगी ; समयलाल वहीं एक इण्टरमीडिएट कालेज में अध्यापन करने लगा,आशीष भी प्राथमिक पाठशाला में जाने लगा, जगदीश का बड़ा पुत्र रामेश्वर भी इलाहावाद में आकर उन्हीं की देखरेख में हाई स्कूल में पढ़ने लगा।

++++

## (ग्यारह)

समयलाल के पड़ोस में एक मुस्लिम परिवार था, लगातार कई वर्षों से अगल-बगल रहने व पारस्परिक विचारों में समानता के कारण आपस में धीरे-धीरे घनिष्ठता उत्पन्न हो गई, कभी इफ़्तखार हुसेन समयलाल के यहाँ आ जाते तो कभी समयलाल उनके यहाँ पहुँच जाते, आपसे में कभी-कभी चर्चायें भी होती।चर्चा सामान्यतः छुआछूत ,मानव-मानव के बीच जाति व धर्म को लेकर असमानता, व विषमता तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों व बुराइयों के ऊपर ही होती रहती। इफ़्तखार हुसेन को भी धार्मिक संकीर्णता से चिढ़ थी। धर्म के आधार पर मुल्क का बंटवारा उसे नागवारा लगा था, लेकिन वह अपने बल पर विभाजन रोक भी नहीं सकता था। उसके वश में तो यह था कि वह पाकिस्तान निर्माण की बात करने वालों से बहस करे ; पूँछे कि देश का विभाजन क्यों हो ? क्याउनके बाप दादे इसी भूमि में पल पोष कर बड़े नहीं हुये ? क्या उनकी लाशें इसी भूमि में नहीं दफ़नायी गईं ? क्या हिन्दू-मुसलमान शताब्दियों से एक ही स्थान में भाई-भाई की तरह नहीं रहते आये ? क्या भाई-भाई के बीच विवाद नहीं होते ? क्या हिन्दू राजाओं के यहाँ मुसलमांन अच्छे पदों पर नहीं थें ? क्या मुस्लिम शासकों व मुगल बादशाहों के यहाँ हिन्दू अच्छे पदों पर नहीं थे ? क्या हिन्दू-मुसलमानों की एक ही भूमि नहीं है ? क्या वे एक ही देश में साथ-साथ नहीं रह सकते ? बँटवारा किसका ? भूमि तो सब वही है, निवासी सब वही है फिर बॅटवारा क्यों ? बँटवारा तो सियासी लोगों की एक चाल थी, जिससे वे अपनी ख्वाहिशें पूरी कर सकते थे, कोई प्रधानमंत्री बनना चाहता था ; कोई राष्ट्रपति, तो कोई राज्यपाल तो कोई मंत्री ; नही तो बँटवारा का कोई औचित्य नहीं था, हिन्दू-मुसलमान तो एक सूत्र में बंधे थे, तभी समयलाल उनकी बातों से सहमति व्यक्त करते हुये कहता- "सच है ; मैं ने तो 'संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक में जिसकी भूमिका पंडित जवाहरलाल नेहरु ने लिखी है ; पढ़ा है कि एक बार जहाँगीर जब कश्मीर गया, तब वहाँ उसने कुछ ऐसे मुस्लिम राजे भी देखे जो सती-प्रथा को मानते थे तथा जिनका शादी विवाह हिन्दू घरानों में होता था , कोई भेदभाव नहीं था।

इफ़्तखार हुसेन ने भाव- विहल होकर कहा- "मिट्टी की मूरतों में समझ है तू खुदा है; खाके वतन का मुझको , हर जर्रा देवता है," इकवाल के ये भाव हर देश प्रेमी के दिल कीबात उजाकार करते हैं, पता नहीं कहाँ दफन हो गये ये भाव ! नेताओं की संकीर्णता और उनके

स्वार्थ ने देश को भयंकर संकट में डाल दिया, हिन्दू-मुसलमानों के बीच गहरी खाई बना दी;उनके दिलों में नफरत की आग सुलगा दी, एक दूसरे के प्रति उनमें अविश्वास पैदा कर दिया, ये सब बातें राष्ट्रहित में नहीं है,

समयलाल के मन में इफ़्तखार हुसेन के प्रति आत्मीय प्रेम था।उसके उदार विचारों का वह प्रशंसक था, उसका कथन था कि देश में यदि इफ़्तखार हुसेन जैसे लोग हो जायें तो ढ़ेर सारी सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं का समाधान हो जाय।

समयलाल तो "कृण्वन्ती विश्वमार्यम्" का यानी समस्त विश्व को आर्य बनाओं ; उनमें श्रेष्ठ संस्कार भरो; का पालक व समर्थक था, छुआछूत ,ऊँच-नीच ,जात-पात जैसी संकीर्ण व कुत्सित विचारों से वह ऊपर उठा हुआ था, इसलिये इफ़्तखार हुसेन के यहां दावत खाने व इफ़्खार हुसेन को अपने यहां खिलाने में वह आन्तरिक प्रसन्नता महसूस करता था,

इफ़्तखार हुसेन के दो लड़के थे, एक तो फौज में ब्रिटिशकाल में सन् १९४० ई०में फौज में भरती हो गया था, लेकिन जव १८ जुलाई १९४७ में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने "भारत स्वतंत्रता अधिनियम पारित करके देश का विभाजन भारत-पाक दो राष्ट्रों में कर दिया तो उसी के आधार पर सेना व केन्द्र के कर्मचारियों का भी उनके द्वारा दिये गये विकल्प के अनुसार भारत व पाक के वीच बंटवारा कर दिया गया,उनका लड़का कैय्यूम स्वेच्छा से पाक सेना में चला गया था, उसके इस कृत्य से इफ़्तखार हुसेन को भारी सदमा लगा था , लेकिन यह निर्णय लड़के द्वारा लिया गया था, जो अपना भविष्य अच्छे ढंग से समझता था, इस सम्बन्ध में वह कुछ कर भी नहीं सकता था, दूसरा लड़का अय्यूब इलाहाबाद विश्व विद्यालय में बी०ए० में पढ़ता था, एक मात्र पुत्री कक्षा बारह में पढ़ती थी, अय्यूब स्वस्थ्य सुन्दर व हाकी तथा फुटबाल का बहुत अच्छा खिलाड़ी था, पुत्री हसीना भी बड़ी सुन्दर ; रुपवान थी,उसका चेहरा पिघले हुये सोना की तरह दीप्तमान था, उसमें अद्भुत आकर्षण था। पत्नी सयानी थी, सबका रहन-सहन खानपान हिन्दू परिवार जैसा था,

अय्यूब व हसीना समयलाल को चाचा कहते थे समयलाल का पुत्र आशीष व भतीचा रामेश्वर इफ़्तखार हुसेन को चाचा व उनकी पत्नी को अय्यूब व हसीना की तरह मम्मी कहते थे, इसरत बेगम भी उन्हें अपने बच्चों की तरह मानती थी, अलग-अलग धर्मावलम्बी होने के बावजूद दोनों के बीच आत्मिक प्रेम व पारिवारिक सम्बन्ध हो गया था, मुहल्ले के कुछ लोगो -

को यह पसन्द नहीं था , वे नहीं चाहते थे कि समयलाल अपने घर में एक विधर्मी को परिवार जन की तरह खिलाये-पिलाये या वह स्वयं खाये-पिये क्योंकि उन दिनों हिन्दू-मुसलमान का एक साथ खाना पीना अनहोनी घटना माना जाता था, समयलाल तो समय से आगे था, जात-पॉत, हिन्दू-मुसलमान, ऊँच-नीच के दायरे से वह बाहर था, उसकी दृष्टि मे इफ़्खार हुसेन एक सच्चा राष्ट्रप्रेमी व आदर्श इंसान थे, लेकिन मुहल्ले के अन्य लोगों के मन में इफ़्तखार हुसेन के प्रति अच्छे भाव नहीं थे, लोगों के दिलों मे भारत-पाक के बॅटवारे के घाव अभी पूरी तरह से सूखे भी नहीं थे, एक दूसरे समुदाय के विरुद्ध किस प्रकार लोगों ने अत्याचार किये ; लूट-खसोट की ; मॉ बहनों की इज्जत लूटी; बच्चों की अङ्ग-भङ्ग किया ; इस प्रकार की घटनाओं की चर्चायें यदा-कदा लोग आपस में करते रहते । उनके दिलों में नफरतें भरी थी वे समय व परिस्थिति से समझौता नहीं कर पाये थे,

उस मुहल्ले में इफ़्तखार हुसेन का हमदर्द व प्रेमी समयलाल ही था, वह अपने दिल की बात समयलाल से बताने में नहीं हिचकता था, कुछ समय पूर्व रायबरैली में हुये हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे के अवसर पर उसने समयलाल से कहा था-' लोगों में यह जनून कब तक बना रहेगा ? दंगे में सबसे अधिक बेकसूर लोग ही कष्ट पाते है, लोगों में यह समझ कब आयेगी कि भारत में रहने वाले सभी भारतवासी है ; सभी भाई-भाई हैं, क्योंकि देश के ऊपर जो भी संकट आता है उसके शिकार तो सभी होते हैं , जब जमी एक हैं, सूरज एक है, सबके खून का रंग एक है ,तो फिर उनमें एक दूसरे के प्रति घृणा ,नफरत क्यों पैदा हो जाती है ? वे एक दूसरे के खून के प्यासे क्यों हो जाते हैं ?'' वह साम्प्रदायिक दंगों की खबरों से अत्यन्त दुःखी हो जाता था , फिर कभी-कभी वह अपने मन का भय भी समयलाल से व्यक्त कर देता कि इस मुहल्ले में भी कुछ लोग उसे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं ; उसे पाकिस्तानी एजेन्ट भी कह देते हैं ; यदि रायबरैली जैसी स्थिति यहाँ भी उत्पन्न हो जाय तो उसकी स्थिति भी भयावह हो सकती है, समयलाल उसे समझाता ; बताता सान्त्वना देता कि जब तक वह है ; उसे चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

X X X X

होली का त्योहार समीप था, लोग त्योहार मनाने की तैयारी में लगे थे । घरों की सफाई,पुताई करा रहे थे ; बाजारों से खाद्य सामग्री व रंग अबीर खरीद रहे थे । जगह-जगह रंग-

अबीर की दुकानें फुटपाथों में सजी थीं।

लेकिन होली के दिन प्रातः ही इलाहाबाद के नकास कोने में छुरेबाजी की दो घटनायें हो गयी। दुर्भाग्य से दोनों ही व्यक्ति हिन्दू थे। एक तो वहीं मर गया था, दूसरा अस्पताल में जीवन-मरण से संघर्ष कर रहा था, इस घटना की पूरे शहर में इतनी तीव्र प्रतिक्रिया हुई कि जगह-जगह हिन्दू -मुस्लिम दंगे प्रारम्भ हो गये। सूचना मिलते ही समयलाल तुरन्त इफ़्तखार हुसेन के घर आया। कुछ गुफ़्तगू की। फिर उनके पूरे परिवार को अपने घर बुला लाया। उसके घर में ताला लगा दिया। इफ़्तखार हुसेन के पूरे परिवार को अपने घर के अन्दर सुरक्षित रुप से छिपा दिया। वह दरवाजे पर उपस्थित रहकर लोगों की गति विधियां देखता रहा। व नगर के समाचार लोगों से पूँछता रहा। इस तथ्य की जानकारी किसी को नहीं थी , कि इफ़्तखार हुसेन का परिवार कहाँ चला गया ,कुछ लोग उसके दरवाजे पर गये भी, लेकिन ताला लटकता देखकर वापस चले गये,

शहर में तीन दिन तक करफ़्यू लगा रहा। सभी कार्यालय व संस्थायें बन्द रही।शहर की सड़के सुनसान पड़ी रहीं, तनाव के कारण नगर का जीवन ठहर सा गया, जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया,शहर में जहर घुल गया, विवेक शील लोगों का हृदय क्षत- विक्षत हो गया, मानवता एक बार फिर पराजित हो गयी।

धीरे-धीरे करफ़्यू उठा ,एक सप्ताह बाद स्थिति सामान्य हुई, फिर एक रात इफ़्तखार हुसेन परिवार सहित अपने घर आ गये, दूसरे दिन मुहल्ले वालों ने देखा कि इफ़्खार हुसेन सपरिवार कुशल से हैं, इससे कुंछ लोगों को प्रसन्नता हुई, किन्तु कुछ लोगों को पीड़ी भी हुई, कि मुहल्ला में वह सुरक्षित रहा, कोई हानि नहीं हुई।कुछ असामाजिक तत्व उसकी पुत्री हसीना को उड़ाने की साजिश करने लगे। इसकी भनक समयलाल को अपने भतीजे रामेश्वर से लगी, उसने हुसेन साहब से चर्चा के दौरान बताया कि कुछ गुण्डे हसीना बेटी को हानि पहुंचाने की योजना बना रहे हैं अतः हसीना ने स्कूल जाना बंद कर दिया, परीक्षायें निकट थी, परीक्षा तो किसी प्रकार दिलानी ही थीं ,

इफ़्तखार हुसेन ने अपनी पत्नी इसरत से गुफ़्तगू की दोनों ने समयलाल से भी परामर्श लिया क्योंकि वह उनका अजीज था ,उसने आपत्तिकाल में अपनी जान जोखिम में डालकर उनकी रक्षा की थी , उसकी सलाह लेना उनके लिये लाजमी था,

साम्प्रदायिक दंगों के कारण तीनों आहत थे, इलाहाबाद के लिये यह कोई नया नहीं था, इसके पूर्व भी तीन बार दंगा हो चुका था, जरा भी कहीं अफवाह उड़ी या अफवाह उड़ी दी गई कि अमुक स्थान में अमुक धर्मावलम्बी की छुरी भोंककर हत्या कर दी गई है, बस फिर क्या ? लोगों मे पागलपन सवार हो जाता है कुछ लोगों का तो ऐसा करना धन्धा भी है,इस प्रकार का जनून पैदा करके वे अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, अपनी शत्रुता भुनाते हैं ; अपना हितसाधन करते हैं ''



आपस में विचार विमर्श करके तीनों इस नतीजे पर पहुँचे कि इफ़्तखार हुसेन कहीं सुरक्षित स्थान में मकान तलाश लें। मुस्लिम बहुत क्षेत्र में जाकर रहना सामयिक है क्योंकि इस मुहल्ले के कुछ नव जवान लड़के हानि पहुँचाने की फिराक में हैं, वे षड़यत्र रचते रहते हैं , मुहल्ले में उनका दबदबा है ; समाज में अराजकता भी बढ़ती जा रही है ; नेता ही इसके लिये अधिक दोषी हैं , तत्काल आवश्यक कदम उठाने की दृष्टि से इफ़्तखार हुसेन को घर छोड़ देना अधिक अच्छा है, वह इफ़्तखार हुसेन का निजी आवास था,

इफ़्तखार हुसेन ने समयलाल से कहा- ''आप इस मकान में आ जायँ। आपके इस मकान में रहने से हमें तसल्ली रहेगी कि मैं न सही, मेरे अजीज तो रह रहे हैं।इस घर को मैं ने बड़ी मेहनत से बनवाया था पूरी उम्र गुजार दी एक मकान बनवाने में ;लेकिन लोगों को तरस नहीं है, मुझे उजाड़ने में समयलाल उनकी आन्तरिक गहरी पीड़ा को समझता था, लेकिन लोगों के उन्माद और पागलपन के आगे वह भी मजबूर था।

X X X X

घासमण्डी मुहल्ले के कुछ इलाकों में यत्र तत्र हिन्दुओं के मकान थे। मुस्लिम बहुल एरिया था, यदा-कदा अज्ञात कारणों से हो जाने वाले साम्प्रदायिक दंगों से वे भी भयभीत थे। उनमें से कुछ अपने मकान बेच रहे थे, इस बात की जानकारी इफ़्तखार हुसेन को वहाँ जाने पर हुई। ऐसा ही एक मकान उसने देखा। मकान अच्छा था, उनके मकान जैसा ही था, मकान पसन्द था, समयलाल ने भी उसे देखा, फिर बातचीत हुई, सौदा अठारह हजार में तय हो गया, उतनी ही राशि में इफ़्तखार हुसेन ने अपना मकान समयलाल को दे दिया। समयलाल गांव गया, जगदीश से चर्चा की।रुपयों की व्यवस्था की। फिर उसी पैसे से इफ़्तखार हुसेन ने अपना मकान खरीदा दोनों मकानों की एक साथ लिखा-पढ़ी हुई, इफ़्तखार हुसेन सुरक्षित महसूस-

करने लगा, समयलाल का निजी आवास हो गया। लेकिन दूर-दूर होने के कारण मित्रता में,प्रेंम में कोई कमी नही आयी।

इफ़्तखार हुसेन रेल विभाग में गार्ड पद पर थे उनका रिटायरमेन्ट भारत-पाक बंटवारा के पांच वर्ष बाद हुआ था, उससे भी पूँछा गया था कि पाक व भारत मे से वह कहाँ जाना चाहता है ; उसने भारतीय रेलवे में ही अपनी सेवायें देने की बात लिखकर दी थी, उनकी उम्र समयलाल की उम्र से दूनी से भी अधिक थी, फिर भीं दोस्ती में उम्र के अन्तर ने कोई रुकावट नहीं डाली थी।उम्र की दृष्टि से वह समयलाल के पिता होते थे लेकिन समयलाल उन्हें भाई साहब व बेगम को भाभी ही कहता था, दोनों के बीच गहरी मुहब्बत थी, उनकी मित्रता का कारण उनके विचारों व चिन्तन की समानता थी, मित्रता में धर्म भिन्नता व उम्र के अन्तर ने कोई खलल नहीं डाल सके थे।

X X X X

इफ़्तखार हुसेन के दोनों बच्चे अय्यूब और हसीना अब्बाजान को पड़े थे, नुसरत तो इकहरी शरीर की थी, इफ़्तखार हुसेन गोरे चिट्टे स्वस्थ दोहरी काठी के साढ़े पांच फीट ऊँच थे, उम्र का प्रभाव उनके शरीर व स्वास्थ्य पर स्पष्ट दीख रहा था, अय्यूब हाकी का बहुत अच्छा खिलाड़ी था, विश्व विद्यालय की ओर से वह कई विश्व विद्यालयों में जाकर मैच खेल आया था, हसीना का गुलाब जैसा सुन्दर आकर्षक रुप था, उसकी वाणी में शर्करा घुली रहती थी, कालेज आते-जाते अन्य मुस्लिम कन्याओं की तरह उसने बुरका कभी नहीं पहना था, वह एक हिन्दू कन्या की तरह कालेज आती-जाती थी, उसके वालिद बुरका के पक्ष में कभी नहीं रहे, उनका कथन था- इस युग में जहाँ लड़की लड़का बराबर की हैसियत रखते हैं, बुरका देकर उन्हें बुजदिल बनाना कहां तक उचित है ? क्या लड़कियां घरों में बुरका पहनती हैं ? समाज भी तो एक बड़ा परिवार है, उसमें बुरका पहिनकर चलना कहां तक उचित है ! इस जमाने मे बुरका का कोई मतलब नहीं है।

भाई इफ़्तखार हुसेन का रहन-सहन व घर का वातावरण एक आदर्श हिन्दू परिवार जैसे था। उन्हें कुरान व रामायण से समान लगाव था, वह राम-रहीम में कोई अन्तर नहीं समझते थे, वह कभी कभी कहते भी थे- "राम कहो या रहीम कहो ; मतलब तो उसी अल्लाह से है," वह दशहरा-दीपावली होली हिन्दूओं की तरह ही मनाते थे, साम्प्रदायिकता उन्हें छू तक नहीं गयी-

थी, फिर भी कुछ लोग उन्हें पाकिस्तानी एजेन्ट समझते थे, इससे समयलाल को आन्तरिकपीड़ा होती थी कि लोग बिना समझे -बूझे उनके प्रति कितनी गलत राय बनाये बैठे हैं, वह - सच्चे राष्ट्रभक्त थे।

इफ़्तखार हुसेन की इच्छा थी कि अय्यूब भी कहीं काम-धाम में लग जाय; अपने पैरों पर खड़ा हो जाय तो उनकी आत्मा को तसल्ली मिल जाय। हसीना को वह ग्रेजुएट करा देना चाहते थे ,उनका कथन था, कि आने वाला युग न परदा करने का होगा न चाहार दीवारी के अन्दर बन्द रहने का होगा, श्रम व प्रतिभा की पूजा होगी, जो श्रम करेगा, वह खायेगा, एक की नौकरी से पांच का गुजर न होगा ।इसलिये बड़े परिवार टूट जायेंगे। छोटे-छोटे परिवार बनेंगे। हर इंसान को परिश्रम करना पड़ेगा,

इफ़्तखार हुसेन के विचार,कार्य, रहन-सहन देखकर ऐसा लगता था कि वह सच्चे हिन्दू है, एक बार उसने हंसते हुये समयलाल से कहा भी था कि इस देश में मुसलमान आये ही कितने थे! मेरे बाबा ने तो मुझसे एक बार यह कहा था। कि हमारे पूर्वज हिन्दू थे, मिस्टर जिन्ना के भी पूर्वज हिन्दू ही थे हम भी राम,कृष्णा के वंशज हैं सबसे बड़ी परेशानी यह है कि यदि आज हम हिन्दू बनना चाहें तो हमें कोई स्वीकार करने को तैयार नहीं होगा। हम हिन्दू बनें तो क्या बनें ? ब्राह्मण कि क्षत्रिय ! क्या कोई हमें ब्राह्मण बनायेगा ! यदि हम ब्राह्मण नहीं बन पाते, तो क्या हमें क्षत्रिय बनाया जा सकता है ? सारी बातों की जड़ यह है कि हिन्दुओं में इतना वर्ग-विभाजन है,कि वे आपस में घुल मिल नहीं सकते। सब एक दूसरे से कटे हुये हैं , सच बात तो यह है समयलाल ; कि हिन्दू से मुसलमान बन जाना तो सरल है ; लेकिन मुसलमान से हिन्दू बनना टेढ़ी खीर है, बहुत से हिन्दू तो बड़ी मजबूरी में मुसलमान बन गये, या बना दिये गये, लेकिन जब वे प्रयास के बाद भी पुनः हिन्दू नहीं बन सके, हिन्दुओं ने उन्हं स्वीकार करने से इंकार कर दिया तो वे कट्टर मुसलमान हो गये, उन्होने हिन्दुओं का बेरहमी से कत्लेआम किया। उन पर तरह -तरह के जुल्म ढाये।

+++++

रानी एल० टी० हो गई। उसकी नियुक्ति इलाहाबाद के एक कन्या इण्टरमीडिएट कालेज में शिक्षक पद पर हो गई। आशीष कक्षा तीन में व रामेश्वर बी०ए० में पहुँच गया। हसीना पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ विभाग में क्लर्क हो गयी, उसकी शादी भी हो गयी थी, अय्यूब पुलिस विभाग में सब इंस्पेक्टर हो गया। इफ़्तखार हुसेन व उनकी बेगम इसरत अपने जीवन का चौथापन खुशी –खुशी काट रहे थे, अब उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी, सारा समय किताबों व अखबारों के बीच व लोगों से मिलने–जुलने में ही कटने लगा , लेकिन समयलाल कालेजकी नौकरी छोड़कर गाँव चला आया, उसने संकल्प बना रखा था कि वह देहाती क्षेत्र में अधिक से अधिक संस्थायें खोलेगा ।ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार हो सके ।समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का एक उपाय लोगों का शिक्षित करना ही है ; उनमें जागृति लाना है; उनके संस्कारों में परिवर्तन लाना है ; तभी सामाजिक परिवर्तन की नीव बन सकेगी, जब तक यह नहीं होगा तब तक समाज अन्धविश्वास व रुढ़िवादिता से मुक्त न हो सकेगा।

X X X X

जिस दिन समयलाल गांव आया, उसके दूसरे दिन उसके गांव में मातादीन मेहतर के यहां बारात आयी, बाराती साफ सुथरे थे, बारात एक नगर से आयी थी। मातादीन का घर गांव से कुछ हटकर अलग बना था, अपरान्ह समयलाल उसी ओर गये और बारात में सम्मिलित हो गये, सभी के साथ नाश्ता किया ; पानी पिया। जब वह किसी से बात कर ही रहे थे, तभी मातादीन ने उन्हें देख लिया, देखकर वह चकित रह गया, उसके मुँह से अकस्मात् निकला।

"अरे भैया !आपने क्या किया ? आपको लोग क्या कहेंगे ? ऐसा न करें ... इतना कहकर वह हाथ जोड़कर उनके सामने खड़ा हो गया। न चाहते हुये भी समयलाल को वहां से चले आना पड़ा। कानाफूसी से यह बात उसीदिन रात भर में गांव में फैल गयी, बारातियों को पहले तो कुछ मालूम ही नहीं था कि बात क्या है लेकिन जब मातादीन ने उन्हें बताया कि समयलाल कौन हैं, क्या है तो वे भी आश्चर्य चकित हो गये, यह बहुत अनहोनी घटना थी।

इस घटना ने गांव व क्षेत्र के वातावरण को कम्पायमान कर दिया, ऐसा लगा मानों गांव में कोई पहाड़ टूट पड़ा है। जगदीश को जब ज्ञात हुआ तो वह स्तब्ध रह गया। वह कुछ बोल नहीं सका, जिधर देखो उधर औरतें व पुरुष दो–दो चार–चार के समूह में खड़े होकर यही –

चर्चा करते रहे व कहते रहे कि क्या समयलाल ने यही पढ़ा है! ऐसा करके उन्होंने अच्छा नहीं किया, वह पागल से हो गये है; लेकिन किसी की हिम्मत समयलाल से इसकें सम्बन्ध में बात करने की नहीं पड़ रही थी, क्योंकि वह सुयोग्य, पढ़ा लिखा संस्कृत साहित्य व भाषा का विद्वान था।

चार पांच दिन बाद भैयालाल ने समयलाल से हिम्मत करके कहा- "दादू! आपने मातादीन मेहतर के यहां नाश्ता-पानी करके बड़ा बुरा किया। आपने सब धर्म-कर्म पर पानी ही फेर दिया। जब आप जैसे लोग ऐसा करेंगे तो फिर कल मातादीन और उसके बच्चे हमारे घरों के अन्दर जाने में कोई संकोच नहीं करेंगे, उन्हें कौन मना करेगा? सनातन से चली आ रही परम्परा के विरुद्ध आचरण करके आपने ऊँची जाति के लोगों का सिर नीचा कर दिया है। आपने गांव को कलंकित कर दिया है।जो सुन रहा है सब थू-थू कर रहा है। क्या विश्वविद्यालय में यही पढ़ाया जा रहा है कि अपनी सब पुरानी रुढ़ियों के विरुद्ध आचरण करो? भला इससे समाज को क्या मिलने वाला है? हर इंसान अपने-अपने कर्मों के अनुसार जन्म लेता है। नहीं तो मातादीन भी न किसी उच्च जाति के घर में जन्म लेता। उसके कर्म ही ऐसे थे जिसके कारण उसने मेहतर के घर में जन्म लिया; वह मेहतर हुआ। आपने बड़ी गलती की; इतनी बड़ी गलती की कि उसका कोई प्रायश्चित नहीं है, फिर बताओं; घर वालों को भी नहीं बताया, घर में सबके साथ आकर रहने लगे, सबकों तार दिया, राम! राम.................................."

फिर कुछ क्षण रुककर भैयालाल ने कहा-" हम आपके समझाने लायक नहीं हैं, आप पढ़े लिखे हैं, हमने अपना समझकर ही आपसे इतनी बातें कहीं है, जैसा आप उचित समझें वैसा करें, सही बात तो यह है कि हम आपके समझाने लायक नही है लेकिन पूरा गांव तुम्हें थू-थू कर रहा है..।"

समयलाल मूक भाव से भैयालाल की बातें सुनते रहे। जब भैयालाल ने अपनी बातें समाप्त की, तब समयलाल ने विनम्रतापूर्ण शब्दों में कहा- "चाचा जी! मेरा आचरण आपको विस्मयकारी लगता है, लेकिन मैं ने युग के विरुद्ध कोई कार्य नही किया। आज का युग विज्ञान का युग है, समानता का युग है; प्रजातंत्र का युग है, स्वतंत्रता बन्धुत्व और सामाजिक न्याय का युग है; युग की पुकार है कि उन्हीं परम्पराओं का पालन हो जो विवेक सम्मत हों विज्ञान और अन्धविश्वास एक साथ नहीं चल सकते; साथ-साथ नही रह सकते, विज्ञान ने सिद्ध कर-

दिया है। कि सभी मनुष्य एक जाति के हैं, रंग भिन्नता, भाषा भिन्नता, व धर्मभिन्नता तथा रहन-सहन के अन्तर से उनमें कोई मौलिक अन्तर नहीं आता है सोचिए! क्या मेहतर मनुष्य नहीं है! फिर सोचिये, उनकी इस स्थिति व दशा का जिम्मेदार कौन हैं! क्या उनकी यह स्थिति अपने आप हो गयी है? क्या समाज ने उनको इस दयनीय स्थिति तक नहीं पहुँचाया? सोचिये; जरा उनके काम पर सोचिये, उनके कार्य समाज के लिये कितने उपयोगी हैं? सोचिये; यदि वह गांव की सफाई न करे, तो फिर उसे क्या गांव वाले नहीं करेंगे? यदि आपके घर में बिल्ली मर जाय; उसे कोई उठानेवाला न हो तो क्या आप उसे नहीं हटायेंगे? आप हटायेंगें न। कि सड़ने देंगे? यदि आपकी जगह आपका कोई भाई उसे हटा दे तो क्या आप उसके प्रति कृतज्ञ न होंगे? बच्चा जब बिस्तर में टट्टी करता है; कपड़े गीला करता है तो उसकी सफाई माँ ही करती है न! क्या घर वाले उस माँ से घृणा करते हैं? क्या घर वाले उसे अपावन समझते हैं! नहीं न! तो फिर बृहत् समाज की सेवा करने वाला समाज की दृष्टि में अछूत कैसे हो गया! सोचिये चाचा! गम्भीरता से सोचिये, मेहतर तो इंसान है, मेहनत करने के कारण; सफाई करने के कारण उसे निम्न क्यों समझा जाता है? अछूत क्यों माना जाता है; इस पर भी आप सोचिये, आप कुत्ते छूते हैं; बिल्ली छूते हैं; उनके बच्चों को गोद में खिलाते हैं; गाय, बैल भैस छूते है; उनकी सेवा करते हैं, लेकिन इंसान को छूने से परहेज करते हैं, क्या वह गाय; बिल्ली, कुत्ते जैसे पशु से भी गया गुजरा हो गया? यदि उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है तो क्या यह भयंकर अन्याय नही है? किसी भी विवेक शील प्राणी से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह ऐसे व्यवहार दूसरों से करे जो वह अपने लिये दूसरों से स्वयं नही चाहता। ऋषि का निर्देश है- "आत्मवत् सर्व भूतेषु" अर्थात् सभी प्राणियों से अपना जैसा व्यवहार करों, उन्हें अपने जैसा समझो, क्या उनके साथ ऐसा व्यवहार करना ऋषि निर्देश का उल्लंघन नहीं है? महान तत्वदर्शी वैशम्पायन मुनि ने कहा है -

'न कुलेन न जात्या वा क्रियार्भि ब्राह्मणी भवेत्,
चाण्डालोऽपि हि वृतस्थो ब्राह्मणः स युधिष्ठिर '*

समाज में सभी कार्यों का महत्व है। समाज को आगे बढ़ाने में सभी प्रकार के कार्यों का महत्वपूर्ण योगदान है, कृषि करने वाला उतना ही पूज्य है जितना कि पाठशाला में अध्यापन करने वाला; मन्दिर में पूजा करने वाला है समाज की सेवा में लगे सभी व्यक्ति सम्माननीय है,

मेहतर भी सम्माननीय है, जब वह अपने कार्य से निवृत्त होकर नहा-धोकर साफ सुथरा हो जाता है तो वह भी हमारी आपकी तरह ही स्पृश्य हो जाता है, यदि बारात में मैं सम्मिलित होकर उनके साथ-खाया पिया तो मैं ने कोई पाप नहीं किया है, मैं ने तो युगानुकूल ही आचरण किया है; युग विरुद्ध नही चाचा ! आप तो अन्धविश्वास और विवेक-विरुद्ध आचरण की वकालत कर रहे हैं; यह न करें। आने वाला युग इन्हें किसी मूल्य पर स्वीकार नही करेगा, अतीत काल से इनके साथ जो अन्याय होता आया है ; उसी को चलाते रहने की वात न करें चाचा ! एक रहस्य की बात और बताता हूँ आपको ; इस संसार में मनुष्य से बढ़कर ; उससे श्रेष्ठतर कुछ भी नहीं है, हम मनुष्यों ने ही देवी -देवताओं के आविष्कार किये हैं ; हमीं उनका माहात्म्य बढ़ाते हैं ; हमीं उन्हें पूजा की वस्तु बनाते हैं हम उनका तिरस्कार भी कर सकते हैं, विज्ञान सम्मत बात तो यह है स्वर्ग-नरक, देवी-देवताओं का कोई अस्तिव नहीं है,देवी देवता हमारे अज्ञान,भय,हीनता, पलायन तथा अन्य मनोग्रन्यियों की उपज है ! ये जन साधारण के शोषण के माध्यम है।

बात ही चल पड़ी है तो इसी प्रसंग की एक प्राचीन कथा का भी उल्लेख किये देता हूँ, सुनलो ; हो सकता है कभी सुने भी हो।

एक बार बनारस में जगतगुरु शंकराचार्य प्रात : चार बजे गंगा नहाकर वापस आ रहे थे, उसी समय मेहतर सड़कों की सफाई कर रहे थे, जगतगुरु के शिष्य आगे-आगे यह चिल्लाते हुये जा रहे थे कि हट जाओं ; एक तरफ हो जाओ, जगतगुरू आ रहे हैं, एक मेहतर सड़क की सफाई में मनोयोग से लगा हुआ था. ऐसा लग रहा था मानों 'हट जाओ, एक तरफ हो जाओ' की आवाज उसके कानों मे ही नहीं पड़ी या सुनकर भी उसने अनसुना कर दिया। इतने ही में जब जगतगुरु शंकराचार्य उसके समीप से निकलने लगे तो उनके कंधों से झूलता हुआ चीवर मेहतर से छू गया, यह देखकर शिष्य आपे से बाहर हो गये और उसे भला बुरा कहने लगे,

---

* यानी युधिष्ठिर ! कुल से, जाति से और बहुत सी क्रिया कलापों से कोई ब्राह्मण नहीं होता , यदि कोई भंगी भी उत्तम गुणों से युक्त है तो वह ब्राह्मण है। यह उल्लेख वज्रसूची उपनिषद् में है , इसलिये चाचा जी ; जन्म के आधार पर छोटे- बड़े ; ऊँच- नीच की बात छोड़ो। सभी इंसान है, किसी पेशे के कारण किसी को छोटा- बड़ा नहीं माना जा सकता, छोटा बड़ा तो गुण से होता है।

जगतगुरु ने भी क्रोधित होकर कहा- "अरे नीच; पतित चाण्डाल ! तूने स्पर्श करके मुझे अपवित्र कर ही दिया, अब मुझे फिर वापस जाकर स्नान करना पड़ेगा, दुष्ट ! तुने धृष्टता की ,मार्ग नहीं दिया," ज्यों ही जगतगुरु शंकराचार्य पीछे की ओर मुड़कर चलने को उद्यत हुये तभी वह झाड़ू को बगल में दबाये ,हाथ जोड़कर सामने खड़े होकर बोला- "गुरुदेव ! आप ही जगत में घूम-घूमकर उपदेश देते रहें हैं-"एकोऽहम् द्वितीयोनास्ति' |"अहम् ब्रह्मस्मिं " जब एक ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है ; मैं ही ब्रह्म हूँ ; तो फिर अपवित्र होने की बात कैसे हो गई ? ब्रह्म का प्रकाश जब सभी में समाया हुआ है ; जब सभी एक ही प्रकाश से प्रकाशित हैं तो फिर छूत-अछूत की बात कैसे हो गई ? यह शरीर तो उस ब्रह्म स्वरुप आत्मा का मन्दिर है ; मंदिर सुन्दर भी हो सकता; असुन्दर भी हो सकता है, भव्य भी हो सकता है साधारण भी हो सकता है स्वच्छ भी हो सकता है ।गन्दा भी हो सकता है ; तो क्या मन्दिर अस्पृश्य हो जाता है ? क्या मन्दिर की भव्यता, रुग्णता, कुरुपता के कारण मन्दिर में प्रतिष्ठित मूर्ति अनादर के योग्य हो जाती है ? हे भगवन ! आप मुझे बतायें इस आत्मा के मन्दिर के स्पर्श से दूसरा मन्दिर कैसे अपवित्र हो गया । जब वही ब्रह्म सर्वत्र विद्यमान है, मुझमें ; आप में ; अन्य लोगों में भी ; उसके सिवा कुछ दूसरा है ही नहीं ; तो मेरे स्पर्श से आप अपावन कैसे हो गये ? यदि ऐसा है कि मुझसे स्पर्श हो जाने के कारण आपको पुनः स्नान करना पड़ेगा ताकि आप पुनः पवित्र हो जायें तो आप मुझे यह बतायें कि आप ऐसा उपदेश क्यों देते है कि ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है, क्या मेरा ब्रह्म आपके ब्रह्म से भिन्न है ; क्या हर व्यक्ति के अन्दर विराजमान ब्रह्म अलग-अलग है ? हे भगवन् ! मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है, आप कृपा करके समझावें ,

कहते हैं जगतगुरु उसकी बातों को ध्यान से सुनते रहे, फिर उसके चरणों के स्पर्श हेतु झुके , किन्तु वह पीछे हटकर बोला- यह क्या जगतगुरु ! इस पर जगतगुरु शंकराचार्य बोले- तुमने मेरी आँखे खोल दी भगवन् । आज से तुम मेरे गुरु हुये, मैं अभी तक भ्रम में था ! मेरा दण्डवत् प्रणाम स्वीकार करो.....यह देखकर जगतगुरु के शिष्य स्तब्ध रह गये , वह वापस नहीं गयें,

"चाचा ! कुछ धन्धों को तथाकथित श्रेष्ठ जन उच्च्च व कुछ को निम्न मानते हैं जबकि सत्य यह है कि न कोई धंधा निम्न है न कोई श्रेष्ठ ; वशर्ते वह विधि सम्मत व समाज के हित में हो । ऊँच-नीच के भाव तो उनके मस्तिष्क में जड़ जमाते हैं जो संकीर्ण है ; अनुदार है;-

परिपक्व व्यक्ति की दृष्टि में तो ऊँच-नीच या जात-पांति का भेदभाव रहता ही नहीं। जांत-पांत तो समाज का धोखा है, चाचा वहम् है, पाप है ; स्वार्थियों का षड़यन्त्र है ; दुर्गन्धपूर्ण सड़न है चाचा ! जात-पांत और छुआछूत की भावना ही भारत के पराभव का कारण बनी है, इस व्यवस्था ने हमें अन्दर से खोखला कर दिया है।...."

इन बातों को सुनकर भैयालाल की बोलती बन्द हो गयी। यह कहते हुये उसने अपना रास्ता पकड़ा -"हमारी जितनी बुद्धि थी ; हमने कह दिया। हमने पहले ही आपसे बता दिया था कि हम तो अज्ञानी हैं ; मूर्ख हैं। हमारी तो बीत आयी। जैसी आपकी इच्छा हो, करो। हम आपके समझाने लायक नहीं हैं"।

## (तेरह)

समयलाल अपने मामा रणविजय के यहाँ गये जो निःसन्तान थे। वह भी जमीन्दार रह चुके थे। उनके पास बहुत धन था, बड़ी सम्पत्ति थी। उनके भाई के लड़के थे ; उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अपनी सम्पत्ति कहां कैसे खर्च करें। कभी वह अपना धन अपने भतीजों को देने का विचार करते, कभी भानजों को देने का विचार करते। इसी अनिश्चय की स्थिति में वह अपना जीवन काट रहे थे। उनकी अवस्था पचमन से अधिक हो गयी थी। सन्तान की आशा भी वह छोड़ चुके थे। समयलाल ने उन्हें विद्यालय खोलने का परामर्श दिया। सुनकर वह चुप रह गये। ऐसा लगा कि वह अपना धन स्कूल खुलवाने में नहीं खर्च करना चाहते ,

समयलाल को जब आभास हो गया कि रणविजय तैयार नही हैं तो उसने मामाश्री से समझाते हुये कहा- "कस्य स्वित् धनम्" अर्थात् किसका धन है यह ? यह धन तो प्रजापति का है ;उनके अतिरिक्त किसी का नहीं है। यह समस्त भूमि भी प्रजापति की है, किसी दूसरे की नहीं है, धन कमाने वाले चले जाते हैं ; धन को छीनने वाले, लूटने वाले भी चले जाते है, लेकिन धन यहीं पर रह जाता है, धन सम्पत्ति जायदाद केवल देखने को है, देख-देखकर यह भाव पैदा होता रहता है ; कि मैं इसका स्वामी हूं। लेकिन यह सब मिथ्या है, धन तो प्रजापति का है ; इसलिये मेरा आपसे अनुरोध है कि आप इस धन को प्रजापति को सौंप दें।यद्यपि यह काम-

बहुत कठिन है ; दुष्कर है ; यदि आप यह सोच लें कि इस संसार से श्रीराम, रावण, श्रीकृष्ण, जैसे महापुरुष सब कुछ यहीं छोड़कर चले गये ; विश्वविजयी सिकन्दर जब इस संसार से कूच किया तब उसके दोनों हांथ खाली थे ; चन्द्रगुप्त, अशोक अकबर जैसे तेजस्वी प्रतापी शासक अपने विशाल साम्राज्य छोड़कर खाली हाथ चले गये ; उनके विशाल खजाने यहीं का यहीं पड़े रह गये। मामाश्री ! जो इस संसार में आया है, वह अपना सब कुछ यहीं छोड़कर एक दिन चला जाता है जब सब कुछ छोड़कर एक दिन चले ही जाना है ,तो उससें चिपके रहने में कौन सी बुद्धिमानी है ?

लोग यह सोचते है कि मैं सदैव यहीं रहूँगा ; सदैव इसंका उपभोग करता रहूँगा; इसलिये धन संग्रह में वह निरन्तर लगा रहता है, उसे धन दौलत से तृप्ति ही नहीं होती, 'न वित्तेन तोषणीयों मनुष्य ; ' जिसके पास जितना है ; वह उससे और अधिक चाहता है, धन की प्यास कभी बुझती ही नहीं ,इसके लोभ का कहीं भी ,कभी भी अन्त नहीं होता, इसलिये वेद भगवान ने सचेत करते हुये ,कहा 'मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ' अर्थात् लालच भी मत कर ! दूसरे के धन का तो कर ही नहीं , सोचो यह धन किसका है ? तुमने व्यापार से धन कमाया हो; ठेकेदारी से कमाया हो या अन्य किसी भी प्रकार से कमाया हो ; इसे अपना मत समझो। यह धन प्रजापति का है ; सारी जनता का है, जनता जनार्दन का है, इसे उसके कल्याण में खर्च कर दो, जनता को ही ईश्वर समझों ; जनार्दन समझो, प्रजापति समझो, उसकी ही यह धरती है, उसका ही यह धन है, उसकी ही यह सारी सृष्टि है, उसको हीन दशा में रखकर, धन पर पल्थी मारकर बैठे रहना बुद्धिमानी नहीं है, अर्थवेद में कहा गया है- ' माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः,|"अर्थात् यह धरती मां है; और हम उसके पुत्र हैं ? "

तृष्णा बहुत बुरी है, जो इसके चंगुल में फंसा , उसका सब कुछ जाता रहा। भतृहरि की यह बात शिक्षाप्रद एवं स्मरणीय है-

' भोगो न भुक्ता वयमेव भुक्ता :
तपो न तप्तं बयमेन तप्ता :
कालो न यातो वयमेव याता :
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा : '*

मैं आपके पास इसी उद्देश्य से आया हूँ कि आप अपने धन को प्रजा के हितार्थ लगा-

दे ,क्योकि यह धन अन्ततः प्रजा का ही है, जनता-जनार्दन का ही है, आप एक विद्यालय भवन बनवा दें , एक विद्यालय खोल दें, धन का सर्वोत्तम उपयोग हो जायगा। जनता का कल्याण होगा क्योंकि विद्याधनम् सर्व धनम् प्रधानम्। विद्यादान से बढ़कर कोई दान भी नहीं है। विद्यालय खुल जाने से लड़के-लड़कियां पढ़ेंगे; शिक्षित होंगे ; उनके मन खुलेंगे, उनके मन मस्तिष्क में शताब्दियों से जमे कुसंस्कार दूर होंगे ; कचड़ा धुलेगा, ज्ञान-विज्ञान से उनका परिचय होगा ; विवेक जागृत होगा, देश-दुनिया के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होगी,कूप मण्डूकता दूर होगी, अन्धविश्वास मूढ़-परम्परायें, रूढ़िवादिता दूर होगी क्योकि इनकी जड़ें अज्ञानता में गहराई से जमी होती हैं। जब ज्ञान का प्रकाश उन पर पड़ेगा, तो अन्धकार सिमट ही जायेगा, सत्य दिखने लगेगा,

समयलाल की बात को रणविजय मूक भाव से सुनते रहे, ! मामी सुशीला भी सुन रही थी, सुशीला ने कहा-" लाला ! हम तो मन्दिर बनवाने का विचार कर रहे है..." इस पर समयलाल ने भाव विहल होकर कहा-"मामी ! यह तो उत्तम विचार है, यही तो मैं भी कह रहा हूँ लेकिन मैं सरस्वती देवी के मन्दिर की बात कह रहा हूँ जहाँ जीवित मूर्तियां होंगी, शिक्षक उसके पुजारी रहेंगे, प्रतिदिन ईश- प्रार्थना होगी, घंटियां बजेगी ; जीवन गुंजायमान होगा, ऐसा मन्दिर नहीं जिसकी कालान्तर में कोई साफ-सफाई करने वाला भी न उपलब्ध हो क्योंकि ऐसे मन्दिर तो देश में बहुत हैं जहां आज गीदड़, चमगादड़,अपना आवास बनाये हुये हैं। वहां कूड़ा-कचड़ा का ढेर लगा है ; आप ऐसा एक मन्दिर और बनवाकर उनकी संख्या में वृद्धि न करें ।

वर्तमान युग में ग्रामीण क्षेत्र के लिये अधिक से अधिक संख्या में सरस्वती जी के मन्दिरों की आवश्यकता है, इन्हीं मन्दिरों से नेता, सैनिक, व्यापारी इंजीनियरों , विद्वानों का निर्माण होगा। न जाने आपके इस मन्दिर से कितने हीरे-मोती निकलंगे जो गांव,क्षेत्र, जिला, प्रान्त व देश के नाम को सुरभित करेंगे। महात्मा गांधी जी, पं. जवाहरलाल नेहरु , सरदार बल्लभ भाई पटेल, डां० राजेन्द्र प्रसाद, डां० सर्वपल्ली राधाकृष्णन , अरुणाआसफ अली,सरदार भगत सिंह , चन्द्रशेखर आजाद जैसे महापुरुष ऐसे ही मन्दिरों की तो देन थीं।

---

* अर्थात् विषयों को हमने नहीं भोगा किन्तु विषयों ने ही हमें भोग लिया, हमने तप न तपे, परन्तु तपों ही ने हमें तपा डाला, काल व्यतीत न हुआ किन्तु हमारी आयु ही व्यतीत हो गयी, तृष्णा जीर्णन हुई, किन्तु हम ही जीर्ण हो गये, मामाश्री , धन की तृष्णा बड़ी भयंकर होती है, आप सोचें, अतीत मं जो ऋषि ,मुनि, विद्वान कह गये हैं,; उन पर गम्भीरता से सोचें,

आप एक विद्यालय -भवन बनवाने का आज ही संकल्प ले लें। आपका यह बहुत पुनीत सुकृत्य होगा,

समयलाल ने रण विजय और सुशीला को कई ऐतिहासिक घटनाओं और महापुरुषों के उदाहरण देकर व दानवीरों की कथायें सुनाकर उन्हें इतना प्रेरित व उत्साहित कर दिया कि वे- विद्या मन्दिर स्थापना के लिये अत्यधिक उत्सुक हो गये , उन्होने समयलाल को आश्वस्त किया कि वे इस कार्य में विल्कुल विलम्ब नही करेंगे ,

रणविजय व सुशीला के मन- मस्तिष्क में विद्यालय भवन निर्माण की चिन्ता रात- दिन सताने लगी। वे आवश्यक व्यवस्था में लग गये।

# !! चौदह !!

समयलाल जब घर आया तो जगदीश ने बताया कि रामेश्वर की शादी के लिये एक प्रस्ताव आया है, समयलाल ने जब से गांव के मेहतर की बारात में नाश्ता-पानी कर आये थे तब से क्षेत्र में उनकी बड़ी निन्दा हो रही थी, बहुत से लोग उन्हें अस्पृश्य समझने लगे थे, इसलिये शादी-विवाह के लिये भी लोग आना बन्द कर दिये थे।

रामेश्वर बी०ए० कर चुका था, एल०एल०बी० कर रहा था। वह अपने पैरों पर खड़ा होने की सामर्थ्य पैदा कर रहा था,उसकी अवस्था के सभी लड़कों की शादियां हो चुकी थीं, निर्मला की भी हार्दिक इच्छा थी कि बहू घर में आ जाय;उसे गृह कार्य में सहायता दे ;राहत दे ,

प्रस्ताव एक स्वाधीनता -संग्राम सेनानी की ओर से आया था, वह सन् ४२ की स्वाधीनता की लड़ाई में एक वर्ष का कारावास भोग चुके थे, उनकी पुत्री रश्मि कक्षा दस उत्तीर्ण कर चुकी थी उसकी उम्र उन्नीस बीस की हो रही थी।

समाज रुढ़ियों में जकड़ा हुआ था। ऊँच-नीच ,छुआछूत के भाव समाज में अपना व्यापक प्रभाव जमाये थे, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के विरुद्ध गांव वालो का यह कथन था कि वह निकृष्ट हो गये हैं ; सभी जाति वालों के यहाँ खाते-पीते हें ; क्रिस्तान हैं, इसलिये उनके यहाँ कोई वैवाहिक संबंध के लिये तैयार ही नहीं होता था, गाँव वाले क्या जानें कि वह क्या हैं ;उनके-

विचार कितने ऊँचे हैं, उनका आचरण देश वासियों के लिये कितना अनुकरणीय है ; वे कूप मण्डूक क्या समझें ? जगदीश को उन सेनानी के सम्बन्ध में बहुत कुछ मालूम था, लेकिन उन्हें भय था कि एक तो कड़वा दूसर नीम चढ़े, समाज में उनके परिवार की भी यही स्थिति बन गयी थी, यदि सेनानी के यहां सम्बन्ध करते हैं तो समाज की दृष्टि में वह और भी नीचे चले जायेंगें।इसलिये उसने अपनी ओर से कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न करते हुये सब कुछ समयलाल के ऊपर छोड़ दिया था।



समयलाल को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के सम्बन्ध में पूर्व से ही पूरी जानकारी थी, वही तो एकमात्र ऐसे जागरुक नागरिक क्षेत्र में थे ,जिन्होने राष्ट्रीय यज्ञ में आगे बढ़कर आहुति दी थी, उन्होने ही क्षेत्र का नाम उजागर किया था , लेकिन उनके ही अज्ञानी रुढ़िग्रस्त समाज ने उन्हें हीन समझ रखा था , समयलाल ने भाई की राय जानकर इस वैवाहिक प्रस्ताव को संहर्ष स्वीकार कर लिया।

मई में शादी निश्चित हो गई, लेकिन बारात व लेन देन के सम्बन्ध में समयलाल ने पूर्व में ही सूचित कर दिया कि बारात में चालीस पैंतालीस ब्यक्ति आयेंगे। सभी विरादरी के रहेंगे। सब एक पंगत में बैठेंगे। दहेज के नाम पर कोई मांग नही है ; जो देना है लड़की को देंगे। लड़की को समझा देंगे कि इस घर में परदा नहीं होगा। जिस प्रकार वह अपने माता-पिता के घर में रहती रही है, उसी प्रकार यहां भी रहेगी,

सेनानी महादेव ने उसकी सारी बातें सहर्ष स्वीकार करली , सारी बातें तो उसी के हित व पक्ष की थी, उसे इस सम्बन्ध से भारी प्रसन्नता हुई,

x x x x

रणविजय ने कुछ लोगों से परामर्श लिया, फिर उसने एक चिमनी खोल दी , ताकि ईंटों की आवश्यकता पूरी की जा सके। वह एक बगीचा भी तैयार करवा रहे थे। एक तालाब बनवाने की योजना थी, इनके लिये भी ईंटों की आवश्यकता थी, चिमनी का सारा कार्य, द्रुत गति से प्रारम्भ हुआ। वर्षा प्रारम्भ होने के पूर्व चिमनी से दो राउण्ड ईंटे निकल गयीं। तीसरे राउण्ड की ईंटे वर्षाऋतु में चिमनी में ही पड़ी रहीं।

ज्येष्ठ के दशहरे मे नींव खुदाई का काम प्रारम्भ हुआ,फिर इस्माइल, हबीब, शरीफ, व उनके शिष्य रामप्रसाद, अरुण, कामता भवन निर्माण में लग गये। क्षेत्र के कई बढ़ई दरवाजे-

खिड़की बनाने के काम में जुट गये। इसी बीच में गांव के तीस–चालीस लड़के एकत्रित कर घर में स्कूल संचालित कर दिया गया।

क्षेत्र के लिये यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात थी, इससे क्षेत्र में उनके इस पुण्य कार्य की गाथा गायी जाने लगी। लोग उन्हें देवता; पुण्यात्मा ; न जाने किन–किन नामों से संवोधित करने लगे। क्षेत्र में उनका बड़ा यश फैल गया।उनके नाम के साथ–साथ समयलाल का भी नाम गौरव के साथ लिया जाने लगा क्योंकि प्रेरणा स्त्रोत तो वही थे ; उन्हीं के कारण रणविजय ने विद्यालय खोलने का संकल्प बनाया था, यही घर से संचालित छोटी सी संस्था धीरे–धीरे आगे बढ़ती गई ; उसका स्वरुप बदलता गया।

X X X X

बारात में समयलाल के सभी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के साथी, मित्र व इफ़्तखार हुसेन आये थे , उसने रुढ़िग्रस्त, परम्परावादी दृष्टिकोण वाले नात–रिश्तेदारों को भी नहीं आमंत्रित किया था, क्योकि उनकी दृष्टि में वह जाति भ्रष्ट थे, ऐसी स्थिति में वह उन्हें क्यों आमंत्रित करते ?।

समयलाल ने अपने ढंग से विवाह सम्पन्न कराया। रश्मि विदा होकर अपने ससुराल आ गई। सास–ससुर के मधुर व्यवहार, ढेर सारे प्यार से वह आत्म विभोर हो गई। उसे लगा कि वह संसार में सबसे सुखी व भाग्यशालिनी बहू है, वह घर की व्यवस्था व गृह कार्य मं प्राणपण से जुट गई। उसकी आज्ञाकारिता, श्रमशीलता व निरालस्य से सभी प्रसन्न थे ,

X X X X

रणविजय ने एक वर्ष बीतते–बीतते बारह कमरे वाली बरामदे सहित लम्बी बिल्डिङ्ग तैयार करवा दी। यह बिल्डिङ्ग प्राइमरी कक्षाओं के लिये हो गई। दूसरे वर्ष मिडिल स्कूल की भव्य इमारत बनकर तैयार हो गई। तीसरे वर्ष हाईस्कूल की इमारत बनने लगी जो लगातार दो वर्ष से कुछ अधिक समय तक बनती रही। चार कारीगर अपने सहायकों के साथ व बारह तेरह मजदूर लगातार चार वर्ष तक विद्यालय भवन निर्माण में लगे रहे। इसके पश्चात् तालाब –निर्माण में लग गये। उसकी खुदाई में सैकड़ों मजदूर डेढ़ दो मांह पूर्व से लगे थे, जब वांछित खुदाई हो गई, तब पक्की ईंटों से उसकी जुड़ाई ; घाट निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ, उसके निर्माण में भी लगभग दो वर्ष लग गये। जब बनकर तैयार हुआ तो लोगों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। वह –

अपने ढंग का बहुत सुन्दर तालाब था। उस प्रकार का तालाब जिले में कहीं नहीं था।


तालाब बन जाने के बाद उसी की बगल में एक सुन्दर मन्दिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ, लगभग तीन वर्ष में मन्दिर बनकर तैयार हुआ, जयपुर से संगमरमर की सुन्दर मूर्तियां बनवाकर लायी गई, उन मूर्तियों में भगवान शंकर ; सरस्वती ; गणेश जी ; रणविजय् व सुशीला की भव्य मूर्तियां थी, मन्दिर में सभी मूर्तियां सोत्साह प्रतिष्ठित की गईं। एक भव्य जलसा मनाया गया ,

कुछ लोगों ने मन्दिर में जीवित मानव की मूर्तियां देवताओं के बगल में लगाने पर आपत्तियाँ खड़ी क़ी ,उनका कथन था कि ऐसा करना शास्त्रीय विधान के प्रतिकूल है, किसी भी मानव की मूर्ति मन्दिर में देवताओं के बगल में नहीं रखी जानी चाहिये, लेकिन रणविजय के पुरोहित कालीचरण बाबा की दृष्टि में यह कार्य उचित था। उनका कथन था कि यह कार्य शास्त्रीय विधान् के विरुद्ध भले ही हो, लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से उपयुक्त है, क्योंकि उन्होंने क्षेत्र की ज़नता के हितार्थ जो कार्य किया; अपना धन जनता के कल्याणार्थ पानी की तरह बहाया, वह जीता- जागता देवता ही है, उनकी सपत्नीक मूर्ति-प्रतिष्ठापना में औचित्य ही औचित्य है,

तालाब के बगल में पड़े विस्तृत मैदान में मेला लगवाने की योजना बन गई। जगह-जगह लोग़ों क़ो सूचित किया गया। बड़े-बड़े गांवों में डुग्गी पीटी गई; पर्चे छपवाकर बांटे गये कि पितृ बिसर्जन के दिन दंगल लगेगा। यह दंगल दो दिन का होगा, पहलवानों का भोजन निःशुल्क रहेगा। दूर -दूर से आये पहलवानों को आने -जाने का खर्च दिया जायगा , कुश्तियों में पहलवानों को ईनाम दिया जायेगा , हारने वाले को जीतने वाले क़ा आधा पुरस्कार दिया जायगा।

लोगों में अपार उत्साह था, पहले ही वर्ष पितृ विसर्जन के एक सप्ताह पूर्व से ही क्षेत्रीय दुकाने आकर डट गयी।अ़च्छा मेला लगा। दंगल में दूर-दूर से नाम़ी पहलवान आये थे, दंगल में भी अपार भीड़ थी, धीरे-धीरे दंगल व मेला जिले से बाहर भी प्रसिद्ध हो गया।

मन्दिर, तालाब,विद्यालय भवन लोगों के आकर्षण का केन्द्र थे। जो भी मेला देखने आता ; मन्दिर व तालाब अवश्य देखता। मन्दिर मे अपना मस्तक टेकता। रणविजय व सुशीला की प्रशंसा करता,

विद्यालय कालान्तर में इण्टरमीडिएट कालेज हो गया, उसके भवन का विस्तार किया-

गया, आज संस्था क्षेत्र की अभूतपूर्व सेवा कर रही है इसी संस्था से न जाने कितने सैनिक, अध्यापक ,इंजीनियर, प्रशासक नेता निकले....

X X X X

समयलाल को अधिक से अधिक विद्यालय खुलवाने की धुन सवार थी, वह उपयुक्त स्थान व व्यक्तियों की तलाश में क्षेत्र व क्षेत्र के बाहर भ्रमण करने लगे। यत्र-तत्र लोगों से मिलकर, उनके सहयोग से , चन्दा द्वारा अथवा किसी धनी व्यक्ति के निजी धन से प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना करता गया, ये विद्यालय प्रारम्भ में किसी की चौपाल में; तो किसी के मकान में संचालित हुये। फिर गांव व आस-पास के लोगों की सहायता से मिट्टी की दीवाल खड़ी करके ; छप्पर डालकर अलग एक , दो, तीन जैसी भी स्थिति होती, कमरे बनवा दिये जाते। धीरे-धीरें उन संस्थाओं का रुप परिवर्तन होता रहता।

समयलाल जमुनापार भी गये। वहाँ कई पुरासने जमीन्दारों के सहयोग से कुछ विद्यालय खुलवाये। कन्याओं के लिये भी कुछ मिडिल स्कूल खुलवाये। अपने गांव में भी अपनी मॉ के नाम एक बालिका विद्यालय खुलवाया जिसमें बालक- बालिकाये सभी पढ़ने जाते थे -

पांच छः साल बीतते -बीतते समयलाल ने क्षेत्र व क्षेत्र के बाहर चौदह संस्थाओं को जन्म दे दिया, इससे गांव के बालक-बालिकाओं को अक्षर ज्ञान की सुविधा मिल गयी, इससे समयलाल की गॉव-गॉव में सराहना हुई; क्षेत्र के बाहर भी उसकी ख्याति निःस्वार्थ समाज सेवक के रुप में दूर-दूर तक फैल गयी। उसकी विरादरी के लोग जो अब तक तने थे , उसे अस्पृश्य समझते थे, ढीले पड़ते गये। उसके परम्परा विरुद्ध कार्य से अप्रसन्न लोग भी कहने लगे कि समयलाल में चाहे जितनी खामियाँ हो ; जात-पाँत न मानता हो ; छुआछूत न मानता हो; देवी-देवताओं पर उसका विश्वास न हो ; हमारे विश्वासों के अनुसार उसका आचरण न हो; तो भी उसका संस्थायें खुलवा देने का कार्य इतना पावन है कि उसके सामने उसकी सारी खामियां नगण्डय हो जाती है, उसने क्षेत्र में संस्थायें खुलवाकर जो प्रशंसनीय कार्य किया है ; उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय , वह कम है,

+++|

रामेश्वर जिला न्यायालय में प्रक्टिस करने लगा। साथ में उसने अपने छोटे भाई अवधेश को भी रखकर पढ़ाने लगा। अवधेश बी०एस०सी० का छात्र था, रामेश्वर की इच्छा थी कि अवधेश भी बी०एस०सी० करने के बाद एल०एल०बी० कर ले. वह भी वकालत के पेशे में आ जाये क्योंकि उसकी दृष्टि में यह सम्मानित पेशा था; स्वतंत्र पेशा था इस पेशे में रहकर वह सार्वजनिक पढ़ो के लिये जब कभी चाहेगा ; चुनाव भी लड़ सकेगा ,

अवधेश भी वकालत पेशे को पसन्द कर रहा था।

रानी को इलाहाबाद में एकाकीपन महसूस हो रहा था, यद्यपि साथ में उसका पुत्र भी था जो एक कालेज में कक्षा नौं में पढ़ने लगा था, तो भी कभी-कभी वह भयभीत हो जाती थी , अचानक कभी कोई बात हो ही जाय, तो वह क्या करेगी ? फिर वह साहस बटोरती और सब कुछ ईश्वर को सौंपकर ; उनसे मन ही मन प्रार्थना करती कि "हे भगवन् ! आप ही जगत के स्वामी है ; जगतनियन्ता है आपकी कृपा दृष्टि बनी रहे। आप ही सब कुछ है आप सब प्रकार से सबका मंगल करें ; सबको सद्बुद्धि सद्ज्ञान दो; सुख-शान्ति दो।"

समयलाल दो चार माह में कभी एक दो दिन के लिये इलाहाबाद पहुँच जाता था। वह रानी से ; यह सोचकर लगभग निश्चिन्त था कि वह अध्यापिका है; अपने पैरों पर खड़ी है ; कमा रही है, निजी मकान है, अच्छा पड़ोस है ; इसलिये चिन्ता की कोई विशेष बात नहीं है, रामेश्वर कभी किसी काम से पहुँच जाता था, अवधेश भी कभी-कभी चाची के पास छुट्टियों में पहूँच जाता था, इससे रानी को सम्बल और मानसिक शान्ति मिल जाती थी।

रानी ने इलाहाबाद में रहने का भरपूर लाभ उठाया। उसने हिन्दी से एस०ए० किया। फिर उसने राजनीति शास्त्र से एम०ए० कर लिया।वह अपने रिक्त समय में क्या करती ? अतः वह अपने अध्ययन के साथ-साथ बच्चे को भी पढ़ाती और संस्कारित करती रही। उसका मार्गदर्शन करती रही। उसे महापुरुषों की कहानियां सुना-सुना कर प्रोत्साहित व प्रेरित करती रही।

X X X X

जमीन सम्बन्धी घरेलू विवाद तो बंटवारे के समय से ही यदा-कदा खड़ा हो जाता था लेकिन सयानों के कारण वह शान्त हो जाता था। अब जब लड़के जवान हुये तो उनमें अपना-

पराया अधिक होने के कारण विवाद कभी-कभी उग्ररूप भी धारण करने लगा। ऐसा ही विवाद बगीचे की भूमि को लेकर उठ खड़ा हुआ, जगदीश ने रामेश्वर के पास सूचना भेजकर बुलवाया। रामेश्वर अपनी मोटर साइकल से फतेहपुर से चला, शनिवार का दिन था, अगले तीन दिनो तक कचहरी बन्द थी।

जगदीश धीरे-धीरे गृहस्थी से सन्यास लेता जा रहा था, निर्मला दमा की मरीज हो गयी थी, मॉ की अस्वस्थता के कारण रामेश्वर रश्मि को अपने पास नहीं रखता था, माता पिता की देखभाल व सेवा सुश्रुषा के लिये रश्मि का घर में रहना आवश्यक था, बड़ी गृहस्थी थी, दो तीन नौकर रहते थे, उन्हें भी प्रातः जलपान देना पड़ता था, घर का काम भी बहुत अधिक था, रश्मि दिन भर इतना व्यस्त रहती कि उसे पता ही नही चलता कि दिन कैसे बढ़ा गया, लेकिन रश्मि अपने दायित्वों को प्रसन्नता पूर्वक निभा रही थी।

निर्मला को इस बात से दुःख था कि रश्मि की गोद अब भी खाली है शादी हुये छः वर्ष बीत गये थे, लेकिन नाती का मुँह देखने की उसकी लालसा अतृप्त ही बनी रही। कभी-कभी दमा का प्रकोप जब बढ़ जाता तब ऐसा लगता कि अब वह गई, जब वह फिर कुछ ठीक हो जाती तो कहती "हे भगवान! वह दिन तो दिखा दे कि मैं नाती का मुँह देख लूं।" लेकिन यह उसके वश में न था, वह जीवन और मृत्यु के झूले में लटकी हुई थी।

रामेश्वर फतेहपुर से तीस किलोमीटर का रास्ता जी.टी. रोड से तै किया होगा कि कुहरा से अधेरा छा गया। जाड़ा भी खूब था। कल सायं तक पानी वर्षा था। आज चार बजे शायं से बादल फट गये थे, दिन से ही कुहरा पड़ने लगा था। सामने की बत्तियां टिमटिमाती सी दीख पड़ती थी, रामेश्वर सावधानी पूर्वक संतुलित वेग से जा रहा था, तभी सामने से द्रुत गति से आ रहे ट्रक ने उसे टक्कर दे दिया। ट्रक रुका नही। रामेश्वर की राजदूत मोटर साइकिल क्षतिग्रस्त हो गई। रामेश्वर एक ओर गिरा, तत्काल उसकी वहीं मृत्यु हो गई, लेकिन उस स्थिति में वहाँ उसे कोई उठाने वाला नहीं था, लाश एक ओर पड़ी थी। सड़क में खून विखरा पड़ा था, मोटर साइकिल टूटी पड़ी थी, इसकी सूचना एक जीप वाले ने पड़ोसी थाना खागा में दिया। वहाँ पुलिस पहुँची। अगल-बगल वाहनों के गुजरने पर रोक लगा दी गई। वहाँ पुलिस तैनात हो गई, फिर उनकी फोटोग्राफी की गई, तब लाश व मोटर साइकिल हटाई गई, रामेश्वर की जेब से व मोटर साइकिल की डिग्गी से ऐसे कागज, डायरी व कुछ मुकदमों की फाइलें मिलीं जिससे -

उसका पता चला। तत्काल पुलिस उनके गांव गयी। दुर्घटना की सूचना दी। मृत्यु का भी

समाचार दिया। समाचार सुनते ही निर्मला मूर्छित हो गयी, रश्मि को भी लकवा सा मार गया। जगदीश विक्षिप्त से हो गये।

इस दारुण दुर्घटना का समाचार विजली की तरह चारो ओर फैल गया। हाहाकार मच गया, समयलाल घर से पैंतीस किलामीटर दूर थे। उन्हें भी यह सूचना मिली। वह भी उसी दिन रात में घर पहुँच गये, इलाहाबाद से रानी व उनका पुत्र भी आ गया। अवधेश भी रोता हुआ फतेहपुर से घर पहुँचा, सारा परिवार असीम शोक और पीड़ा में डूब गया। अप्रत्याशित दारुण विपत्ति ने घर भर को तोड़ दिया, समयलाल की वृद्धा माँ भी चल बसी।

तीसरे दिन सभी परिजनों की उपस्थिति में रामेश्वर व दुलारी का साथ-साथ अगल-बगल दाह संस्कार किया गया। घर में रश्मि व जगदीश की हालत अच्छी नहीं थी। निर्मला का भी आजकल लगा था, लोगो को भय था कि रश्मि और जगदीश को कभी भी कुछ हो सकता है, निर्मला की स्थिति तो पहले से ही खराब चल रही है, जो नात-रिश्तेदार अभी तक किन्हीं कारणों से इस परिवार से परहेज रखते थे, वे भी इस विपत्ति की घड़ी में उनके घर आये। उन्हें तरह-तरह से सान्त्वना देते रहे। रश्मि के पिता भी आये। हृदय -विदारक दृश्य को देखकर उनकी आंखों से अश्रु प्रवाहित हो गये। कुछ क्षण पश्चात् संयत होने पर उन्होंने सभी परिजनों को समझाया। उन्हें तरह-तरह से सान्त्वना देते रहे। संसार की नश्वरता पर तरह-तरह से अपनी बात कहते रहे,

उन्होंने दार्शनिक की भाव-मुद्रा में कहा-"संसार तो मेला है, देखो; सुनो ; चलो। यहां कुछ भी तो अपना नहीं है। सारे सांसारिक रिश्ते स्वप्न की तरह विखर जाते हैं.....सारे सांसारिक सम्बन्ध मिथ्या हैं, देखने के लिये कोई भाई है ; कोई पति हे ; कोई पत्नी है, लेकिन शरीर रहने तक ही ये सम्बन्ध हैं। शरीर छूटते ही सारे संबंध समाप्त हो ज़ाते हैं। यहां मायामोह में पड़कर ही जीव सारे कष्टों को भोगता है। सांसारिक मोह से ऊपर उठने पर ही मुक्ति है। क्लेशों से छुटकारा है, लेकिन सामान्य जन के लिये यह अत्यन्त कठिन है, हम लोग तो सांसारिक प्राणी हैं ; ये सारे कष्ट तो मनुष्य के ऊपर ही आते हैं और उन्हें मनुष्य ही ढोता है। चाहे रोकर ढोये चाहे हंसकर ढोये, जब तक जीवन है ; तब तक तो ढोना ही है ; विष का घूंट भी पीना है ......"

फिर समझते हुये कहते- " हम किसी प्राणी के लिये अपनी जान भी दे दें, या शरीर का कोई अंग भी काटकर दे दें तो उससे मुलाकात नहीं होनी है, रोते-रोते मर भी जायें तो गया-

हुआ प्राणी झलक भी दिखाने नही आता है ,जीवन है, तो चाहे जितनी विपत्ति ,आपत्ति आ



जाय, उसे वहन करना ही पड़ेगा, बुद्धिमत्ता तो इसी में है कि जो विपत्ति ऊपर आ पड़ी है, उसका धैर्य रखकर, ईश्वर का स्मरण करते हुए वहन किया जाय, प्राण दे देने से तो कोई वापस आता नहीं ; न मिलता ही है, एक ही तरीका है, उसे धैर्यपूर्वक सहन किया जाय, सहन करने व वहन करने के अलावा कोई अन्य उपाय नहीं है,

हमें हृदय में साहस बटोरकर ; धैर्य रखकर जीवन की रक्षा करनी चाहिये, सामने जो दायित्व है ; उनका निर्वहन करना चाहिये, हमे आगे के सम्बन्ध में भी सोचना चाहिये, जो हुआ , वह कितना ही प्रल्यंकारी क्यो न हुआ हो ; उस पर अब शोक न करना ही बुद्धिमानी है, क्योंकि शोक में डूबे रहने से कोई हित नही है ; स्थिति में कोई परिवर्तन भी नहीं होना है,

समयलाल ज्ञानवान था तो भी वह भी अन्दर ही अन्दर बुरी तरह से आहत हुआ था लेकिन इस पर भी उसने अपना धैर्य और विवेक संयत रखा, वह गहराई से अनुभव कर रहा था कि एक होनहार नवयुवक का असामयिक निधन कितना कचोटने वाला,हृदय का रक्त चूसलेने वाला होता है, इस घटना के आघात के कारण ही माँ भी टूट गयी ; भैया और रश्मि क्षत -विक्षत है ;बुरी तरह से आहत है ! कितनी भयंकर विपत्ति परिवार के ऊपर टूट पड़ी परिवार के ऊपर तो वज्राघात हो गया,घर का विवाद उसे खा गया।

उसने भाई को ढाढ़स देते हुये कहा- "भैया इस संसार की यही गति है , यह शरीर भी अपना नहीं है, वह भी क्षण- क्षण क्षीण होता जा रहा है , हमारे न चाहते हुये भी हमारे शरीर के अंगअपनी शक्ति और क्षमता खोते जा रहे हैं, एक दिन वह भी आयेगा जब हमारा बना बनाया संसार छूट जायेगा, यह घर ,यह सम्पत्ति,यह भूमि,ये बाग- बगीचा ये नात-रिश्तेदार सब छूट जायेंगे, यह तो प्रकृति की लीला है ; उसका नियम है ; उत्पन्न करना , संवारना। फिर अपने में समेट लेना, इसे कोई बदल नही सकता....."

रामेश्वर हमारा पुत्र था ; उस पर हमारी ममता थी ; मोह था, उसका हमने उत्साह और लाड़-प्यार से पालन-पोषण किया था। वह होनहार था ; घर का उदीयमान लाड़ला सदस्य था। घर व गांव का गौरव था ; सम्मान था ; लेकिन वह असमय हमारे बीच से चला गया, वह प्रभु की गोद में समा गया, संसार से उसका सारा नाता टूट गया, यह सब हमारी कल्पनाओं के विरुद्ध हुआ ।यह सब अपने वश के बाहर भी है हम में इस स्थिति को बदलने का सामर्थ्य नहीं है, हम-

उसके सामने निरीह हैं ,हमें तो उसे सहन ही करना है,



मृत्यु तो सर्वत्र अपने पैर पसारे हुये है, वह सबके सिर पर मंडरा रही है, कब कहाँ किसको अपनी गोद में उठा ले, कोई नहीं जानता। वह रोज असंख्य प्राणियों को धीरे से अपनी गोद में समेंट लेती है। हमारा पुत्र भी उसकी गोद में समा गया हम सब लोगो की गति भी उसी ओर है, मिलना -बिछुड़ना सनातन काल से होता चला आया है। ऐसी स्थिति हर प्राणी के सामने कभी न कभी आती ही है, आज हमारे सामने यह स्थिति अधिक दंशकारी बनकर आयी है, हमें धैर्य धारणा करने की आवश्यकता है ; भैया ; आगे की सोचो। उस परमात्मा पर विश्वास करो जिसकी यह सारी रचना है, मन में यह विश्वास करो कि जो कुछ हुआ है ; जो हो रहा है ; वह सब प्रभु की लीला है, संसार का पालन-पोषण ,संसार का संहार सब नियति के ऊपर है । अब शोक में डूबे रहने से ; रात-दिन विलाप करते रहते से कुछ भी नहीं मिलता है, हम प्रकृति की सत्ता को , उसकी गति कों उलट नहीं सकते हैं यहाँ ईश्वरीय सत्ता के सामने किसी का कुछ भी नहीं चलता है, यहां तो केवल हमें अपने कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन ही करना है ; जो कुछ हो सके ; अपनी सामर्थ्यानुसार जन कल्याण करना है, हमें संसार के मोंह शोक ममता से ऊपर उठना है भैया ! हम आगे की भी सोचें।घर में नव जवान बहू बैठी हुई है। उसके सम्बन्ध में भी सोचें। उसका तो सारा भविष्य अन्धकार पूर्ण हो गया है। हमें धैर्य रखकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिये। उसे धैर्य बंधाना चाहिये ; सान्त्वना देनी चाहिये।हमीं उसके सामने शोकग्रस्त बने रहेंगे तो उसे कौन समझायेगा; कौन सान्त्वना देगा ?

X X X X

समयलाल ने मन ही मन विचार कर लिया कि वह अपने गांव में एक कालेज खोलेगा, वह कालेज रामेश्वर के नाम पर होगा, इससे उसकी स्मृति सुरक्षित रहेगी, लेकिन रश्मि का क्या होगा ? क्या सम्पूर्ण जीवन वह विधवा के रुप में ही रहे ? आखिर रश्मि का इसमें क्या दोष है ? वह रामेश्वर की धर्मपत्नी थी उसकी जीवन संगिनी थी, लेकिन वह तो बीच में ही साथ छोड़ गया, अब रश्मि संगविहीन हो गई। आखिरकार उसकी उम्र ही कितनी है ? मुश्किल से पच्चीस वर्ष , वह उस घर में क्या वैधव्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये ही रहे ?

समयलाल के मन में उसके पुनर्विवाह की बात आती जाती रही। लेकिन इस संबंध-

में उसने किसी से कोई चर्चा फिलहाल न करना ही उचित समझा। सीमा के क्षत -विक्षत हृदय

के घावों को वह हरा नहीं करना चाहता था। रामेश्वर की घटना से वह बुरी तरह आहत हुई थी, चार-पांच घंटे मूर्छित पड़ी रही थी। बीच-बीच उसे झटका सा लगता रहा था। जिससे वह अचेत हो जाती थी, खाना-पीना रोगियों की तरह हो गया था, दिन भर में कभी एक रोटी कभी वह भी नहीं हो रहा था। वह दुर्बल हो गयी थी।

समय सबसे बड़ा बैद्य है ज्यों-ज्यों समय सरकता गया; लोगों का पारस्परिक उठना-बैठना होता रहा ; अपने-अपने क्लेशों व पीड़ाओं को भी बताते रहे, एक दूसरे को समझाते समझते रहे, औरतें भी तमाम प्रकार से एक दूसरे का उदाहरण दे देकर समझाती रहीं ; उसे सान्त्वना देती रहीं इससे धीरे-धीरे उसकी स्थिति सामान्य होती गई, एक दो वर्ष बीतते बीतते वह लगभग सामान्य हो गई। उसके स्वास्थ्य में भी अपेक्षित सुधार हो गया, लेकिन उसके मुखमण्डल से मुस्कान विलीन हो गयी थी जो जीवन कीं एक पहचान थी।

++++

# सोलह



समयलाल ने अपने अग्रज से रामेश्वर की स्मृति में एक कालेज खोलने का विचार-विमर्श किया। भाई ने तो कभी भी समयलाल के किसी विचार या इच्छा से असहमति नहीं जताई थी, फिर इस पुण्य कार्य में वह कोई अनिच्छा या असहमति क्यों व्यक्त करता, इस विचार से उसे आन्तरिक प्रसन्नता ही हुई। जगदीश ने इस कार्य को पूरा करने की दृष्टि से कहा- " तुम घर पर रहकर अपनी देखरेख में सब काम कराओं मुझसे जो हो सकेगा, मैं भी करूँगा, लेकिन तुम्हारी उपस्थिति जरुरी है, तुम घर पर ही रहो "

समयलाल ने अपनी एक पांच बीघे की आराजी में जो चार-पांच गावों के बीच में थी, सभी पड़ोसी गांवों से एक से सवा किलोमीटर की दूरी पर थी ; कालेज की नीव डलवा दी,

उसने अपने मामाश्री रणविजय का अनुकरण किया। उसने भी उस आराजी से लगे वगीचे में एक चिमनी खुलवा दी। ईंटे पारने वाले बुलाये गये। वे आये। धीरे-धीरे ईंट पाथने वाले बड़ी संख्या में हो गये,ईंटे बनती गई। चिमनी में ईंटें पकती गईं। पकी ईंटो के बड़े-बड़े चट्ठे लगते रहे। इमारत की नींव खोदी गई ; फिर अच्छे कारीगर बुलाये गये, इमारत बनने का काम प्रारम्भ हुआ, काम चलता रहा ,

प्रथम वर्ष में चार कमरे बने, एक कार्यालय का अलग कमरा बना, फिर दूसरे वर्ष छ कमरे बने, स्कूल संचालित हुआ, कक्षा पांच उत्तीर्ण लड़कों के अभिभावकों से अपने बच्चों को इस संस्था में प्रवेंश देने के लिये कहा गया, अध्यापक भी भरती किये गये संस्था चल पड़ी लड़कों की संख्या क्रमश : बढ़ती गई, भवन बनता गया।

बगल में एक पांच कमरों वाली इमारत में प्राथमिक पाठशाला पहले से ही संचालित कर दी गई थी, उसमें छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं की संख्या भी निरन्तर बढ़ती गयी। इस प्राथमिक पाठशाला का जन्म तो उसी के घर में कुछ वर्षों पूर्व हो गया था। सुविधा की दृष्टि से फिर वह पाठशाला उस बगीचे में आ गई थी। लकड़ी गाड़-गाड़ कर, ऊपर से सरपत छाकर पर्णकुटी को ही पाठशाला बना दी गई थी, फिर जब पक्का भवन बन गया ; तो पाठशाला उसमें स्थानान्तरित कर दी गई। रामेश्वर कालेज भवन और प्राथमिक पाठशाला-भवन एक दूसरे के आमने -सामने सौ गज की दूरी पर थे। कन्यायें कालेज जाने लगीं ।

समयलाल को नहीं मालूम था, कि उसके पूर्वजों से उत्तराधिकार में कितना सोना चाँदी बांट में मिला है, उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि चौदह कमरे बन गये ; जिले मे उसकी इमारत की चर्चा होने लगी , लेकिन उसके घर का धन समाप्त नहीं हुआ, उसे तो प्रारम्भ में ऐसा लगा कि चौदह कमरों का निर्माण ही हो जाय तो बहुत है, चौदह कमरे भी वन गये, धन भी लगभग यथावत् सा बना रहा।



X X X X

अवधेश ने एल०एल० बी० भी कर लिया। फतेहपुर में प्रक्टिस भी करने लगा। अपने अग्रज रामेश्वर का स्थान ग्रहण कर लिया रामेश्वर के मुवक्किल उसके पास आने लगे ,

अवधेश की शादी के लिये तभी से प्रस्ताव आने शुरु हो गये थे, जब वह एल०एल०बी० का छात्र था लेकिन समयलाल ने यह कहकर सभी प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था कि जब तक वह एल०एल० बी० नहीं कर लेता ; तब तक शादी की कोई चर्चा नहीं की जायेगी,अतः प्रस्ताव आते रहे ; चर्चा चलती रही, लेकिन शादी कहीं निश्चित नहीं की गयी।

समयलाल ने संस्था का नाम " रामेश्वर इण्टरमीडिएट कालेज, तेजपुर, फतेहपुर " बड़े-बड़े सुनहरे अक्षरों में कालेज भवन के मध्य में लिखवा दिया। शिक्षकों का वेतन लड़को की फीस से दिया जाता था। शिक्षकों को पूरा वेतन नहीं मिलता था; आधे-तिहाई वेतन में काम करते थे, दूर-दूर के शिक्षक थे, वे पूरी तरह वेतन पर ही आधारित थे, हर वर्ष कुछ शिक्षक सरकारी नौकरी मिल जाने पर स्कूल छोड़कर चले जाते थे। इसलिये शिक्षण कार्य में कुछ अव्यवस्था बनी रहती थीं। संस्था को अब तक कोई सुयोग्य प्राचार्य भी नहीं मिला था, आये तो तीन प्राचार्य थे ; लेकिन कोई लगातार दो वर्ष तक नहीं रुका था। इसलिये समयलाल ने रानी को इलाहाबाद से बुला लिया और उसे संस्था संभालने का दायित्व सौंप दिया। रानी जिसका वास्तविक नाम विद्यावती था ; संस्था की प्रधानाचार्या हो गयी।

विद्यावती दो विषयों से एम०ए० कर ली थी ; ट्रेन्ड थी ; अब तक इस संस्था में इतना योग्य प्रधानाचार्य नहीं आया था, विद्यावती अनुभवी थी ; अध्यापन में भी कुशल थी ; व्यवहार कुशल थी, उसमें संस्था -संचालन की क्षमता थी। घर में भी उसकी आवश्यकता थी। सब मिलाकर उसका इलाहाबाद से गाँव आ जाना संस्था व परिवार के हित में ही था।

प्रारम्भ में विद्यावती को कुछ अटपटा सा लगा। कहाँ इलाहाबाद का सुव्यवस्थित-

कन्या इण्टरमीडिएट कालेज कहां गांव का असुविधाओं से भरा हुआ लड़कों का इण्टरमीडिएट



कालेज। दोनों में कोई साम्यता नहीं थी।संस्था वित्तपोषित भी नहीं थी।यद्यपि उसकी सारी कार्यवाही चल रही थी। यह बात अवश्य थी कि शहर में वह गमले में लगे हुये पादप के तुल्य थी; जबकि गांव मे वह भूमि में उगे हुये पादप के समान थी। दोनों स्थानों की सेवाओं का महत्व भी अलग- अलग था,घर आ जाने पर उसे संतोष था।

रामेश्वर को दिवंगत हुये पाँच वर्ष हो गये थे, रश्मि सधवा सी रहते हुये वैधव्य जीवन बिता रही थी, क्योंकि विधवा के परम्परागत वेष व उसके लिये निर्धारित मापदण्ड के अनुसार जीवन यापन का समयलाल ने निषेध किया था। इसलिये उसका रहन-सहन सधवा की तरह ही था, वह केवल मांग में सिन्दूर भर नहीं लगाती थी, वह चूड़ियां पहनती थी ; सामान्य साड़ियां पहनती थी ; यह सब करने के बाद भी वह विधवा ही थी स्वयं की नजरों में भी, दूसरों की दृष्टि में भी ,

समाज में विधवा विवाह का प्रचलन नही था, कुछ समाज सुधारकों ने विधवा विवाह का अभियान चलाया अवश्य था ; कहीं -कहीं एक आध विधवा-विवाह हुये भी थे, लेकिन तथा कथित उच्च जातियों में तो न के बराबर थे।

समयलाल रश्मि का पुनर्विवाह चाहता था क्योंकि उसकी दृष्टि में यह आवश्यक था ,रश्मि की अभी आधी से अधिक अवस्था पड़ी थी। जीवन में कौन जाने, कब कैसी परिस्थिति आ जाये ! फिर नर-नारी का युग्म है; एक दूसरे के बिना दोनों अपूर्ण हैं ; अधूरे हैं ।इसलियें समाज के शुभचिन्तकों का यह कर्त्तव्य है कि वे समयानुकूल व्यवस्था बनाने में सहायक हों। कोई विधवा तो न कहेगी कि उसकी शादी कर दी जाय, कौन विधवा कहेगी "मेरी शादी कर दी जाय , मैं अकेले नहीं रह सकूंगी, या अकेले रहने मे मेरी सुरक्षा नहीं हैं।" यह तो समाज के मूर्धन्य लोगों का कर्तव्य है कि वे सोचें ; समझें ; तदनुकूल सामाजिक व्यवस्था बनायें। यदि समाज में ऐसी चलन नहीं है ; तो उसे चलन में लावें। किसी भी नई बात को समाज में प्रचलन में लाने के लिये किसी न किसी को तो आगे होना ही पड़ेगा। यह कार्य समर्थ लोग ही कर सकते हैं।

समयलाल ने स्वाधीनता सेनानी महादेव को बुलवाया। उनसे विधवा -विवाह के सम्बन्ध में चर्चायें की, विचार-विमर्श किया फिर कहा कि रश्मि का पुनर्विवाह होना उचित है-

समाज में युगों से चली आ रही इस कुरीति का उन्मूलन होना आवश्यक है ; इस कुरीति को किसी भी प्रकार से प्रश्रय नहीं दिया जाना चाहिये। स्वाधीनता सेनानी उनकी राय से सहमत तो थे ,लेकिन अशिक्षित व रुढ़िवादी समाज में क्या उसके साथ कोई विवाह करने को भी तैयार होगा ? यह प्रश्न उनके सामने खड़ा था, उन्हें भय था कि लोग विधवा- विवाह के लिये राजी न होंगे , फिर उसने समयलाल से कहा-' बात आपकी उचित है ; मैं भी विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में हूँ लेकिन लोग वेद और शास्त्रों का उदाहरण देकर नाक भौं सिकोलेंगे ; कोई पिता विधवा को बहू के रुप में स्वीकार करने को तैयार न होगा, परम्परा के सामने अच्छे-अच्छे नतमस्तक हो जाते हैं ; वे उसका निषेध नहीं कर पाते है ,

समयलाल ने वेद और शास्त्रों की बात सुनकर कहा-

" विधवा -विवाह तो ऋग्वेद काल में भी होते थे , इसके सम्बन्ध में ऋग्वेद मं एक दो जगह उल्लेख भी है ; अथर्ववेद में भी विधवा स्त्री को पुनर्विवाह के लिये कहा गया है, बीच में किन्हीं कारणों से यह व्यवस्था टूट गई, लेकिन इसे पुनः प्रचलन में लाना विवेकशील व समर्थवानों का कर्तव्य है, हमारी सारी व्यवस्था मानवीय है ; मानव निर्मित है ; सारे धर्मग्रन्थ भी मानव निर्मित हैं, इसीलिये इनमें समयानुसार परिवर्तन, संशोधन एवं सुधार करना आवश्यक है। इसमें मानव समाज का हित एवं कल्याण है। सबसे अधिक मूल्यवान और पूज्यनीय मनुष्य की जीवनी शक्ति है। यदि शास्त्रों में इसकी चर्चा नहीं है ; तो हमें विधवा की जीवनी शक्ति को समाज हित में लगाने हेतु उसके साथ हो रहे अन्याय का विरोध करना चाहिये। उसका पुनर्विवाह आज के युग की एक आवश्यकता है अतः आपसे हमारा अनुरोध है कि आप घर-वर की तलाश करे। हर प्रकार से ढूंढ़ने का प्रयास करें।शादी का सारा व्ययभार हम उठायेंगे। उसके सुखद जीवन हेतु हमें जो भी खर्च करना पड़ेगा ; हम सहर्ष करेंगे। परम्परा को पकड़कर बैठे रहना उचित नही है।

X X X X

महादेव रश्मि के पुनर्विवाह हेतु कई गांव गये, अपने नात-रिश्तेदारों से भी वर तलाशने व कहीं उनकी दृष्टि में उपयुक्त लड़का हो , तो उसकी सूचना देने को कहा-लेकिन जहां भी सेनानी ने पुनर्विवाह की बात कही; लोग उसकी बात को सुनकर भी अनसुना कर देते रहे, लोग चाहते ही नहीं थे कि विधवा विवाह हो। लोगो को सुनने में भी अटपटा सा लगता रहा। जब-

अथक प्रयास के बाद भी कोई कुवांरा लड़का नहीं मिला ,तो विधुर लड़कों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। दो तीन विधुर मिले भी , वे तो शादी के लिये इच्छुक थे ; लेकिन वे विधवा से विवाह के पक्ष में नही थे। एक विधुर के पास गये, उसकी उम्र पैंतालीस छियालीस वर्ष की थी, उसके एक लड़की तीन लड़के थे, लड़की की शादी भी हो गयी थी। विवशता में महादेव ने उसके समक्ष भी प्रस्ताव रखा, लेकिन उसके वृद्ध बाप ने ; जिसका सिर हिल रहा था कहा- " मुझे लड़की के सम्बन्ध में जानकारी मिल गयी है मैं ने सब सुन लिया है; लड़की के भले ही कोई सन्तान न हो ; लेकिन उसकी शादी गौना तो हो गया है ना! ऐसी स्थिति में हम उस लड़की को कैसे स्वीकार कर सकते हैं ? हम विधवा लड़की से अपने लड़के का पुनर्विवाह नहीं करेंगे, हम ऐसी लड़की चाहते हैं जिसकी शादी न हुई हो। शादी भी हुई हो तो ससुराल न गई हो..."

महादेव ने अनुभव किया कि समाज में औरतों की स्थिति बड़ी दयनीय है ; विधवाओं की स्थिति तो और भी बड़ी बुरी है। वह हारकर घर बैठ गया। उसने समझ लिया कि रश्मि के भाग्य में जीवन साथी का संयोग ही नहीं है ; अन्यथा एक सुन्दर पढ़ा-लिखा वकील लड़का क्यों विछुड़ जाता ? फिर सोचता ; समाज नारियों के प्रति कितना क्रूर है ? एक ओर तीन तीन चार-चार संतानों वाले विधुर अपनी शादी कन्याओं से रचा लेते हैं ; दूसरी ओर एक विधवा जिसके कोई सन्तान नहीं है , उसे कोई कुंवारा लड़का पत्नी के रुप में स्वीकार करने को तैयार नहीं है, कितनी दुःखद् स्थिति है ?

X X X X

महादेव समयलाल से मिले। वह सभी प्रकार से निराश थे।उन्होंने भारी मन से अपनी यात्रा का सारा विवरण दिया व समाज में विधवाओं की कितनी उपेक्षा है ; उनकी कितनी दयनीय स्थिति है, समाज उनके प्रति कितना क्रूर हे; इससे भी उसे अवगत किया। फिर सेनानी ने हाथ जोड़कर कहा-" आप ही कुछ कर सकते है, हमारे वश में तो नहीं है। हमें विश्वास है कि आप चाह लेंगे तो उसका पुनर्विवाह हो जायेगा , आप में सामर्थ्य है ; ज्ञान है; आप विद्वान है, आप जो भी करेंगे; वह भावी समाज के लिये आदर्श होगा। अच्छा होगा, हमें आप पर पूर्ण आस्था है, क्योंकि आप भी रश्मि के धर्म पिता है, आप उसके शुभचिन्तक हैं, आप उसके भविष्य को लेकर तो मुझसे भी अधिक चिन्तित है, मैं सब कुछ आप पर छोड़ता हूँ, जैसा आप उचित समझें; करें। चाहे उसका पुनर्विवाह करें, चाहे उसे यों ही जीवन वितानें-

दें।उसके भाग्य में यदि सुख लिखा होता तो ऐसा होता ही क्यों ?" यह कहते-कहते उनकी आंखों में आँसू आ गये।

समयलाल गम्भीरता पूर्वक सोचते रहे ; फिर बोले- " यह सब संयोग की बात है, उसके भाग्य में यह नहीं लिखा है, कि वह विधवा होकर जिये, हाँ ; यदि हम लोग चाहेंगे कि वह ऐसा ही जीवन जिये तो फिर वह ऐसा जीवन जीने के लिये बाध्य हो ही जायेगी। ठीक है मैं भी अपने ढंग से खोज-खबर करता हूँ."

समयलाल ने अग्रज से परामर्श किया। फिर अवधेश से बाते की। अवधेश पहलें हिचकिचा रहा था, सामाजिक व्यवस्था के अनुसार भाभी माँ के रुप में होती है, लेकिन समयलाल के समझाने पर वह राजी हो गया, जगदीश का तो स्वभाव ही बन गया था कि अनुज के सभी निर्णयों पर अपनी सहमति की मुहर लगा दे यानी जो अनुज करे ; सब ठीक है,

रश्मि को समझाते हुये समयलाल ने कहा-" देखो बेटी ! तुम इस घर की बहू हो। दुर्भाग्य से तुम्हारे मस्तक का सिन्दूर पुँछ गया। तुम जीवन साथी बिहीन हो गयी। हमारा होनहार लड़का असमय ही काल के गाल में समा गया, इसमें किसी का कोई दोष नहीं है। तुम्हारा तो इसमें जरा भी दोष नही है फिर तुम एकाकी वैधव्य पूर्ण जीवन क्यों जियो ?यह जीवन बहुत बड़ा है ; कुछ भी नहीं है, नारी का एकाकी रहना, सुरक्षा एवं सामाजिक दृष्टि से भी ठीक नहीं है। उसे अनेक अवसरों पर तिरस्कार भी सहना पड़ता है ; अनेक शुभ अवसरो पर उसका जाना निषेध रहता है, बहुत से लोग प्रातः उसका चेहरा देखना पसन्द नहीं करते है। इन सबसे उसका मानसिक संताप धनीभूत होता है; जबकि इन सारी स्थितियों के लिये उसका लेशमात्र भी दोष नहीं है- फिर भी उसे इन क्लेशों को सहना पड़ता है।"

"इसलिये हम लोगों ने तुम्हारे पुनर्विवाह की बात सोचे हैं, यह भार भाई महादेव पर था, लेकिन वह कोई व्यवस्था बना सकने में समर्थ नहीं हुये। अतः हमने निर्णय लिया है कि हमारी बहू हमारे घर की बहू ही रहेगी।हम अमूल्य रत्न को अन्यत्र अज्ञात लोगों के हाथ में न सौपेंगे। वह इस घर में जिस सम्मान के साथ आयी थी उसकी अर्थी भी उसी सम्मान के साथ इसी घर से उठेगी। उसे घर से बाहर किसी भी रुप में पैर उठाने की स्थिति हम नहीं आने देंगे।

हमारा मतलब तुम समझ गयी होगी। मैं स्पष्ट कर दूँ, हम अवधेश के साथ तुम्हारा पुनर्विवाह करने जा रहे हैं, हमारे इस निर्णय को तुम मन से ह्रदय से स्वीकार करो। यह कहकर-

समयलाल घर के आंगन से निकलकर द्वार पर आ गये, रश्मि अवाक् रही। उसने ऐसा न तो सोचा था न ही ऐसी कल्पना ही की थी , उसने अपनी मूक सहमति दे दी ,

X X X X

एक निश्चित तिथि को समयलाल ने सेनानी महादेव को बुलवाया। अपने आत्मीय नात-रिश्तेदारों को आमंत्रित करके बुलवाया। हरिद्वार के गुरुदेव श्रीराम शर्मा को पत्र भेजकर कार्यक्रम की सूचना भेजी। उनसे विधवा पुनर्विवाह का कार्यक्रम भेजकर दो आचार्य भेजने का अनुरोध किया जो विवाह सम्पन्न करा सकें , भाई इफ़्तखार हुसेन को इलाहाबाद से निमंत्रण भेजकर बुलवाया। वह बहुत बृद्ध हो गये थे, तो भी वह आये, क्षेत्र के अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं को बुलवाया , क्षेत्रीय विधायक बासुदेव अवस्थी व सांसद गौरीशंकर कक्कड़ को आमंत्रित किया। घर के सामने विशाल पाण्डाल लगवाया, धूमधाम के साथ एक मंच पर वैदिक रीति से हरिद्वार से आये स्नातकों ने विधवा पुनर्विवाह सम्पन्न करवाया। फिर सबका सामूहिक भोज करवाया, उसमें गांव के सभी निम्न समझे जाने वाले व्यक्ति भी सम्मिलित हुये,

सभी उपस्थिति लोगों ने समयलाल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। एक आगन्तुक ने कहा-'समयलाल तो सच्चे ऋषि हैं, क्योंकि "ऋषि : स यो मनुर्हितः" अर्थात् ऋषि वह है जो दूसरों का हित चाहता है, उनके सुख के लिये उनके कल्याण के लिये, उन्हें ऊपर उठाने के लिये यत्न करता है ,'

समयलाल के इस सामाजिक कृत्य को लोगों ने समाज के लिये अनुकरणीय बताया नारी पुरुष के समान ही है, इस विचार को उसने मूर्तिमान किया, ऐसे ही और विधवा-विवाह कराने की बात लोग सोचते रहे।

क्षेत्र क्या, पूरे जिले में ; वृह्द् हिन्दू समाज में समयलाल के इस धूमधाम से सम्पन्न किये गये, विधवा -विवाह के पक्ष -विपक्ष में चर्चा चलने लगी। कुछ लोगों की दृष्टि में विधवा-विवाह धर्म के विरुद्ध था तो कुछ लोगों की दृष्टि में यह सराहनीय व साहस पूर्ण कार्य था जिस की समाज मे जितनी ही प्रशंसा की जाय, वह उतना ही कम है, अधिकांशतः लोग उसकी प्रशंसा ही करते रहे,

कुछ लोग यह कहने लगे कि समयलाल जैसे लोग विधायक, सांसद, बन जायें तो क्षेत्र व देश का कल्याण ही हो जाय। मिथिला तो भाव विभोर होकर कहते रहे- " धन्य है, वह-

गांव जहां समयलाल जैसे बुद्धिमान, उदार, समाज सेवी, शिक्षा-प्रेमी, विवेक शील व्यक्ति हैं! उन्होंने वेद वचनों यथौकसम् व 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् सगे भाई की तरह रहो व सारी दुनिया को आर्य बनाओ' का अनुकरणीय उदाहरण सबके समक्ष प्रस्तुत किया है, ऐसे व्यक्ति कहीं ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलेंगे जो अपने घर की सारी सम्पत्ति विद्यालय में लगा दिया हो, ऐसा व्यक्ति सुनने में भी नहीं आया जिसने विधवा-विवाह इतने धूमधाम से किया हो जिसमें गांव के सभी हरिजन समझे जाने वालों को एक पंगत में जिसमें विधायक द्वय दीपनारायण सिंह, वासुदेव व सांसद गौरीशंकर कक्कड़ व विधान परिषद् सदस्य बद्री प्रसाद कक्कड़ भी उपस्थित रहे हों, उसने सामाजिक एकता व भाई चारे का क्षेत्र में जो उदाहरण प्रस्तुत किया, उसकी भले ही कुछ लोग आलोचना करें, लेकिन वही भारतीय संस्कृति का अनुकरणीय आदर्श है ऐसे ही लोग सच्चे समाज सेवी कहे जाते हैं,

शेखर वे समयलाल के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुये कहा- "समयलाल ने अपना पूरा जीवन शिक्षा प्रसार में लगा दिया, वह जितना योग्य है, उतना क्षेत्र में कोई व्यक्ति नहीं है, चाहता तो बड़ी से बड़ी सरकारी नौकरी कर लेता, उसका एक साथी सम्पतलाल जो परीक्षा में उससे कम अंक पाता रहा है, कलेक्टर हो गया है, जो कभी न कभी कमिश्नर भी हो जायेगा। समयलाल तो उससे आगे ही था, उस जैसा संस्कृत व हिन्दी का विद्वान क्षेत्र में कहां हैं? अच्छे-अच्छे धर्मज्ञ व पुरोहित उसके सामने बोलने का साहस नहीं करते। उसके आचरण से भले ही कुछ लोग अप्रसन्न हो, लेकिन एकान्त में वे भी उसकी प्रशंसा करते हैं; उसके प्रति सम्मान व आदर की भावना रखते है; परम्परावादी लोग भले ही कुछ कहें कि उसने शास्त्र के विरुद्ध आचरण किया है; लेकिन वह तो अपने ढंग का अकेला है, क्षेत्र का गौरव है समांज का आदर्श है, अन्तर से क्षेत्र का हर व्यक्ति उसके प्रति अपने को कृतज्ञसमझता हे; उसने क्षेत्र के लिये असाधारण कार्य किया हे, समाज के लिये अद्भुत कार्य किया है, आज नहीं तो कल, समाज उसी रास्ते पर चलेगा भी, क्योकि वही एक सुख शान्ति की ओर ले जाने वाला मार्ग है, जनहिताय कार्य की भला कौन कितने दिन उपेक्षा करेगा? देर-सबेर तो लोगों को उस पर चलना ही होगा,"

नरेन्द्रपाल ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा-"समयलाल ने समाज के लिये बहुत सराहनीय कार्य किया है लेकिन अशिक्षित और रुढ़िवादी समाज की दृष्टि में तो वह-

अधार्मिक और नास्तिक ही समझा जाता है छुआ-छूत उसके मिटाने से तो नहीं मिटेगी एक पंगत में बैठा देने से एक दिन में तो कुछ हो न जायेगा, महात्मा गांधी आजीवन हरिजन-बस्ती में जाते रहे ; उनके बीच में रहते रहे, वह इस संसार से चले भी गये, लेकिन उनकी हालत में कितना सुधार हुआ; छुआ- छूत कितनी दूर हुई ? कहीं कोई अन्तर आपको दिखाई पड़ता है ? वही काग्रेसी ; जो महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी बनें हुयें हैं, जो हर पन्द्रह अगस्त को उनकी कब्र में जाकर नत मस्तक होते हैं ; पुष्प चढ़ाते हैं, गांधी जी के हरिजन सुधार कार्यक्रम की पूरी तरह से उपेक्षा कर रहें हैं, किये हैं। वे पूरी तरह से भाई भतीजावाद व स्वार्थ साधन में संलग्न हों गये हैं, वे स्वधीनता सेनानियों की त्याग- तपस्या को भुना रहे हैं,उनमें समाज परिवर्तन की नहीं भोगवाद की लालसा हो गई है, गांधी जी का स्वप्न विस्मृति में चला गया। अकेले समयलाल के प्रयास का कितना प्रभाव समाज में पड़ेगा ? अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ेगा। जब तक समाज का एक बड़ा भाग इस कार्य में नहीं जुटेगा, तब तक कुछ भी नहीं होने का ; समझे , ”

तुलसीप्रसाद ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा- “जो बात विवेक सम्मत है ; उसका विरोध कोई कब तक करेगा ? मान लिया, कुछ काल तक उनका विरोध सफल भी रहा, तो आने वाली पीढ़ी क्या उसे स्वीकार करती जायेगी ? आने वाला युग तो ज्ञान-विज्ञान का है; कसौटी व परीक्षण में खरा उतरने का है । सोना जहाँ कहीं भी परखा जायेगा, खरा ही निकलेगा। यदि उसमें मिलावट है तो वह खरा तो नही निकलेगा ; पीतल तो सोना न हो जायेगा। बहुत से लोग अज्ञान वश या स्वार्थवश पीतल को सोना कहते हैं, या सोना बनाये बैठे हैं, उसे किसी को परखने ही नहीं देते ; विश्वास करने की बात कहते है , तो क्या आने वाली पीढ़ी उनकी बात को मानेगी ? हमारे न चाहने पर भी यदि समयलाल जैसे व्यक्ति उनको परखने लगे है ; परख रहे हैं ; तो इसमें अनुचित क्या है ? सांच को आंच कहॉ ? सत्य कब तक गलत ठहराया जाता रहेगा? ”

“ देखो भाई ! राजनैतिक व्यवस्था बदल गयी , ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया ; जमीन्दारी प्रथा खतम हो गयी, लोगो को मौलिक अधिकार मिल गये, सभी लोगों को समानता का अधिकार मिल गया , सार्वजनिक पार्कों , घाटों, मन्दिरों आदि में जाने का अधिकार मिल गया; अपने विचारों को व्यक्त करने ; अपने विश्वास के अनुसार जीवन जीने का अधिकार-

मिल गया, इच्छानुसार किसी भी वैध पेशे व धंधे को करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी तो अब कब तक अन्धविश्वास व कुरीतियाँ अपनी जड़ें जमाये रखेगीं ? उनकी जड़ें भले ही कितनी ही गहराई में क्यों न जमीं हो ; एक न एक दिन तो वे हिलेंगी ही। यदि समयलाल जैसे कर्मठ योग्य व्यक्ति लाख दो लाख व्यक्तियों में एक हो जाय तो अन्धविश्वास व कुरीतियों का समय से पहले ही समूल नष्ट होने में कोई सन्देह नहीं रहेगा।"

फिर उसने अपनी राय व्यक्त करते हुये कहा- "राजनीतिक व्यवस्था व आर्थिक साधनों के परिवर्तन जितनी द्रुतगति से होते हैं, सामाजिक ब्यवस्था उस गति से नहीं बदलती है, लेकिन सामाजिक व्यवस्था सदैव से ही राजनीतिक ब्यवस्था की मुखापेक्षी रही है, जो परिवर्तन राजनैतिक व्यवस्था में दिख रहे हैं वे सामाजिक क्षेत्र में नहीं दृष्टिगोचर हो रहे हैं, लेकिन उसके धरातल में परिवर्तन की पृष्ठभूमि तो निर्मित हो ही रही है, उसका आभास कालान्तर में होगा ही।

सामाजिक परिवर्तन की गति अति मन्थर होती है। समयलाल जिस परिवर्तन के लिये प्रयासरत है, वह परिवर्तन तो निश्चित रुप से होगा ही ; भले ही दो चार पीढ़ी लग जायँ दस बीस पीढ़ी भी लग जायँ तो कोई आश्चर्य नहीं।

शेखर ने कहा- "सही है, जातीय अहमन्यता को ग्रहण तो लग गया है, अब उसकी चमक-दमक फीकी हो गई है। अब जात-पांत , छुआ-छूत को भी विज्ञान की शिक्षा व प्रजातन्त्र ने निगलना शुरु कर दिया है। आने वाला युग अपार सम्भावनाओं से भरा हुआ है, उसकी कोख से क्रान्तियां जन्म लेंगी , उसके लिये परिस्थितियों का निर्माण हो रहा है, समयलाल का अभियान उसी दिशा में जाने का मार्ग निर्मित कर रहा है,

समयलाल विद्यार्थी जीवन से ही अनुभव कर रहा था कि वर्तमान तथा भावी युग छोटे परिवार का है, क्योकि निरन्तर हो रहे वैज्ञानिक अनुसन्धानो के कारण हर क्षेत्र में क्रान्ति हो रही है, हर क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसन्धान हो रहे हैं, हर क्षेत्र में प्रगति हो रही है, चिकित्सा क्षेत्र में भी आशातीत खोजे हुई हैं, इन खोजो के कारण ऐसी बीमारियों पर भी नियंत्रण पा लिया गया है, जो अब तक अचिकित्सीय समझी जाती रही है ; लोगों की मृत्यु दर में गिरावट आई है, यह गिरावट भविष्य में भी जारी रहेगी, ऐसी स्थिति में छोटा परिवार ही युगानुकूल है, संस्कार वान , आचरणवान एक पुत्र ही पर्याप्त है ।

" बर मे को गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि

एकश्चन्द्रस्तमोहन्ति न च तारागणा अपि *

पुत्र को संस्कारित करने का दायित्व रानी पर था ; जिसे उसने प्रशंसनीय ढंग से निभाहा था , उसकी आकांक्षा थी कि उसका पुत्र श्रेष्ठ इंजीनियर के रुप में देश की सेवा करे, देश को वैज्ञानिक , तकनीशियनों , व कुशल इंजीनियरों की आवश्यकता है, रानी ने उसकी इस आकांक्षा की पूर्ति भी की है, उसी के मार्गदर्शन का यह फल है कि आज आशीष रुड़ की इंजीनियरिङ्ग कालेज का छात्र है, वह अपनी सभी परीक्षायें विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण करता रहा है, दो वर्ष में वह इंजीनियर भी हो जायेगा , रानी ने उसका जिस ढंग से निर्माण किया है ; उसको जो संस्कार दिये है; उससे मुझे आत्म सन्तोष है ; मुझे पूर्ण आशा है कि वह एक कुशल परिश्रमी ईमानदार इंजीनियर के रुप में देश निर्माण में अपना स्तुत्य योगदान देगा,

आशीष जन्म से ही बड़ा मेधावी था, प्रारम्भ से ही वह अपनी परीक्षाओं में नब्बे वानबे प्रतिशत अंको के साथ उत्तीर्ण होता रहा है ।हाई स्कूल व इण्टरमीडिएट की बोर्ड परीक्षाओं में उसकी बारहवीं व चौदहवीं पोजीशन थी,इंजीनियरिङ्ग कालेज की हर सेमिस्टर परीक्षा में वह सर्वोच्च अंक अर्जितकरता रहा है,वह इतना विनग्र व हंसमुख था कि उसके सभी साथी प्रोफेसर उसे बहुत चाहते थे। विवाद तो उसका आज तक किसी से हुआ ही नहीं था, वह अपनी-

* अथार्त- सौ मूर्ख पुत्रों से एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ है, एक चन्द्रमा अन्धकार को दूर कर देता है ; लेकिन तारों का समूह अन्धकार को नहीं दूर कर पाता है,

सफलता का श्रेय अपनी मॉं को देता था मॉं ने उसे जब वह कक्षा आठ में था, सफलता का मंत्र बताया था ; उसे वह सदैव स्मरण रखता था मंत्र था-

*आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्यो महानरिपु :*
*नास्त्युद्यम् समो बन्धु कुर्वाणों नावसीदति* *|

आशीष् स्वस्थ व रुपवान था, भरा-पूरा शरीर था,स्वस्थ रहने का रहस्य उसके पिता ने बताया था, पिता का दिया हुआ मंत्र उसके ध्यान में था, उसी का फल था कि वह प्रातः नियमित रुप से एक किलोमीटर की दौड़ कालेज की फील्ड में लगाता था व पन्द्रह बीस मिनट योगासन करता था , मंत्र था -

" अतप्ततनु न तदामोऽश्नुते "

आशीष का एक सुनिश्चित लक्ष्य था, वह माता पिता की सीख को ध्यान में रखते हुये अपने लक्ष्य की ओर गतिमान था, प्रातः काल जल्दी उठना ; डटकर परिश्रम करना , नियमित जीवन चर्या रखना उसके स्वभाव का अंग बन गया था ;

X X X X

रानी कालेज को काफी आगे बढ़ा दी थी ; उसने उसे वित्तपोषित करा दिया था, कालेज के सभी कार्यरत कर्मचारियों को पूरा वेतन मिलने लगा था ; शासकीय अनुदान से प्रयोगशालायें बन गयी थीं ; अच्छे सुयोग्य शिक्षकों की नियुक्तियाँ कर ली गई थी , छात्र छात्राओं की संख्या भी काफी बढ़ गयी थी, कालेज तक आने-जाने के लिये सड़क बन गयी थी, कालेज का प्राङ्गण पुष्प पादपों से सज गया था, कालेज के प्राङ्गण में ही एक वानस्पतिक उद्यान बना दिया गया था, कालेज़ का परिसर बड़ा सुन्दर व आकर्षक हो गया था ,

रानी कालेज व घर की धुरी बनी हुई थी, उसके ऊपर बड़ी जिम्मेंदारियां आ गयी थी,-

---

*अर्थात- आलस्य मुनष्य के शरीर में रहने वाला महान रिपु है, उद्योग के समान कोई मित्र नहीं जिसके करने पर मनुष्य कभी दुखी नहीं होता, अतः मनुष्य को आलस्य त्यागकर पुरुषार्थ करना चाहिये, श्रम करना चाहिये,

*अर्थात्- जिसने तप नहीं किया, इस शरीर को व्यायाम से , योग के आसन से, सैर से, पर्वतों की ऊंचाई और मरुस्थलों की लम्बाई नापकर दृढ़ नहीं बनाया ; जिसने पसीना नहीं बहाया ; उसका शरीर बीमारियों का घर बन जाता है, '

वह रात दिन व्यस्त रहती थी, एक साथ उसे कालेज, घर, पुत्र, खेती-बाड़ी आदि की जिम्मेदारियाँ

निभानी पड़ रही थीं , समयलाल का आना-जाना एक अतिथि जैसे हो गया था, लेकिन पति के आचरण या कार्यप्रणाली से उसे कोई शिकायत नहीं थी। वह अपने दायित्वों का निर्वहन कुशलता पूर्वक करती रही,

रानी ने समयलाल की प्ररणा व राय से अपनी संस्था में संगत व पंगत की व्यवस्था भी कर दी थीं ,संगत का अर्थ सह चिन्तन व पंगत का सहभोज था, माह में एक बार महीने की अन्तिम तिथि को सहभोज का कार्यक्रम रहता था , यद्यपि इस कार्य में बड़ी कठिनाइयां थी; प्रारम्भ में इसकी बड़ी आलोचनायें हुई थी ;कुछ लोग इसे पसन्द नहीं कर रहे थे ; तरह-तरह के बहानों से इसे बन्द करवाना चाह रहे थे, लेकिन समयलाल के कारण यह कार्यक्रम बन्द नहीं होने पाया, इसका दायित्व मोहन लाल को सौंप दिया गया था जो संस्था के एक उत्साही पी०टी०आई० शिक्षक थे।

हर शनिवार को विद्यालय में विचार गोष्ठी होती थी, उसमें कविता ,कहानी, वाद-विवाद प्रतियोगिता ,महापुरुषों के जीवन चरित, उनके आदर्श ; समाज में व्याप्त कुरीतियां व उनके उन्मूलन के उपाय ; आदि विषयों पर विचार व्यक्त किये जाते थे खेल-कूद का एक पीरियड ही निर्धारित था , पर्याप्त मात्रा में खेलकूद की सामाग्री भी संस्था में उपलब्ध थी,

संस्था का कालचक्र प्रातः दस बजे से सायं पांच बजे तक था संस्था में अध्ययन - अध्यापन बहुत अच्छे ढंग से चल रहा था ,

चार पांच वर्ष के अन्दर उस संस्था से दसवीं व बारहवीं उत्तीर्ण छात्र जब रेलवे विभाग मे ; हवाई सेना में राजस्व व शिक्षा , विभाग में नौकरी पा गये, फिर कुछ वर्षो के अन्तर से जब उसी संस्था के छात्र इलाहाबाद से एम०ए०एम०एस० सी० करके प्रशासनिक पदों में हो गये, तब संस्था के सभी कार्यक्रमों की क्षेत्र में प्रशंसा होने लगी। प्रशासनिक पदों में चयनित व सेना में भरती हुये छात्र सहभोज की प्रशंसा करने लगे। लेकिन सहभोज संस्था तक ही सीमित रहा, जब कभी किसी के यहां शादी विवाह जैसा कोई उत्सव होता तब गांवों में दीर्घकाल से चली आ रही परम्परा के अनुसार पंगते अलग-अलग ही लगती थीं छुआछूत की भावना काफी हद तक कम तो हो गई थी, लेकिन समाप्त नहीं हुई थी, समयलाल को विश्वास था ,कि उसके प्रयासों का फल तो एक न एक दिन रंग लायेगा ही, जब लोग इस तथ्य को -

समझ लेंगे, हृदयंगम करेंगे कि संसार में एक ही मानव समाज था, वर्णों या जातियों में विभाजन कर्म के अनुसार बाद में हुआ, शील तथा सद्गुण सम्पन्न व्यक्ति ही श्रेष्ठ है इसलिये व्यक्ति की श्रेष्ठता व निम्नता का आधार उसका आचरण है, छुआछूत तो एक कलंक है, मानवता के ऊपरे एक बदसूरत धब्बा है तो सहभोज के कारण मानवीय एकता का पक्ष सबल होगा ही , अन्तर जातीय विवाहों से तो वह और पुष्ट होगा, लेकिन अभी तो उसकी चर्चा करना ही पाप है, एक दिन तो वह अवश्य आयेगा, जब लोग अन्तर जातीय विवाह की बात सुनकर नाक भौं नहीं सकेलेंगे, आखिर यह चिरन्तन सत्य कि सभी मानव एक जाति है, कब तक वेदखल रहेगा ? कब तक निर्वासन में रहेगा ? ज्ञान का प्रसार तो उसके निर्वासन काल को समाप्त करने की पृष्ठभूमि बना ही रहा है ,वह इस तथ्य को लोगों के मस्तिष्क में उतार रहा है कि कोई ब्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से ऊंच-नीच होता है ; जन्म से सब मानब समान है, लेकिन मिथ्या वर्ण और जाति के प्रमाद में डूबे लोग इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पा रहे, लेकिन कब तक ? स्थिति तो बदलने के लिये अंगड़ाई ले ही रही है, जब प्रभात हो गया है, तो सूर्योदय तो होगा ही, अन्धकार को तो जाना ही जाना है,विज्ञान और अन्धविश्वास एक साथ नहीं रह सकते ,

X X X X

जगदीश बहुत वृद्ध हो गये थे, उनकी आंखो के सामने ही उनका युवा पुत्र रामेश्वर इस संसार से चला गया था, उन्हें पश्चाताप था कि घर के विवाद ने ही उसकी जीवन लीला समाप्त कर दी। यदि वह उसे सूचना देकर न बुलवाता, तो सम्भव था कि वह दुर्घटना ग्रस्त न होता.. घर का विवाद कितना विनाशकारी होता है। उसकी मृत्यु का समाचार सुनते ही माँ का भी अवसान हो गया ; पत्नी भी घुल-घुलकर मृत्यु के निकट पहुँच गयी, जीवन तो किसी प्रकार ढोया जा रहा हे- संसार नीरस लगने लगा है, मृत्यु की पगध्वनि सुनाई पड़ने लगी है,........

यहां से चलने का समय आ गया है, सब कुछ छूट जाने का समय दूर नहीं है, संसार का सारा मेला, सारी गृहस्थी ; धन दौलत नात-रिश्ता सब कुछ आंखों के सामने ही तिरोहित होता जा रहा है, इनसे कभी मन नहीं भरा ; तृप्ति नहीं मिली आत्म सुख की अनुभूति तो ईश्वर भजन व आत्मचिन्तन से ही मिलती है ; जब मन भरपूर उसमें रमें तब ना ; मन तो बार-बार उससे विचक जाता है; ठहरता नहीं है,...... मन अतीत की स्मृतियों में खो जाता है ; उधेड़ - बुन में लग जाता है....ऐसा ही करते जीवन वीत गया ; अन्तिम घड़ी आ गयी।

विद्यालय की निरन्तर हो रही प्रगति से जगदीश को आत्मसन्तोष था ; मानसिक  शान्ति थी, उसे लगा कि उसके जीवनकाल का यही सर्वोत्तम कार्य हुआ है। समयलाल ने विद्यालय की स्थापना कराकर वह कार्य किया हे, जिसको देखकर आत्मसुख मिलता है ;

X X X X

समयलाल ने क्षेत्र के प्रमुख व विवेकशील लोगों से विचार-विमर्श करके एक संगठन बनाया, उस संगठन के सदस्यों ने निम्नपंच सूत्री कार्यक्रम को पूरा करने का संकल्प लिया

१. शिक्षा प्रसार करना, गांव-गांव में स्कूल खुलवाने का प्रयास करना।

२. जनसंख्या नियंत्रण पर बल देना, छोटे परिवार के विचार को साकार करना।

३. अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना, बाग-वगीचे लगवाना।

४. रुग्ण मानसिकता,अन्धविश्वास व सामाजिक कुरीतियों को दूर करना।

५. लोगों मे सर्व-धर्म समभाव्र विकसित करना, भाई चारे की भावना का प्रसार करना।

संगठन ने अपने क्षेत्रीय उपसंगठन बनाकर क्षेत्र के विकास में लग गये, लोगों को समझा, बुझाकर जनहित के कार्यों में लगाया गया, उनके सहयोग से गांवों में गुरुआना व प्राथमिक पाठशालायें संचालित की गयी, लड़कियों को पाठशाला भेजने का आग्रह किया गया।

अभिभावकों को बड़ी उम्र में बालक -बालिकाओं की शादियां करने के लिये समझाया गया, बालक -बालिकाओं को सुयोग्य बना देने पर विवाह करने को कहा गया, छोटे परिवार का लाभ समझाया गया, बड़े परिवार की हानियां बताई गयीं।

वृक्षों की उपयोगिता बतायी गयी, उन्हें शंकर भगवान बताया, गया जो जन कल्याण हेतु विषपान करते हैं। वे धरती मां के श्रंगार है, उनकी उपस्थिति से ही मानव जाति व अन्य प्राणियों का जीवन सम्भव है, वृक्षों के लगाने व बचाने पर जोर दिया जाने लगा क्योंकि धरती में वही हमारे पूर्वज है जो प्रदूषण का पान करते हैं और प्राणवायु का विसर्जन करते हैं,

लोगों को समझाया गया कि अज्ञानता सभी बुराइयों व पापों की जड़ है हमारे सभी अन्धविश्वासों की जड़ अज्ञानता व रुग्ण मानसिकता में है। हमें नर-नारी के बीच विद्यमान सामाजिक अन्तर को समाप्त करना चाहिये। बालक-बालिका के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाना चाहियें। विधवा-विवाह का प्रचलन होना चाहिये।

सभी धर्म समान है , सबके प्रति आदर की भावना रखनी चाहिये। सभी धर्मावलम्बियों के प्रति भाईचारे की भावना रखनी चाहिये। सभी धर्म नैतिक जीवन पर बल देते है ; सभी का लक्ष्य जन कल्याण है, देवत्व की प्राप्ति है, अतः सभी के प्रति समत्व की भावना विकसित की जानी चाहिये ,



प्रारम्भ में इस संगठन के सदस्यों में बहुत उत्साह था ; पूरे क्षेत्र में उप संगठन बन गये थे ; पूर जोर-शोर से कार्य भी चला। कई संस्थायें खुल गई, कुछ विधवा -विवाह भी हुये, भाइचारे की भावना का विकास हुआ, क्षेत्र में कई बाग-बगीचे भी लग गये, तीर्थ -व्रत के प्रति उत्साह कम हुआ। गयाधाम की यात्रायें जो मात्र पितरों को तारने के उद्देश्य से की जाती थी; कम हुई। तेरही-वर्षी के प्रति लोगों में रूचि कम हुई। बालक बालिकाओं की बड़ी उम्र में शादियां प्रारम्भ हुई , आदि बहुत से कार्य हुये। लेकिन जब से रणविजय के आग्रह के कारण समयलाल "रण विजय इण्टरमीडिएट कालेज" का प्रधानाचार्य होकर संस्था में व्यस्त हो गया तो विकास संगठन के सक्रिय सदस्य भी धीरे-धीरे निष्क्रिय होते गये। लेकिन तीन चार वर्षों में संगठन ने क्षेत्र में जो कार्य किया, उसका लाभ क्षेत्र को बहुत मिला। कालान्तर में संगठन के मर जाने पर भी उसने जिन कार्यों को हाथ में लिया , जिन विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया, वे शासन व समाज के विभिन्न कार्यक्रमों के अंग बन गये। समाज ने बहुत से कार्यों को बदली हुई परिस्थितियों के कारण समय की मांग समझकर स्वतः स्वीकार कर लिया।

समयलाल ने रणविजय इण्टरमीडिएट कालेज को आदर्श संस्था बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा दी, सर्वप्रथम उसने संस्था को वित्त पोषित करवाने का भरसक प्रयास किया, उसे इस कार्य में सफलता भी मिली। संस्था की पढ़ाई -लिखाई के स्तर में सुधार किया। संस्था का कार्यकाल प्रातः दस से पांच बजे तक किया। प्रातः सर्व-धर्म समभाव वाली निम्न प्रार्थना प्रारम्भ की :-

" अल्ला तुम हो , ईश्वर तुम हो , तुम हो गाड करीम,
ब्रम्हा, विष्णु , शिव, गौतमबुद्ध, अहुरमज्द महावीर।
राम कृष्ण नानक कबीर , ख्रीष्ठ ईसू जगदीश,,
नाम पन्थ कुछ भी हो क्यों न ? सबके राम रहीम ॥ -

सबहों सुजन, निरोग, सुखी हों, सबमें सबके हो सद्भाव।



ओउम् ओउम् सोऽम् तत्वमसि कहीं न हो कोई दुर्भाव ॥

अल्ला तुम हो, ईश्वर तुम हो, तुम हो , गाड करीम।

नाम पन्थ कुछ भी हो क्यों न, सबके राम रहीम ॥

इस प्रार्थना के बाद प्रतिदिन पांच मिनट देश विदेश के प्रमुख समाचारों व नैतिक शिक्षा के लिये रखा। नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत किसी न किसी रुप में बालक -बालिकाओं को यह बताया जाता रहा कि ईश्वर सर्वव्यापक है ; सार्वकालिक है ; सभी प्राणियों में उसका अंश है, भारतीय दर्शन का आधार सभी प्रकार की विषमता का विनाश रहा हैं , देश की संस्कृति का उद्देश्य समत्व और देवत्से की प्राप्ति रहा है- यही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिये,

ऊँच-नीच व छुआछूत की भावना समाप्त करने के लिये समयलाल ने संस्था में २ अक्टूबर १४ नवम्बर व २६ जनवरी को सहभोज की परम्परा डाली इसमें संस्था के सभी कर्मचारी व सभी छात्र छात्रायें सम्मिलित होते थे, संस्था में निरन्तर बढ़ रही छात्र संख्या के कारण सहभोज आयोजन काफी कठिनाइयों से भरा होता था तो भी इसे संचालित रखा गया, हर सहभोज के पूर्व समयलाल संस्थाध्यक्ष के रुप में निम्न मंत्र का वाचन करते थे :-

' ओं सह नांववतु । सह नौं भुनक्तु ।

सह वीर्य्यै करवावहैं । तेजस्वि नावधीतमस्तु ।

मा विद्विषवहैं । ओं शान्ति - शान्ति : शान्तिः ।*

अन्तर्वेद का यह बहुत पिछड़ा क्षेत्र था शुद्ध कृषकों और कृषक मजदूरों की बस्तियां थी, आवागमन के साधन भी कम थे , इन संस्थाओं के कारण कच्ची सड़कों की मरम्मत होती रही ; फिर उनमें गिट्टी डाली गई, बहुत वर्षो बाद क्षेत्र की कुछ सड़कें पक्की हो गईं जिससें आवागमन में बड़ी सुविधा हुई। रोजगार के अवसर बढ़े ,

इन संस्थाओं ने क्षेत्र में ज्ञान की ऐसी मशालें जला दी ; चारों ओर ऐसी रोशनी विखेर-

*अर्थात- हे भगवन् ! हम परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें।
उपलब्ध वस्तुओं का मिल बाँट कर उपभोग करें , साथ-साथ पराक्रम करें , हमारा अध्ययन - मनन तेजस्वी हो और हमारे बीच कोई द्वेष न हो , विविध तापों (दैहिक, दैविक, भौतिक) की शान्ति हो ,

दी जिससें क्षेत्र में क्रान्ति आ गई , परम्पराओं और अन्ध विश्वासों में भूचाल सा आ गया, यह क्षेत्र जो जात-पाँत व छुआछूत का गढ़ समझा जाता था, धीरे-धीरे उस गढ़ की प्राचीरें क्षीण होने लगीं, समयलाल को विश्वास था कि उसकी संस्था से निकले हुये छात्र- छात्रायें जब सयानें होगे, घर के स्वामी बनेंगे, तब छुआछूत का भूत अतीत की स्मृति बन जायेगा, लेकिन उसमें बहुत समय लगेगा क्योंकि इसके पोषण में अनेक धार्मिक ग्रन्थों में ऐसे प्रक्षिप्त अंश हैं उनमें ऐसे कथन हैं व कथायें है ; जिन पर प्राचीनता का रंग चढ़ा दिया गया हैं, धार्मिक्ता का वाना पहना दिया गया है ; उनके पीछे गुप्त रीति से प्रभावशाली लोगों का हाथ भी है, क्योकि वे हृदय से नहीं चाहते हैं कि छुआछूत व जात-पांत मिटें ,

सामाजिक विषमता को मिटाने के लिये जिस वातावरण की आवश्यकता थी ; वह वातावरण अब निर्मित हुआ है, जनता का शासन ; जनता के लिये ; जनता द्वारा व ज्ञान-विज्ञान का प्रसार; उसका जन जन तक पहुँचना ; नये-नये उद्योग धन्धों का उद्भव ; आर्थिक स्थिति में सुधार आदि ऐसी बातें है जो मानव समानता के लिये उपयुक्त वातावरण का सृजन कर रही हैं, इनके कारण अन्धविश्वास भी खिसक रहा है ,

X X X X

समयलाल ने अनुभव किया कि पिछड़े , दलित, शोषित निर्धन लोगों का आत्मबल कई कारणों से मर सा गया है ,उनकी आर्थिक स्थिति में जब तक सुधार नहीं होगा , तब तक समानता व राजनैतिक अधिकार अधिक प्रभावशाली नहीं सिद्ध होंगे, और न वांछित सामाजिक सुधार लक्षित होगा, लेकिन शिक्षा के कारण उनमें जो जागृति आ रही है, उससे उनकी आर्थिक स्थिति में कई प्रकार से बदलाव आयेगा, उन्हें नौकरी-पेशे में जाने का अवसर मिलेगा ; नये-नये विकसित हो रहे उद्योग -धन्धो में घुसने की क्षमता पैदा होगी ,शिक्षा के कारण आत्मबल व आत्मविश्वास बढ़ेगा। सामाजिक परिवर्तन का चक्र घुमाने में संस्थायें और उनमें कार्यरत विकसित सोच के उदार चरित शिक्षकों के आचरण और उनके कार्य-व्यवहार ही प्रमुख रुप से सहायक हैं, हम जिस प्रकार के समाज- निर्माण की कल्पना कर रहें है उसकी पृष्ठभूमि तो विद्यालयों में ही बनती है। विद्यालय भी समाज का लघु रुप हैं, आज जो विद्यालय में हो रहा है, वह कल समाज में भी होगा।

-- --

# अठारह



समय निरन्तर गतिमान रहता है, वह अपने साथ केवल सद् विचारों को ही लिये चलता है, बाकी जो समाज के हित मं नहीं है, उनको पीछे छोड़ता जाता है, आज नहीं तो कल वे अतीत में चले ही जाते हैं ; व्यक्ति ,घटनायें , आन्दोलन , उत्सव, सुख-दुःख, बालपन, युवावस्था, वृद्धावस्था, आदि सब कुछ अतीत में सरकता चला जाता है, लेकिन विचार, सत्य-सिद्धान्त समय के कन्धे में बैठाकर चलते रहते हैं, ,समयलाल ने रानी से बातचीत के सिलसिले में दार्शनिक भाव से एक दिन कहा था रानी। हम समय के साथ बहुत काल तक नहीं चल सकेंगे , मैं भी वृद्ध हो गया हूँ, तुम्हारी भी यही स्थिति है हमारे अपने अपने पदों से रिटायर होने का समय भी तेजी से रिक्सकता आ रहा है, वह समय भी समीप ही है ; जब हम अपने पदों से रिटायर हो जायेंगे, लेकिन हमने संस्थाओं के रुप में ज्ञान-दीप प्रज्वलित कर दिये हैं, इन संस्थाओं से निकले हुये जीवन्त छात्र ज्ञान की मशाल को थामेंगे और उसे आगे बढ़ायेंगे क्योंकि भविष्य तो नवयुवकों का है ; वही समाज की शक्ति है ; समाज का आधार हैं,

हमने अपने जो विचार और शिक्षा अपने आचरण और कार्य व्यवहार से इन जीवन्त मूर्तियों को दिया वे ही हमारे विचारों व हमारी शिक्षा के वाहक हैं ; फिर वे आगामी पीढ़ी को उन्हें हस्तान्तरित करेंगे इस प्रकार वे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होते रहेंगे।

व्यक्ति शरीर से न अमर हुआ है ; न हो सकता है, हाँ भविष्य में ऐसे अनुसन्धान सम्भावित हैं जिनसे मनुष्य की आयु दुगुनी तिगुनी हो सकती है ; लेकिन यह तो भविष्य की बात है जब हम इस संसार में नही होगे..आयु कितनी ही लम्बी क्यों न हो जाय उसे तो एक दिन समाप्त होना ही है, लेकिन वह व्यक्ति मरकर भी अमर हे ; जिसने काल के वृक्षस्थल पर सुकृत्यों की छाप लगा दी है, व्यक्ति-समाज के हितार्थ किये गये कार्यों व त्याग- बलिदान की जो छाप काल पथ पर अंकित रह जाते हैं, वही व्यक्ति को जीवन्त रखते हैं ,

फिर भावविहल होकर समयलाल ने कहा- "रानी तुम्हारा जीवन सार्थक रहा। तुमने अपने विद्यावती नाम को भी सार्थक कर दिया। तुमने एक सुसंस्कारित योग्य इंजीनियर समाज को दिया, क्योकि आशीष के निर्माण में तुम्हारा ही योगदान है ; उसकी शिक्षा के समय तो मैं-

परिव्राजक बना हुआ था, संस्थायें खुलवा रहा था, उसी का फल है कि आज कई संस्थायें चल 
रही हैं, लेकिन एक ईमानदार सुयोग्य इंजीनियर और कुछ संस्थाओं से ही क्षेत्र और समाज का हित नहीं होगा, तुम देखती ही हो कि क्षेत्र में कितनी निर्धनता है ; कितनी अज्ञानता है ! कितना पिछड़ापन है ! वस्तुत : इस पूरे द्वाबा क्षेत्र में ; जो कभी सम्पन्नता अतिथि देवो भव, खुशहाली के लिये प्रसिद्ध था ; बड़ी गरीबी है, धर्म और जाति के नाम पर बड़ा शोषण है, अन्याय है, भारी सामाजिक विषमता है, जो जातियां कभी शासक का गौरव प्राप्त किये थीं, आज बदहाली की स्थिति में हैं ; वे आज पाखण्ड और अन्धविश्वास का शिकार है ; आज उनका तरह-तरहसे शोषण हो रहा हे ; उन्हें भाग्यवादी बना दिया गया है ; उनके मस्तिष्क में यह बात भर दी गयी है जो निकाले नहीं निकल रही है, कि उनकी इस दुर्दशा का कारण उनका भाग्य है, मैं ने इस स्थिति को बदलने का प्रयास किया, उसी कार्य में लगा रहा ; संस्थायें खुलवायी ; एक संस्था का भार भी लिया, सुधार-कार्य किये; निन्दा स्तुति हुई, अब भी कुछ न कुछ हो ही रही है ; लेकिन निन्दा-स्तुति की मैं ने परवाह नहीं की , वृह्द समाज ने प्यार दिया ; सम्मान दिया, उनका प्यार ही मेरा सम्बल रहा, आज भी मुझे उन पर पूर्ण भरोसा है , क्योंकि मेरी समाज -सेवा का केन्द्र विन्दु वही है ;

सभी सामाजिक विकृतियों की जड़ अज्ञान और अन्धविश्वास हैं, उन्हीं को दूर करने के लिये क्षेत्र में हमारी दोनों संस्थायें ज्ञान-किरण विखेर रही हैं मुझे विश्वास है कि समत्व और देवत्व का लक्ष्य प्राप्त करने में ये संस्थायें सहायक होगी, लेकिन क्षेत्र के समुचित विकास के लिये, समाज को समुन्नत करने के लिये ऐसी अनेकानेक संस्थाओं की आवश्यकता है...

रानी ने अपनी राय व्यक्त करते हुये कहा- " प्रशासन व सत्ता में जब तक इस समुदाय का उचित प्रतिनिधित्व नहीं होगा तब तक समाज में समानता व समरसता की सरिता नहीं बहेगी, सम्पूर्ण समाज के सम्यक् विकास के लिये शिक्षा तो आवश्यक है, ही किन्तु प्रशासन व सत्ता में सबकी उचित भागीदारी भी आवश्यक है, प्रशासन व सत्ता में जाने के लिये जिस योग्यता व क्षमतां की आवश्यकता है वह तो शिक्षा मन्दिरों से ही सम्भव है, वही तो आधार हैं , समाज के व्यापक हित के लिये , उसकी रहनुमाई के लिये बहुत कुछ किया जाना बाकी है... "

अपने भाव व्यक्त करते हुये समयलाल ने फिर कहा- " रानी ! मैं ने कई बार कहा है-

कि समाज ही ईश्वर का प्रकट रुप है; उसका विराट स्वरुप ही यह ब्रह्माण्ड है, यदि समाज का



प्रत्येक व्यक्ति जो जहां जिस स्थिति में है, अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन में जुट जाय, तो समाज के समुन्नत होने में कोई आशंका ही न रह जाय, समत्व व देवत्व का लक्ष्य भी प्राप्त हो जाय, लेकिन रोना तो इसी बात का है कि जो जहाँ है, वहाँ वह अपने स्वार्थ साधन में ही मधुमक्खी की तरह संलग्न है, उसे अपने अलावा किसी और की चिन्ता ही नहीं है,.........."
इसी समय अवधेश व आशीष की अप्रत्याशित उपस्थिति से दोनो की बातचीत का क्रम टूट गया, वे आश्चर्य पूर्ण प्रसन्नता में डूब गये , अवधेश व आशीष बढ़कर मातृश्री व पितृश्री के सादर चरण वन्दन किये।

अवधेश के मुँह से अकस्मात निकला-

" पिताश्री ! आशीष भैया भारत सरकार की ओर से उच्च अध्ययन के लिये अगले माह अमेरिका जा रहे हैं ....................... "

समयलाल ने गम्भीर स्वर में धीरे से कहा-

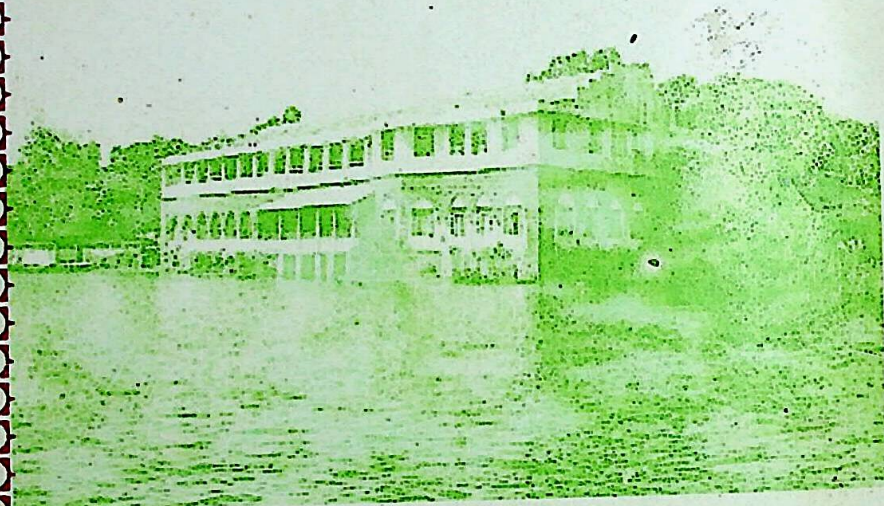
" बहुत अच्छी सूचना दी है बेटा ! आशीष ; तुमने गांव व क्षेत्र का यश बढ़ा दिया हैं, जहां कहीं रहो बेटा ; अपनी जननी व जन्मभूमि को याद रखना, उसके प्रति अपने कर्त्तव्यों को सदैव स्मरण रखना,........... "

रानी की ओर दृष्टि डालते हुये कहा- रानी ! तुम गौरवान्वित हुई, तुम धन्य हो, तुमने देश को एक लाल दिया .... "

रानी का हृदय पुत्रप्रेम , वात्सल्य ममता व पति के प्रति कृतज्ञता से भर गया, वह कुछ बोल न सकी.. फिर सभी को घर की ओर चलने का संकेत दिया, सभी शान्त मुन्द्रा में घर की ओर चल पड़े।

*****

समाप्त






श्री शिव प्रेस

बस स्टैण्ड के पास मानपुर

जिला - उमरिया (म.प्र.) फो. (07627) 266207